केरलीय प्रश्न रत्न

श्रीः ।

केरलीयप्रश्नरत्नम् ।

ज्योतिर्विद्वर-श्रीनन्दरामपण्डित-विरचितम् ।

श्रीमद्राजकुमारजनरलराणा श्रीश्री १०८ श्रीध्रुव-
जनृसिंहजी बहादुराश्रित-जयपुरनिवासिना
ज्योतिर्विदा श्रीसुन्दरलालशर्मणा रचितया
सुन्दरीसमाख्यया भाषाव्याख्यया
संभूषितम् ।

जयपुरनिवासि-माधव-प्रसादशर्मद्वारा समुपलब्धम्
तदेव

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : दिसंबर २०११, सम्वत् २०६८

मूल्य : ६० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

विज्ञप्तिपत्रम् ।

श्रीशोभिशोभितयशोगुणगौरवाढ्य-
माढ्यं करिष्णुगुणसञ्चयतो धरित्रीम् ।
तेजोऽमितं परिदधत्क्षपितारिपक्षं
राणाकुलं विजयते भुवि भूरिभाग्यम् ॥ १ ॥

श्रेणीसौख्यकरो हरोऽतिविपदां रामः प्रजानां पुनः
सिंहः साहसशौर्यवीर्यनिचयैर्नृणां नराधीश्वरः ।
दानी मानयिता विशालमतिमान् ख्यातस्ततोऽभूत्सुधीः
स्वीयां रामनृसिंह इत्यभिधया वंशावलीमुन्नयन् ॥ २ ॥

तत्सूनुराजिजेताकाजीश्रीरामकृष्णाह्वः ।
शक्तिधरः खलु मूर्त्तो जातोऽरीणां विजेता यः ॥ ३ ॥

तस्याभवत् क्षत्रियवीरवर्यः सर्द्दारराणारणजीतसिंहः ।
लेभेऽतिहर्षं जनता यतः कौ पुरन्दरेणेव सुरेशलोकः ॥ ४ ॥

सुतस्तदीयो महनीयमूर्तिः पूर्त्तिप्रदः स्वाश्रितमानसानाम् ।
बभुव राजीवविशालनेत्रः काजीवरो बालनृसिंहवर्मा ॥ ५ ॥

अष्टावभूवन् किल तस्य पुत्रा गोत्राधुरं वोढुमतीवचित्राः ।
सृष्टा विधात्रा जगतामवित्रा गजा इवैते ककुभामरित्राः ॥ ६ ॥

श्रीमान्प्रचण्डभुजदण्डविखण्डितारि-
खण्डः प्रकाण्डरणचण्डतरासिदण्डः ।
नेपालभूमिपरिमण्डनचण्डवीर्यं
आखण्डलेन सदृशोऽभवदेषु षष्ठः ॥ ७ ॥

विपक्षभूपालविखण्डनेन लब्धप्रतिष्ठो भुवि विद्वरिष्ठः ।
वसुष्विवासीत्प्रतिभाविशिष्टो देवव्रतो यो नृपनीतिनिष्ठः ॥ ८ ॥

थोङ्लिङ्पिम्मा कोकाङ्वाङ्स्याङ् ।
चीनविभुर्यमदिक्षदुपाख्याङ् ।
कम्पौण्डरइन्चीफपदैर्युक्
योऽभूत् प्राइमिनिष्टरपदभुक् ॥ ९ ॥

के-सी-एस्-आइ-संज्ञं विरचितकुनयध्वान्तविध्वंसमेनं
सम्राज्ञी षड्गुणज्ञं परिचितविनयं भारतस्य व्यधत्त ।
ख्यातो भूमण्डलेऽस्मिन् निजकृतविभवैः श्रीमहाराजमान्यो
नेपालेशान आसीद्धनपतिमहिमश्रीरणोद्दीपसिंहः ॥ १० ॥
गुणैरनूनः पितुरस्य पुत्रः श्रीमन्महाराजकुमारजनरल् ।
अस्ति ध्वजादिर्नरसिंहदेव बहादुरो याचककल्पवृक्षः ॥ ११ ॥
तत्साहाय्यमवाप्य पण्डितवरः श्रीशैवनारायणि-
र्लेटोपाधियुतः शिवार्चनपरो ज्योतिर्विदामग्रणीः ।
श्रीमत्सुन्दरलाल एतमकरोद्भाषानुवादं मुदे
लोकानामखिलेश्वरश्च भगवांस्तुष्टिं प्रयायादतः ॥ १२ ॥

॥ श्रीः ॥

अथ केरलीयप्रश्नरत्नस्थविषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ।

केरलीप्रश्नरत्नम् ।

संज्ञाप्रकरणम् ।

यदक्षरं ब्रह्म वदन्ति विज्ञाः सिद्धास्तुरीयं यदकर्तृ सांख्याः ।
तं सत्यमानन्दनिधिं स्मरामि श्रीनन्दसूनुं श्रुतिभिर्विमृ-
ग्यम् ॥ १ ॥

श्रीगजास्यं नमस्कृत्य सिद्धिबुद्धिप्रदायकम् ।
केरलीप्रश्नरत्नस्य भाषाटीकां करोम्यहम् ॥

ग्रन्थके आदिमें मङ्गलाचरण करते हैं, ग्रन्थकर्त्ता मिश्र नन्दरामजी गोपालजीको स्मरण करे है, कैसे हैं गोपालजी जिनको महापण्डित अक्षर ब्रह्म कहते हैं, योगिराज तुरीय कहते हैं, सांख्य उनको अकर्त्ता पुरुष कहते हैं । फेर कैसे हैं, सत्यात्मक हैं, आनन्द-मूर्त्ति हैं, फेर कैसे हैं, श्रुति करके विचारण योग्य हैं ॥ १ ॥

ज्योतिःशास्त्रे पञ्चशाखाप्रतानाः सद्यस्तेषां यश्चमत्कार-
कारी । श्रीरुद्रोक्तः केरलिस्तं तु सम्यक् जानाती-
शस्तत्प्रसादाज्जनोऽन्यः ॥ २ ॥

ज्योतिःशास्त्रके विषय पञ्च शाखा कही हैं । तदुक्तं "पञ्चस्कन्ध-मिदं शास्त्रं होरागणितसंहिता, केरली शकुनं चेति ॥" इनके विषय केरली सद्यः चमत्कारकारी है, केरलशास्त्र श्रीमहादेवजीने कहा है । केरलको भली प्रकार श्रीमहादेवजी जानते हैं, उनके प्रसादसे अन्य मनुष्य जानते हैं ॥ २ ॥

ज्ञात्वा किञ्चित्तत्र कुर्वे प्रबन्धं श्रीगोपालप्रेषणात्प्रश्नरत्नम् । स्वर्णावृत्तैर्भातु कण्ठे बुधानां नित्यं भूमिपालविद्वत्सभासु ॥ ३ ॥

केरलशास्त्रको किञ्चित् जान करके श्रीगोपालजीकी प्रेरणासे प्रश्नरत्न नाम प्रबन्ध करूं हूं। कैसा है प्रश्नरत्न सुन्दर वर्ण है, स्वल्प छन्द है, फेर कैसा है, राजा और पण्डितोंकी सभामें बुधजनके कण्ठमें शोभायमान है ॥ ३ ॥

अथास्य प्रयोजनमाह ।

यद्यपि बहुप्रबन्धाः शुक्लपटैः पण्डितंमन्यैः ।
रचितास्ते न हि रम्या अतो मयायं समासतः क्रियते ॥ ४ ॥

मिथ्या पण्डिताभिमानी श्वेताम्बर नाम बौद्धोंने तो यद्यपि बहुतसे प्रबंध किये हैं, परन्तु सो रम्य नहीं हैं, छन्दोव्याकरणादि दोषोंसे भरे हैं । इसलिये संक्षेप करके मैं इस ग्रन्थको करता हूं ॥ ४ ॥

अस्य व्यतिरिक्तमुखेनाधिकारिण आह ।

श्रीमच्छिवेनोक्तमिदं रहस्यं तत्त्वं परं ये श्रुतितत्त्वहीनाः ।
बौद्धादयो वा यवनादयो ये तेभ्यो न दद्याद्यदि धर्मकामः ॥ ५ ॥

यह श्रीमहादेवजीने उक्त केरलरहस्य तत्त्व है सो श्रुतितत्त्व है बौद्धाधिक और यवनादिकको नहीं देना, धर्मकी अभिलाषा होय तो (अर्थात् आस्तिक-धर्म्माभिमानी होय तो) ॥ ५ ॥

नो दुर्विनीताय न नास्तिकाय नो वेददेवद्विजनिन्दकाय । खलाय धूर्त्ताय न सर्वथैव प्रकाशयेत्तत्त्वमिदं सुगोप्यम् ॥ ६ ॥

इस रहस्यतत्त्वको दुर्वीनित और नास्तिकको और वेद देवता और ब्राह्मण इनकी निन्दा करै उसको और खलको और धूर्तोंको सर्वथा प्रकाश नहीं करना, इसको गुप्त रखना ॥ ६ ॥

नम्राय देवद्विजपूजकाय ब्रह्माक्षरब्रह्मसुनिश्चयाय । एवं-
विधाय द्विजपुंगवाय दत्त्वा समाप्नोति बुधोऽर्थधर्मान् ॥ ७॥

गुरुभक्तको और देवता ब्राह्मणके पूजकको, ब्रह्म जो नारायण और अक्षरब्रह्म जो वेद इन दोनोंमें निश्चय होय ऐसे द्विजपुंगवको देनेसे पण्डित वाञ्छित धर्म अर्थको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथ पृच्छकनियममाह ।

अनन्यचेताः कार्यार्थी प्रश्नं कुर्यात् फलान्वितः ।
पुनः पुनः सभामध्ये कुभूमौ नाविवर्त्तवाक् ॥ ८ ॥

प्रश्नकर्ता एकाग्रचित्त होकरके फलयुक्त (सुपारी नारियल रख-के) प्रश्न करे । बार बार प्रश्न नहीं करना, सभाके बीचमें प्रश्न नहीं करना, कुत्सित भूमिमें प्रश्न न करना, और वर्णोंसे उच्चारण ऐसा करे कि जिसमें विवर्त्त माने षण्ढाक्षर ऋ ॠ ऌ ॡ क्षादि वर्णका मुखसे उच्चारण न होय । तदुक्तं । षण्ढा युक्ताक्षराः क्षाद्या विवर्त्ता-स्तेऽपि नो शुभाः ॥ ८ ॥

बद्धास्यशुक्लाम्बरनास्तिकादीन् कुब्जान्धवन्ध्याबधिरा-
ङ्गहीनान् । कुष्ठादियुक्तान् परिवर्ज्य विद्वान् प्रश्नं वदेदु-
च्चरितार्णदृष्टिः ॥ ९ ॥

जिनका मुख बद्ध रहता है और श्वेताम्बर धारण करै है ऐसे नास्तिकको, कुब्जको, अंधको, बन्ध्याको, बधिरको, अंगहीनको, कुष्ठादियुक्तको, इन सर्व जनोंको छोड करके पण्डित प्रश्न कहै, और प्रश्नकर्त्ताके उच्चारित वर्णोंपर दृष्टि रखना चाहिये । तदुक्तं । "विमुक्तकेशकाषायैर्नग्नैः क्षुधितनास्तिकैः । कुब्जान्धवन्ध्या-रजकैर्दृष्टैः सिद्धिर्न जायते ॥" और लल्लाचार्य्य विशेष कहते हैं,

यात्राविरुद्ध जो शकुन उनको छोड करके प्रश्न कहै सो ग्रन्थान्तर-से जान लेना चाहिये ॥ ९ ॥

अथास्योपजीविनीं वर्गाणामुत्तरादिसंज्ञामाह ।

उत्तरा विषमा वर्गाः समा वर्गाष्टके धराः ।
स्वेषूत्तरोत्तरौ ज्ञेयौ पूर्ववच्चाधराधरौ ॥ १० ॥

अवर्गादि अष्टवर्गके मध्यमें जो विषम वर्ग है, उनको उत्तर संज्ञा कही है । और सम वर्गोंको अधरसंज्ञा कही है । उत्तर वर्गोंके मध्यमें जो विषम है, उनकी उत्तरोत्तर संज्ञा कही है । अधर वर्गोंके बीचमें जो सम है उनकी अधराधर संज्ञा कही है सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ १० ॥

दशमश्लोकोक्तं उत्तरादिसंज्ञाचक्रम् ।

अ	च	त	य	उत्तराः
क	ट	प	श	अधराः
अ	०	त	०	उत्तरोत्तरौ
०	ट	०	श	अधराधरौ

वर्गौ द्वौ विद्भिर्द्वादशमात्रासु विज्ञेयौ ।
काद्याः सप्त च तेषां वर्णाः पञ्चाब्धयोऽङ्कवर्गाणाम् ॥ ११ ॥

एकादशश्लोकोक्तं वर्णचक्रम् ।

अ	ए	क	च	ट	त	प	य	श	वर्गाद्याः
आ इ ई उ ऊ	ऐ ओ औ अं अः	ख ग घ ङ	छ ज झ ञ	ठ ड ढ ण	थ द ध न	फ ब भ म	र ल व	ष स ह	अक्षराणि
६	६	५	५	५	५	५	४	४	४९ योगः

अकारादि षोडश स्वरोंके बीचमें षण्ढ स्वर व्यतिरिक्त द्वादश मात्राका दो वर्ग समझना । ये दो वर्ग कादिक सप्तवर्ग इन नववर्गोंके वर्ण पञ्चचत्वारिंशत् ४५ होते हैं, सो चक्रमें प्रस्फुट है समझ लीजिये ॥ ११ ॥

तेष्वादिमास्तृतीया उत्तरवर्णास्तथा धराद्वियुगाः ।
स्वेषूत्तरोत्तराख्या विषमा अधराधराश्च समाः ॥ १२ ॥

द्वादशश्लोकोक्तं वर्णन्यासचक्रम् ।

अ	ए	क	च	ट	त	प	य	श	१	
इ	ओ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	३	उत्तराः
आ	ऐ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	२	
ई	औ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	४	अधराः
अ		क		ट		प		श		
इ		ग		ड		ब		स		उत्तरोत्तराः
	ऐ		छ		थ		र			
	औ		झ		ध		व			अधराधराः
उ ऊ	अं अः	ङ	ञ	ण	न	म	०	०		एतेउभय पक्षदग्धाः

पूर्वोक्त नववर्गोंके बीचमें जो प्रथम तृतीय वर्ण हैं उनको उत्तर संज्ञा कही है और द्वितीय चतुर्थ वर्णोंकी अधर संज्ञा कही है, और उत्तर वर्णोंके बीचमें जो विषम वर्ण हैं उनकी उत्तरोत्तर संज्ञा

कही है, अधर वर्णोंके बीचमें समवर्ण हैं उनकी अधराधर संज्ञा कही है, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ १२ ॥

काद्येषु पञ्चमस्तथा उभये अं अ उ ऊ दग्धाः ।
अथ मात्रासु ज्ञेयं चोत्तरपूर्वं क्रमात्प्राग्वत् ॥ १३ ॥

कादिक जो सप्त वर्ग उनके जो पञ्चम वर्ण उनकी दग्ध संज्ञा कही है, उभय वर्गके उ ऊ अं अः इनकी दग्ध संज्ञा कही है और अकारादि द्वादश स्वरोंकी उत्तरादि संज्ञा पूर्वोक्त क्रम करके जान लेना चाहिये सो दिखाते हैं । अ इ उ ए ओ अं इनकी उत्तर संज्ञा है, आ ई ऊ ऐ औ अः इनकी अधर संज्ञा है, अ उ ओ इनकी उत्तरोत्तर संज्ञा है, इ ए अं इनकी उत्तर संज्ञा है, आ ऊ औ इनकी अधर संज्ञा है, ई ऐ अः इनकी अधराधर संज्ञा है ॥ १३ ॥

भेदा दशोत्तरोत्तरपूर्वाणां वर्णमात्रोत्थाः ।
शुभमध्यनेष्टफलदा दग्धे पञ्चामृतं कष्टात् ॥ १४ ॥

वर्ण मात्रासे उत्पन्न हुए जो उत्तरोत्तर पूर्वा जिनके दश भेद होते हैं सो लिखते हैं । उत्तरोत्तरोत्तरोत्तर १ उत्तरोत्तरोत्तर २ उत्तरोत्तर ३ उत्तरोत्तराधर ४ उत्तरोत्तराधराधर ५ उत्तराधर ६ उत्तराधराधर ७ अधराधर ८ अधराधराधर ९ अधराधराधराधर १० । इन दश भेदोंके मध्यमें पूर्वके तीन भेद शुभ हैं और तीनके उपरान्त सप्तपर्यन्त जो ४ भेद हैं सो मध्यम हैं, और सातके उपरान्त जो तीन हैं सो नेष्ट हैं । अब उदाहरण दिखाते हैं, अ उच्चारण करनेसे उत्तरोत्तरोत्तरोत्तर संज्ञक प्रश्न होता है, और दग्धाद्यवर्ण प्रश्न होय तो पांच भेद होते हैं, सो लिखते हैं । उत्तरोत्तरदग्ध १ उत्तरदग्ध २ अधरदग्ध ३ अधराधरदग्ध ४ दग्धदग्ध ५ इन पञ्च भेदके फल क्रमसे समझ लेना । कष्ट १, अति कष्ट २, व्याधि ३, अतिव्याधि ४, मृत्यु ५ ॥ १४ ॥

चत्वारः कचटादितश्च यशहाः स्युर्जीवसंज्ञा रषौ
चत्वारश्च तपादितोऽक्षरगणं धातोः परं मूलके ।

एकद्वित्रिनवान्त्यसप्तममिता जीवः स्वरा उ ऊ अं
धातौ मूलमितोऽवशेषमथ भूहस्तात्रिचन्द्राभवाः ॥ १५ ॥

पञ्चदशश्लोकोक्तं जीवादिसंज्ञाचक्रम्।

जीवाक्षराणि स्वराश्च	क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ओ अः ए	२१
धात्वक्षराणि स्वराश्च	त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं	१३
मूलाक्षराणि स्वराश्च	ल व स ङ ञ ण न म ई ऐ औ	११

कुचुटु इन तीनों वर्गके आदिके जो ४ वर्ण हैं और य श ह इन वर्णोंकी जीवसंज्ञा कही है, तु पु इन दो वर्गोंके आदिके ४ वर्ण और र ष इन वर्णोंकी धातु संज्ञा कही है। जीवधातु योनिके व्यतिरक्त जो शेष वर्ण उनकी मूल संज्ञा कही हैं। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, नवम, द्वादश, सप्तम इन स्वरोंकी जीवसंज्ञा है। उ ऊ अं इन तीनों स्वरोंकीं धातुसंज्ञा है। जीवधातु भिन्न जो शेष स्वर उनकी मूलसंज्ञा कही है। सो चक्रमें प्रस्फुट लिखी है सो समझ लीजिये। जीवाक्षरसमुदाय २१ का है धात्वक्षरसमुदाय १३ का है, मूलाक्षरसमुदाय ११ का है ॥ १५ ॥

आलिङ्गितादिकाः स्युः पुरुषपुरन्ध्रीनपुंसकाभिख्याः।
संयुक्तासंयुक्तौ सौख्यव्याधिप्रमोदशोकौ च ॥
ञङणनमा मृतिसंज्ञा जीवितसंज्ञाश्च वर्गपूर्वार्णाः ॥ १६ ॥

वक्ष्यमाण जो आलिङ्गित संज्ञक स्वर हैं सो पुरुष संज्ञक हैं, अभिधूमित स्वर स्त्रीसंज्ञक हैं, दग्धस्वर नपुंसक संज्ञक हैं, और वक्ष्यमाण जो संयुक्त संज्ञक हैं सो सौख्य और प्रमोद संज्ञक हैं,

असंयुक्त व्याधिसंज्ञक और शोकसंज्ञक हैं। ङ ञ ण न म इन पञ्च वर्णोंकी मृत्यु संज्ञा कही है और वर्गोंके जो प्रथम वर्ण उनकी जीवित संज्ञा कही है ॥ १६ ॥

श्वेतं रक्तं पीतं हरितं पीतं भवेद्धूम्रम् ।
हरितं कृष्णं वर्णं ह्यादीनामष्टवर्गाणाम् ॥ १७ ॥

अवर्गादिक जो आठ वर्ग उनका क्रमसे वर्ण समझ लेना चाहिये। श्वेत १ रक्त २ पीत ३ हरित् ४ पीत ५ धूम्र ६ हरित ७ कृष्ण ८। सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ १७ ॥

श्वेतं पीतं धूम्रं रक्तं वा कर्बुरं द्वाभ्यां द्वाभ्याम् ।
मात्राभ्यां स्यादन्त्योपान्त्ये सितासिते ज्ञेये ॥ १८ ॥

अ आ इत्यादि दो दो स्वरोंका श्वेतादिवर्ण समझ लीजिये, क्रमसे श्वेत १ पीत २ धूम्र ३ रक्त ४ कर्बुर ५ । अः विसर्ग स्वरका श्वेत, अं अनुस्वार स्वरका काला जानना ॥ १८ ॥

वर्त्तुलदीर्घे त्र्यस्रं खण्डं चक्राभसुप्तसर्पाभम् ।
चतुरस्रानन्तास्रे संज्ञा ज्ञेयादिवर्गाणाम् ॥ १९ ॥

अब वस्तुओंका स्वरूप जाननेके लिये संज्ञा कहते हैं । अवर्गादि आठ वर्गोंका क्रमसे स्वरूप जान लीजिये । वर्त्तुल १ दीर्घ २ त्रिकोण ३ खण्ड ४ चक्राकार ५ सुप्तनागकी तरह ६ चतुरस्र ७ बहुत कोण ८। सो सब चक्रमें प्रस्फुट लिखा है ॥ १९ ॥

वर्त्तुलदीर्घे त्र्यस्रं चतुरस्रं खण्डकं विषमम् ।
द्वाभ्यां द्वाभ्यां ज्ञेयाः संज्ञा विज्ञैश्च मात्राभ्याम् ॥ २० ॥

अब स्वरोंका वस्तुज्ञान कहते हैं । दो दो स्वरोंका क्रमसे समझ लीजिये। वर्त्तुल १ दीर्घ २ त्रिकोण ३ चौकोर ४ खण्ड ५ वर्त्तुलाद्याकाररहित ६ जानना ॥ २० ॥

अण्डजजरायुजाख्यौ स्वेदोद्भिज्जाष्टकवर्गतो द्वाभ्याम् ।
तिसृभिस्तिसृभिस्तद्वन्मात्राभिर्वा क्रमात्ते स्युः ॥ २१ ॥

अब जीवोंका प्रकार कहते हैं । दो दो वर्गों करके क्रमसे जान लीजिये, अण्डज १ जरायुज २ स्वेदज ३ उद्भिज्ज ४ और तीन तीन मात्राका भी क्रमसे समझ लीजिये द्वादश स्वरोंकी ४ संज्ञा होती है ॥ २१ ॥

सुरदितिजनागगन्धर्वमुनिनरापिशाचराक्षसाख्याः ।
रलवटठडढार्णाः स्युश्चिपिटा ङञणनमाश्चान्धाः ॥ २२ ॥

अवर्गादि अष्ट वर्गोंकी देवादि संज्ञा क्रमसे जानना, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखी है । अब स्वर व्यञ्जनोंकी विशेष संज्ञा कहते हैं । र ल व ट ठ ड ढ इन सप्त वर्णोंकी चिपिट संज्ञा है, ङ ञ ण न म इन पञ्च वर्णोंकी अन्ध संज्ञा है ॥ २२ ॥

इईषमखसा मूकाः कखगघआ अश्च खल्वाटाः ।
जशउऊअंअः उक्ताः कुब्जा बधिरा शषौ सहौ वर्णाः २३॥

इ ई ष म ख स इन ६ वर्णोंकी मूक संज्ञा है, क ख ग घ आ अ इन ६ वर्णोंकी खल्वाट संज्ञा है, ज श उ ऊ अं अः इन ६ वर्णोंकी कुब्ज संज्ञा है, श ष स ह इन ४ वर्णोंकी बधिर संज्ञा है ॥ २३ ॥

कोमलाः कखअआः षसवर्णानिष्ठुरा उतचऊछद्-
वर्णाः । उत्तरा बहुसुगन्धियुताः स्युः पूतिगन्धसहिता
अधराख्याः ॥ २४ ॥

क ख अ आ ष स इन ६ वर्णोंकी कोमल संज्ञा है, उ त च ऊ छ द इन ६ वर्णोंकी कठोर संज्ञा है, उत्तरोत्तर स्वरवर्ण बहु सुगन्धियुक्त हैं, उत्तर स्वल्पसुगन्धियुक्त हैं, अधर स्वल्पदुर्गन्धि-युक्त हैं, अधराधर बहुत दुर्गन्धियुक्त हैं । चिपिटादि निष्ठुरान्त-

आठ संज्ञाके मध्यमें झ थ ध थ प फ ब भ यह आठ वर्ण ए ऐ ओ औ चार स्वर ये नहीं कहे हैं सो साङ्ग समझना, ककारकी खल्वाट कोमल दो संज्ञा हैं, खकारकी खल्वाट कोमल मूक तीन संज्ञा हैं, मकारकी मूक अन्ध दो संज्ञा हैं, शकारकी कुब्ज बधिर दो संज्ञा हैं, मूर्द्धन्य और दन्त्यसकारकी मूक बधिर कोमल तीन संज्ञा हैं। इसका हृत नष्टादिक प्रश्नमें चौरका स्वरूप जाननेमें उपयोग पडेगा। इन संज्ञाको भली प्रकार समझ करके प्रश्नोत्तर कहना चाहिये ॥ २४ ॥

उत्तरैश्च भवेद्भक्ष्यमभक्ष्यमधराधरैः ।
उऊवाहौ मपङञा अधमा निष्फलाः स्मृताः ॥ २५ ॥

उत्तर स्वरवर्णोंकी भक्ष्य संज्ञा है, अधराधर स्वरवर्णोंकी अभक्ष्य संज्ञा है, उ ऊ व ह म प ङ ञ इन आठ वर्णोंकी अधम और निष्फल संज्ञा है, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥२५॥

स्वविषयः प्रसंयुक्तोऽसंयुक्तश्चान्यदेशेशः ।
पुरपोऽभिहितोऽनभिहातिसंज्ञः स्यादग्रामबाह्येशः ॥ २६ ॥

संयुक्तवर्ण स्वदेशके स्वामी हैं, असंयुक्त स्वदेश भिन्न अन्य देशके स्वामी हैं, अभिहित पुरपति हैं, अनभिहित ग्रामसे बाह्य जो भूमि उसके स्वामी हैं ॥ २६ ॥

ए ऐ ओ औ स्वर्गे आ अ इ ई चापि पाताले ।
अं अः उ ऊ धरायां मात्रास्थानं बुधैः प्रोक्तम् ॥ २७ ॥

ए ऐ ओ औ ये चार स्वर स्वर्णवासी हैं, आ अ इ ई ये चार स्वर पातालवासी हैं, अं अः उ ऊ ये चार स्वर पृथ्वीवासी समझ लीजिये ॥ २७ ॥

प्रश्नाद्वर्णारूढा या मात्रा स्यात्तथा ज्ञेयम् ।
सत्वं रजस्तमो वा ह्यालिङ्गाद्यैस्तथोत्तराद्यैश्च ॥ २८ ॥

पूर्व श्लोकमें मात्राका स्थान जो कहा है, सो प्रश्नश्रेणीमें पूर्व

जो वर्ण उसमें जो मात्रा उस मात्रासे समझना चाहिये । आलिङ्गित स्वर सत्त्वस्वरूप हैं, अभिधूमित स्वर रजःस्वरूप हैं, दग्धस्वर तमःस्वरूप हैं । उत्तर वर्ण सत्त्वस्वरूप हैं, अधर वर्ण रजःस्वरूप हैं, दग्धवर्ण तमःस्वरूप हैं ॥ २८ ॥

अधराधरे च वर्षं ह्यधरे मासस्तथोत्तरे पक्षः ।
दिनपूर्वमुत्तरोत्तर इति विज्ञेयं च नष्टादौ ॥ २९ ॥

अधराधर प्रश्नमें वर्षावधि कहना, अधरमें मासावधि कहना उत्तर प्रश्नमें पक्षावधि कहना, उत्तरोत्तर प्रश्न होय तो दिन पूर्वावधि कह देना । इस प्रकार हृतनष्टादि द्रव्यका प्राप्तिसमय कहना, आदि शब्दसे दूरस्थ मनुष्यका गमनागमनका समय कहना ॥२९॥

अधरे रात्रिः कृष्णो घस्रः शुक्लस्तथोत्तरे प्रश्ने ।
पूर्वादीनां नाथा अष्टौ वर्गाः क्रमेणैव ॥ ३० ॥

अधर प्रश्नमें कृष्णपक्षकी रात्रि कहना, उत्तर प्रश्नमें शुक्लपक्षका दिन कहना, अवर्गादि अष्टवर्ग पूर्वादि दिशाके स्वामी क्रमसे जान लेना, सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ ३० ॥

ग्रामो बाह्यं योजनार्द्धं च वर्गाद्द्विघ्नं द्विघ्नं ङादयो दूरदेशम् । आद्यैर्वर्गैः पञ्चभिः स्युर्वसन्तात् ज्ञेया वर्षा स्वच्छनीरायुतात्र ॥ ३१ ॥

ग्राम १ ग्रामबाह्य २ योजनार्द्ध ३ योजन ४ द्वियोजन ५ चतुर्योजन ६ अष्ट योजन ७ षोडश योजन ८ इनका अवर्गादि आठ वर्ग क्रमसे स्वामी समझना । ङ ञ ण न म यह बहुत योजनके १६ योजनसे अधिकके) स्वामी हैं । अवर्गादि नववर्ग जो है सो वसन्तादि पञ्च ऋतुके स्वामी क्रमसे समझना । और वर्षा-

ऋतु शरदृतुयुक्त जान लेना सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ३१ ॥

प्रहराधीशा ज्ञेयाश्चानभिघातं विना प्रश्नाः ।
अष्टौ संयुक्ताद्या युक्तिक्रमतोऽत्र विद्वद्भिः ॥ ३२ ॥

वक्ष्यमाण संयुक्तादि अष्टपक्ष सूर्योदयसे अष्ट प्रहराधीश हैं, और अभिघात अनभिघातको एक ही समझना सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ ३२ ॥

काद्या वर्गाः सूर्यवारादिनाथाश्चाद्या सूर्यात्पञ्चमा के-
तुरुक्तः । शुक्ले त्वर्द्धे ह्यौत्तरी चाधरी स्याद्वेला कृष्णे
व्यस्तमेवं निशायाम् ॥ ३३ ॥

कादि सप्तवर्ग और अवर्ग यह अष्टवर्ग सूर्यादि ग्रहोंके स्वामी क्रमसे समझ लेना, ङ ञ ण न म ये पञ्चवर्ण केतुग्रहके स्वामी हैं, शुक्लपक्षमें दिनके पूर्व्वार्द्धमे औत्तरी वेला, और दिनके उत्तरार्द्धमे आधरी वेला, कृष्णपक्षमें दिनके पूर्वार्द्धमें आधरी वेला, शुक्लपक्ष रात्रिके पूर्वार्द्धमें आधरीवेला, शुक्लपक्ष रात्रिके उत्तरार्द्धमें औत्तरी वेला, कृष्णपक्ष रात्रिके पूर्वार्द्धमें औत्तरीवेला, कृष्णपक्ष रात्रिके उत्तरार्द्धमें आधरी वेला जानना, सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ २३ ॥

१६ श्लोकादारभ्य ३३ श्लोकोक्तानि चक्राणि ।

पुरुष	स्त्री	नपुंसक	संज्ञाः
आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध	संज्ञाः
अ इ ओ ए	आ ई ऐ औ	उ ऊ अं अः	स्वराः
सत्त्वम्	रजः	तमः	गुणाः

अ ए क च ट त प य श इ ओ ग ज ड द ब ल स	उत्तराः संयुक्ताः सौख्य- प्रमोदसंज्ञकाश्च सत्त्वाः
आ ऐ ख छ ठ थ फ र ष ई औ घ झ ढ ध भ व ह	अधराः असंयुक्ताः व्याधि- शोकसंज्ञकाश्च रजाः
उ ऊ अं अः ङ ञ ण न माः	मृताः तमःस्वरूपाः
अ क च ट त प य शः	जीविताः ।

वर्गाः	अ	क	च	ट	त	प	य	श
रंग	श्वेत	रक्त	पीत	हरित	पीत	धूम्र	हरित	कृष्ण
वस्तुस्वरूप	वर्तुल	दीर्घ	त्रिकोण	खण्ड	चक्राकार	सुप्तसर्पाभ	चतुरस्र	अनन्तास्र
संज्ञा	देवाः	दैत्याः	नागाः	गन्धर्वाः	मुनिः	नरः	पिशाचः	राक्षसाः
जीवाः	अण्डजाः		जरायुजाः		स्वेदजाः		उद्भिज्जाः	

स्वराः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
वर्णाः	श्वेत		पीत		धूम्र		रक्त		कर्बुर		श्वेत	कृष्ण
स्वरूपा	वर्तुल		दीर्घ		त्रिकोण		चतुरस्र		खण्ड		विषम	
जीवाः	अण्डजाः कुक्कुटादयः		जरायुजाः मनुष्यादयः			स्वेदजाः मत्कुणादयः			उद्भिज्जाः वृक्षादयः			

चिपिटाः	अन्धाः	मूकाः	खल्वाटाः	कुब्जाः	बधिराः	कोमलाः	कठोराः	संज्ञाः
ल व ट ठ ड ढ	ङ ञ ण न म	इ ई ष म ख स	क ख ग घ आ अ	ज श ड ऊ अं अः	श ष क्ष ह	क ख अ आ ष स	उ त च ऊ छ द	वर्णाः

विशेषसंज्ञाचक्रम् ।

साङ्गाः	खल्वाटाः कोमलौ	खल्वाटकोमलमूकाश्च	मूकान्धौ	कुब्जबधिरौ	मूकबधिरकोमलाश्च	मूकबधिरकोमलाश्च	संज्ञाः
एऐओऔऊथ धञ्फबभय	क	ख	म	श	ष	स	वर्णाः

संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	पक्षाः
स्वदेशाधीशः	स्वदेशाभिन्नस्वामी	पुरुषः	ग्रामबाह्येशः	स्वामिनः

पञ्चविंशतिश्लोकोक्तं चक्रम्।

अङटपशाः इगडबसाः	दिवा शुक्लपक्ष दिनपूर्वावधिः	भक्ष्य	बहुसुगन्धि-युताः	उत्तरोत्तराः
एचतयाः ओजदलाः	दिवा शुक्लपक्ष पक्षावधिः	भक्ष्य	सुगन्धि-युताः	उत्तराः
ऐछथराः औजधवः	रात्रिकृष्णपक्ष वर्षावधिः	अभक्ष्य	बहुदुर्गन्धि-युताः	मधरा-धराः
आक्ठफषा इघढभहाः	रात्रिकृष्णपक्ष मासावधिः	अभक्ष्य	दुर्गन्धि-युताः	अधराः
उऊअंआः ङञणनमाः	दग्धा उभय-पक्षगाः	भक्ष्याभक्ष्य	निर्गन्धिकाः	०
उऊवाहो	मपङञ	अधमाः	निष्फलाः	०

वर्गाणां स्थितिचक्रम्।

सू	चं	म	बु	बृ	शु	श	रा	ग्रहाः
अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्गाः
पूर्वा	आग्नेयी	दक्षिणा	नैर्ऋती	पश्चिमा	वायव्या	उत्तरा	ऐशानी	दिशः
ग्रामे	ग्रामबाह्ये	योजनार्द्धे	योजनम्	द्वियोजनम्	चतुर्योजनम्	अष्टयोजनम्	षोडशयोजनम्	
ङ	ञ	ण	न	म	दश	दशे	देशतः	

ऋतुचक्रम् ।

अ ए क च ट त प य श	आ ऐ ख छ ठ थ फ र ष	इ ओ ग ज ड द ब ल स	ई औ घ झ ढ ध भ व ह	उ ऊ अं अः ङ ञ ण न मः
वसन्तः १	ग्रीष्मः २	वर्षा ३ शरत ४	हेमन्तः ५	शिशिरः ६

दिनपूर्वाबाधिज्ञानचक्रम् ।

संयुक्त	असंयुक्त	अभिहत	अनभिहत	अभिघातक अनभिघातक	आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध	पक्षाः
१	२	३	४	५	६	७	८	प्रहराः

वेलाज्ञानचक्रम् ।

ओत्तरावला	आधरीवेला
शुक्लपक्षे पूर्वार्द्धदिने	शुक्लपक्षे उत्तरार्द्धदिने
कृष्णपक्षे उत्तरार्द्धदिने	कृष्णपक्षे पूर्वार्द्धदिने
शुक्ले रात्रौ उत्तरार्द्धे	शुक्ले रात्रौ पूर्वार्द्धे
कृष्ण रात्रा पुवार्द्धे	कृष्णे रात्रौ उत्तरार्द्धे

अथ हृत्कमलचक्रस्यावतारमाह ।

आद्यैर्वर्गैरष्टपत्रेषु नाड्यो वर्णैस्तत्त्वान्येव तास्वेव विन्द्यात् । बाणैरङ्गैस्तत्त्वभागास्तथासौ ह्रस्वैर्दीर्घैः स्यात्प्रवेशो गमश्च ॥ ३४ ॥ नाडीभिः स्युः सिद्ध-

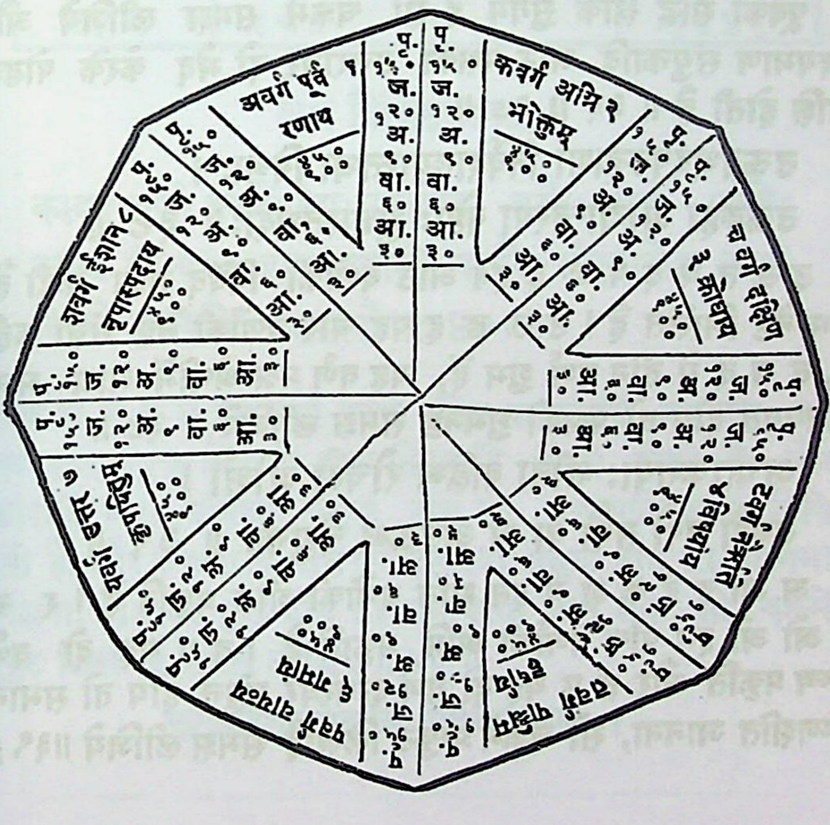
पक्षाश्च ताभ्यां मासो भागाश्चानुपातेन कल्प्याः।
एवं ज्ञात्वा सर्वकालं वदेज्ज्ञो ह्यं वेषस्थो ह्यः परस्थो
विकालः॥ ३५॥

अब प्रसव गर्भाधान कालज्ञानके अर्थ हस्तकमलचक्रका अवतार दिखाते हैं। हस्तकमलकी उत्पत्ति समरसार प्रभृति स्वरग्रन्थोंमें "शुक्रादित्रित्रिघस्रैर्हिमगुरथ रविरित्यादि" क्रमसे कही है। हस्तकमलचक्रके अष्ट दलके विषय अवर्गादि अष्ट वर्ग स्थापन करे और तत्तत्पत्रमें इन वर्गोंके वर्णोंसे पृथिव्यादि पञ्चतत्त्व समझना, यवर्ग शवर्गका आकाशतत्त्व संयुक्तवशात् समझना। पञ्च स्वर करके तत्वोंके भाग समझ लेना चाहिये। ह्रस्व स्वर संयुक्त वर्णोंसे प्राणका प्रवेश होता है, दीर्घ स्वरसंयुक्त वर्णोंसे प्राणका गमन होता है, हस्तकञ्जाष्ट नाडीके त्रिरावृतिसे चतुर्विंशति पक्ष होते हैं, दो पक्षका एक मास होता है। मासभाग अनुपातसे कल्पना करना। पूर्वोक्त प्रकार सम्यक् जान करके सर्व प्रश्नादिकोंके फलप्राप्तिका समय कहै, अं स्वर प्राणके प्रवेशमें स्थित रहता है, विसर्ग स्वर प्राणके गमनमें स्थित रहता है, यह दोनों स्वर विकाल हैं अर्थात् समयशून्य हैं, प्राणका प्रवेश निर्गम बहुत सूक्ष्म है सो समरसारमें कहा है। तदुक्तम्। "प्रश्ने श्वासान्तर्गमे चेज्जयः स्याद्भङ्गो निर्यात्यत्र सूक्ष्मं तदेतत्।" प्राण कितने कालको कहते हैं सो सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है। "दशगुर्वक्षरोच्चारः प्राण इत्यभिधीयते। षड्भिः प्राणैर्विनाडी स्यात्तत् षष्ट्या नाडिकाः स्मृताः। नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्त्तितम्॥ तत्त्रिंशता भवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा। ऐन्दवस्तिथिभिस्तद्वत् संक्रान्त्या सौर उच्यते। मासैर्द्वादशभिर्वर्षं दिव्यं तदह उच्यते॥" हस्तकमलकी अहोरात्रमें तीन आवृत्ति होती है, सूर्योदयसे २० घटिकापर्यन्त सत्त्वका भोग रहता है, २० घटिकासे उपरान्त सूर्योदयसे ४० घटिकापर्यन्त रजका भोग

रहता है, ४० घटिकासे उपरान्त सूर्योदयपर्यन्त तमका भोग रहता है। सत्त्वके भोगमें प्रश्न करे तो प्रश्न काल पर्यन्त प्राण स्थापन करे, रजके भोगमें प्रश्न करे तो सत्त्वका भोग युक्त करे, तमके भोगमें प्रश्न करे तो सत्त्वरज दोनोंके भो। युक्त करे, फिर प्राणसमूहमें ६० का भाग ले लब्ध दिन होते हैं शे। कला रहती है, दिनमें ३० का भाग ले लब्ध राशि होती हैं, इन राश्यंशकलाको तात्कालिक सूर्यमें युक्त करना उस सूर्यके तुल्य जब सूर्य आवे तब प्राप्तिकाल कहे, यह स्थूलमान आता है। अब सूक्ष्म प्रकार लिखते हैं, प्राणसमूहमें ६० का भाग लेनेसे जो लब्ध और शेष होय उनको दो जगहमें स्थापन करे, एकको १३ से गुणन करे और ८९० से भाग ले, लब्ध आवे वह द्वितीय स्थानमें युक्त करे, फेर ३० से भाग लेनेसे लब्ध राश्यादि रवि होता है, उसको तात्कालिक सूर्यमें युक्त करनेसे भविष्य प्राप्ति कालका सूर्य होता है, फिर मासस्पष्टकी रीतिसे दिन पूर्व इष्टकाल निकाल लेवे। और विशेष यह है कि हृत्कमलकी एकावृत्तिके ७२०० प्राण होते हैं, दिन रात्रके प्राणसमूह २१६०० इतने होते हैं सो ग्रन्थान्तरमें लिखा है। यथा-"षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्रं त्वेकविंशतिः। हंसहंसेति हंसेति जीवो जपति नित्यशः॥" आकाशादि तत्त्वोंके प्राणसमूहमें ६ का भाग देनेसे पल होते हैं, एक पत्रके प्रवेश निर्गमके ९०० प्राण होते हैं जिसकी ढाई घटी होती है। अब कालबोधके अर्थ उदाहरण देते हैं, सम्वत् १९४८ शाके १८१३ पौषशुक्ला ११ रवाविष्टम् १४।४४ अत्र रविः ८।२७।१८।८ सत्त्व भोगमें प्रश्न हुआ जिसमें १२ घटी ३० पल पर्यन्त पश्चिम पत्रमें प्राण रहता है, इष्टकालका और पश्चिमपत्रके भोगका अन्तर २।१४ हुआ सो वायव्य पत्रके प्रवेशका तेजतत्त्व पर्यन्त काल रहता है, सो सर्व प्राणसमूह ५३१० हुए इसमें ६० का भाग लिया लब्ध ८८ शेष ३० कला इसको दो जगह रखकर ८८।३० एकत्र १३ से गुणन किया तो इतने ११५०।३० हुए ८९० का भाग लिया तो

लब्ध १।१७ द्वितीय जगहमें युक्त किया तो ८९।१।४७ हुआ इसमें ३० का भाग लिया लब्ध २ राशि शेष २९ अंश कला ४७ इनको तात्कालिक सूर्यमें योग किया तो ११।२६।५३।१८ हुआ इस रविके तुल्य सूर्य आवे तब प्राप्तिका समय कहे, महीनेकी तरह दिनपूर्व इष्ट काल निकाल लेना, इसी प्रकार अन्यत्र जानना। यह अवधि वर्षाभ्यन्तरहीमें आती है, वर्षके उपरान्त जो अवधि कहना उसका प्रकार लिखते हैं। प्रश्नके समयका तात्कालिक लग्न स्थापन करे, फिर बृहस्पतिका स्पष्ट देखे जो गुरु प्रथम द्रेष्काणमें होय तो लग्नके तुल्य वर्ष कहे, द्वितीय द्रेष्काणमें होय तो पञ्चम भावकी राशिके तुल्य वर्ष कहे, तृतीय द्रेष्काणमें होय तो नवम भाव राशिके तुल्य वर्ष कहे, पूर्वोक्त अवधिमें संयुक्त करके वर्ष कहे ॥३५॥

३४।३५ श्लोकोक्तं चक्रम्।



३६।३७ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध
अ इ ओ ए	आ ई ऐ औ	उ ऊ अं अः
जीवः खग्रामस्थः मध्यवयः गौरवर्णः	मूलम् अन्यपुरस्थः वृद्धवयः श्यामवर्णः	धातुमृतिः श्यामवर्णः शुभं नाहि शून्यं ज्वरामयदम्

जीवस्वग्रामस्थो मध्यवयो गौरवर्णश्च ।
आलिङ्गितमभिधूम्रे मूलान्यपुरस्थवृद्धकृष्णाभम् ॥ ३६ ॥
दग्धं मृतिधात्वसितं न शुभं शून्यं ज्वरामयदम् ।
षोडशतुल्यो राशिः ह्युत्तराधरद्विभेदेन ॥ ३७ ॥

पूर्वका सार्द्ध श्लोक सुगम है सो चक्रमें समझ लीजिये और वक्ष्यमाण संयुक्तादि आठ पक्षका उत्तराधर दो भेद करके षोडश राशि होती है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

उऊतथदषङहार्णा निर्वेदाख्यास्तथा मिश्राः ।
उऊङहा आद्यान्तरगा नेष्टाः शुभास्तथदाः ॥ ३८ ॥

उ ऊ त थ द ष ङ ह इन आठ वर्णोंकी निर्वेद संज्ञा कही है, शुभ नेष्ट मिलित है । उ ऊ ङ ह यह चार वर्णोंकी नेष्ट संज्ञा कही है, त थ द ये तीन वर्ण शुभ हैं, यह वर्ण प्रश्न श्रेणीमें आद्य मध्य अन्त्यगत होय तो प्रश्नको शुभनष्ट समझ लीजिये ॥ ३८ ॥

अचतुकशयाः शीता वह्निश्च रोचटौ ओऔ ।
उष्णौ तपौ समौ वा अं अउऊश्च चेद्युक्तः ॥ ३९ ॥

अ आ इ ई क श य इन सात वर्णोंकी शीत प्रकृति है । र च ट ओ औ इन पांच वर्णोंकी अग्नि प्रकृति है । त प यह दो वर्ण उष्ण प्रकृति और त प यह दो वर्ण दग्धस्वर संयुक्त होय तो समान उष्णशीत जानना, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखाहै समझ लीजिये ॥३९॥

३८ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

प्रश्नाद्यमध्यांतगताः ।		
शुभनेष्टाः निर्वेदाः	नेष्टाः	शुभाः
उ ऊ त थ द ष ङ ह ढ	उ ऊ ङ ह ४	त थ द ३

३९ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

शीताः	वह्निः	उष्णः	अनुष्णशीतौ
अ आ इ ई क श य	ओ औ र च ट	त प	तं तः पं पः तु तू पु पू

अथ तिथिसंज्ञामाह ।

काद्या वर्णा ङादिहीना युताश्चेत् ह्रस्वैः शुक्ले पक्षतेः स्युश्च तिथ्यः । हाद्यस्तास्ते चाथरैः संयुताश्चेत् कृष्णे तिथ्यो ङादिभिः पञ्चदश्यौ ॥ ४० ॥

ङ ञ ण न म इन वर्णों करके रहित ककारादि अष्टादश वर्ण ह्रस्व स्वर संयुक्त होंय तो शुक्लप्रातिपदादि तिथि होती है, और हकारादि व्यस्त दीर्घस्वर संयुक्त होय तो कृष्णप्रातिपदासे तिथि होती है, और ङकारादि पांच वर्ण ह्रस्वस्वर संयुक्त होय तो पौर्णिमा समझना, दीर्घस्वर युक्त होय तो अमावस्या जान लेना, सो चक्रमें पस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ४० ॥

चत्वारिंशच्छ्लोकोक्तं तिथिचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथिः
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	
कि	खि	गि	घि	चि	छि	जि	झि	टि	ठि	डि	ढि	ति	थि	
कु	खु	गु	घु	चु	छु	जु	झु	टु	ठु	डु	ढु	तु	थु	
के	खे	गे	घे	चे	छे	जे	झे	टे	ठे	डे	ढे	ते	थे	
को	खो	गो	घो	चो	छो	जो	झो	टो	ठो	डो	ढो	तो	थो	
कं	खं	गं	घं	चं	छं	जं	झं	टं	ठं	डं	ढं	तं	थं	

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथिः
द	ध	प	फ	ब	भ	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	
दि	धि	पि	फि	बि	भि	यि	रि	लि	वि	शि	षि	सि	हि	
दु	धु	पु	फु	बु	भु	यु	रु	लु	वु	शु	षु	सु	हु	
दे	धे	पे	फे	बे	भे	ये	रे	ले	वे	शे	षे	से	हे	
दो	धो	पो	फो	बो	भो	यो	रो	लो	वो	शो	षो	सो	हो	
दं	धं	पं	फं	बं	भं	यं	रं	लं	वं	शं	षं	सं	हं	

१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	तिथिः
का	खा	गा	घा	चा	छा	जा	झा	टा	ठा	डा	ढा	ता	था	
की	खी	गी	घी	ची	छी	जी	झी	टी	ठी	डी	ढी	ती	थी	
कू	खू	गू	घू	चू	छू	जू	झू	टू	ठू	डू		तू	थू	
कै	खै	गै	घै	चैं	छै	जै	झै	टै	ठै	डै	ढै	तै	थै	
कौ	खौ	गौ	घौ	चौ	छौ	जौ	झौ	टौ	ठौ	डौ	ढौ	तौ	थौ	
कः	खः	गः	घः	चः	छः	जः	झ	टः	ठः	डंः	ढः	त	थः	

१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	तिथिः
दा	धा	पा	फा	बा	भा	या	रा	ला	वा	शा	षा	सा	हा	
दी	धी	पी	फी	बी	भी	यी	री	ली	वी	शी	षी	सी	ही	
दू	धू	पू	फू	बू	भू	यू	रू	लू	वू	शू	षू	सू	हू	
दै	धै	पै	फै	बै	भै	यै	रै	लै	वै	शै	षै	सै	है	
दौ	धौ	गै	फौ	बौ	भौ	यौ	रौ	लौ	वौ	शौ	षौ	सौ	हौ	
दः	धः	पः	फः	बः	भः	यः	ः	लः	वः	शः	षः	सः	हः	

४० श्लोकोक्तं चक्रम् ।

उत्तरस्वरयुता वर्णाः । पौर्णमासी १५ ।

ङ	ञ	ण	न	म
ङि	ञि	णि	नि	मि
ङु	ञु	णु	नु	मु
ङे	ञे	णे	ने	मे
ङं	ञं	णं	नं	मं

अधरस्वरयुता वर्णाः । अमावास्या ३० ।

ङा	ञा	णा	ना	मा
ङी	ञी	णी	नी	मी
ङू	ञू	णू	नू	मू
ङै	ञै	णै	नै	मै
ङः	ञः	णः	नः	मः

अथ नक्षत्रानयनमाह ।

काद्या वर्णा ङाद्यैर्हीनाश्चेत्संयुक्ता ह्रस्वैः प्रश्ने ।
वह्नेर्धिष्ण्यानि स्युर्दीर्घैर्युक्तास्तद्वग्न्यर्क्षाद् द्वाविंशज्ञात् ॥ ४१ ।

ङकारादि पांच वर्णरहित ककारादि अष्टादश ह्रस्व स्वरयुक्त होय तो कृत्तिकादि अष्टादश नक्षत्र क्रमसे जानना, जो दीर्घस्वरयुक्त होय वो धनिष्ठादि नक्षत्रक्रमसे समझना, और ङकारादि पांच वर्ण अपने २ पूर्व वर्णयुक्त जानना, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा समझ लीजिये ॥ ४१ ॥

४१ श्लोकोक्तं नक्षत्रचक्रं परपृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	ऽभि	श्र	ध	शं	पू	उ	रे	अ	भ
क	ख	ग	घ ङ	च	छ	ज	झ ञ	ट	ठ	ड	ढ ण	त	थ	द	ध न	प	फ	ब	भ म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
कि	खि	गि	घिङि	चि	छि	जि	झिञि	टि	ठि	डि	ढि णि	ति	थि	दि	धिनि	पि	फि	बि	भि मि	यि	रि	लि	वि	शि	षि	सि	हि
कु	खु	गु	घु ङु	चु	छु	जु	झु ञु	टु	ठु	डु	ढु णु	तु	थु	दु	धु नु	पु	फु	बु	भु मु	यु	रु	लु	वु	शु	षु	सु	हु
के	खे	गे	घे ङे	चे	छे	जे	झे ञे	टे	ठे	डे	ढे णे	ते	थे	दे	धे ने	पे	फे	बे	भे मे	ये	रे	ले	वे	शे	षे	से	हे
को	खो	गो	घो ङो	चो	छो	जो	झोञो	टो	ठो	डो	ढो णो	तो	थो	दो	धो नो	पो	फो	बो	भो मो	यो	रो	लो	वो	शो	षो	सो	हो
कं	खं	गं	घं ङं	चं	छं	जं	झं ञं	टं	ठं	डं	ढं णं	तं	थं	दं	धं नं	पं	फं	बं	भं मं	यं	रं	लं	वं	शं	षं	सं	हं
घ	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उऽ	भि	श्र
का	खा	गा	घाङा	चा	छा	जा	झाञा	टा	ठा	डा	ढा णा	ता	था	दा	धाना	पा	फा	बा	भामा	या	रा	ला	वा	शा	षा	सा	हा
की	खी	गी	घीङी	ची	छी	जी	झी ञी	टी	ठी	डी	ढीणी	ती	थी	दी	धीनी	पी	फी	बी	भीमी	यी	री	ली	वी	शी	षी	सी	ही
कू	खू	गू	घू ङू	चू	छू	जू	झू ञू	टू	ठू	डू	ढू णु	तू	थू	दू	धू नू	पू	फू	बू	भू मू	यू	रू	लू	वू	शू	षू	सू	हू
कै	खै	गै	घै ङै	चै	छै	जै	झै ञै	टै	ठै	डै	ढै णै	तै	थै	दै	धै नै	पै	फै	बै	भै मै	यै	रै	लै	वै	शै	षै	सै	है
कौ	खौ	गौ	घा ङः	चौ	छौ	जौ	झौ ञौ	टौ	ठौ	डौ	ढौणौ	तौ	थौ	दा	धौनौ	पो	फौ	बौ	भौमौ	यौ	रौ	लौ	वौ	शौ	षौ	सौ	हौ
कः	खः	गः	घः ङः	चः	छः	जः	झः ञः	टः	ठः	डः	ढःणः	तः	थः	दः	धःनः	पः	फः	बः	भःमः	यः	रः	लः	वः	शः	षः	सः	हः

आलिङ्गितवेलामाह ।

दिग्भिर्दिग्भिर्नाडिकाभिः क्रमेण ज्ञेया वेलालिङ्गितादिस्वराणाम् । व्यस्तं रात्रौ त्र्यंशयुग्वह्निदण्डैस्तत्पूर्वाणामन्तराभुक्तिरुक्ता ॥ ४२ ॥

दश दश घटिका १० मान आलिङ्गितादि वेलाका स्थूलमान है, दिन प्रमाणके तीन विभाग करे, सूर्योदयसे प्रथम विभागमें आलिङ्गित वेला जानना, द्वितीय विभागमें अभिधूमित वेला समझना, तृतीय विभागमें दग्ध वेला समझना, और रात्रिके प्रथम त्र्यंशमें दग्धवेला, द्वितीय त्र्यंशमें अभिधूमित वेला समझना, तृतीय त्र्यंशमें आलिङ्गित वेला समझना, और त्र्यंशका त्र्यंश करके वेलापूर्वक अन्तरभुक्ति जान लेना सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥४२॥

४२ श्लोकोक्तं चक्रम् । दिवावेलाक्रमः ।

आलिङ्गित			अभिधूमित			दग्ध			दिग्भिरित्युपक्षलणम्
१०			१०			१०			दिनमानत्र्यंशे
आ	अ	द	अ	द	आ	द	आ	अ	अन्तराभुक्तिःत्र्यंशेस्यापि
३ २०	६ ४०	१० ००	१३ २०	१६ ४०	२० ००	२३ २०	२६ ४०	३० ००	त्र्यंशे

४२ श्लोकोक्तं चक्रम् । रात्रौ वेलाक्रमः ।

दग्ध			अभिधूमित			आलिङ्गित			दिग्मिरस्यु-पलक्षणम्
१०			१०			१०			निशाऽत्र्यंशे
द	अ	आ	अ	द	आ	आ	अ	द	त्र्यंशस्यापि त्र्यंशे अन्तरभुक्तिः
३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	३ २०	

अथ संयुक्तादिवेलामाह ।

संयुक्ताप्रभृतीनां यत्र स्यादष्टसम्मिता संख्या ।
तत्रानभिघातख्यं ह्यभिघातान्तर्बुधैर्वेद्यम् ॥ ४३ ॥

वक्ष्यमाण संयुक्तादि पक्षकी जहां आठ संख्या है उस जगह अनभिघातको अभिघातके अन्तर्गत समझना ॥ ४३ ॥

वेदाग्निपञ्चाब्धिगुणाङ्कदस्त्ररामैर्मिताः स्युर्घटिकाः क्रमेण ।
सूर्योदयात् संयुतपूर्वकाणामेवं बुधैस्तत्परतोऽपि वेद्यम् ॥ ४४ ॥

सूर्योदयसे ४ घटिका पर्यन्त संयुक्तकाल रहता है, फेर ३ घटिका असंयुक्तकाल रहता है, उसके बाद ५ घटिका अभिहित काल रहता है, फेर ४ घटिका अनभिहित काल रहता है, तदन्तर ३ घटिका अभिघातककाल रहता है, उसके बाद ६ घटिका आलिङ्गित काल रहता है, फेर ९ घटिका अभिधूमित काल रहता है, फेर ३ घटिका दग्धकाल रहता है । ३० घटिकासे उपरान्त पूर्वोक्त प्रकारसे फिर जान लेना सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा समझ लीजिये ॥ ४४ ॥

४४ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

प्रश्नाः	संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	अभिघातक	आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध
घटीमान	४	२	५	४	३	६	२	३
अहोरात्र	४	७	१२	१६	१९	२५	२७	३०
घटयः	३४	३७	४२	४६	४९	५५	५७	६०

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतकेरलीप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां संज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ संयुक्तादिसंज्ञामाह ।

प्रथमतृतीयाक्षरयोः संयुक्तेति स्वतो मिथश्चाख्याः ।
समवर्णयोश्च तद्वद्गवर्गाणामसंयुक्ताः ॥ १ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिके दो वर्णसे संयुक्तादि नव संज्ञा कहते हैं, कादि सात वर्गोंके प्रथम तृतीय और तृतीयं प्रथम और प्रथम प्रथम और तृतीय तृतीय वर्णकी संयुक्त संज्ञा कही है, और द्वितीय चतुर्थ और चतुर्थं द्वितीय और द्वितीय द्वितीय और चतुर्थ चतुर्थ वर्णोंकी असंयुक्त संज्ञा कही है, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ १ ॥

प्रश्नार्णौ चेत् क्रमगावभिहितसंज्ञं तथानभिहितं च ।
एकैकाद्वित्र्यर्णाः परगेष्वब्धीषुबाणाढ्याः ॥ २ ॥

प्रश्नश्रेणीके प्रथम दो वर्ण वर्गके क्रमसे होय तो अभिहित संज्ञा होती है । तथा प्रथम द्वितीय और द्वितीय तृतीय और तृतीय चतुर्थ और चतुर्थ पञ्चम वर्णकी अभिहित संज्ञा होती है । प्रथम पञ्चम और प्रथम चतुर्थ और द्वितीय पञ्चम और तृतीय पञ्चम वर्णोंकी अनभिहित संज्ञा कही है ॥ २ ॥

अभिघातं स्यात् पूर्वे वेदद्वित्र्यब्धिवर्णाश्चेत् ।
नगवर्गाणां परतो धरणीचन्द्रद्विरामाढ्याः ॥ ३ ॥

कादि सात वर्गोंके चतुर्थ प्रथम और द्वितीय प्रथम और तृतीय द्वितीय और चतुर्थ तृतीय वर्ण क्रमसे प्रश्नश्रेणीमें होय तो अभिघात संज्ञा होती है ॥ ३ ॥

पञ्चमवर्णः पूर्वे वर्गे काद्यर्णसंयुक्तः ।
ज्ञेयोऽनभिघाताख्यश्चिन्तादारिद्र्यदुखदः प्रोक्तः ॥ ४ ॥

पञ्चम प्रथम और पञ्चम द्वितीय और पञ्चम तृतीय और पञ्चम चतुर्थ और पञ्चम पञ्चम वर्णोंकी अनभिघात संज्ञा होती है । अनभिघात संज्ञक चिन्ता दुःख दारिद्र्यका देनेवाला है ॥ ४ ॥

आलिङ्गितमइओएआईऐऔ तथाभिधूम्राख्यम् ।
दग्धं च उऊअंअः प्रश्नाद्यगते च विज्ञेयम् ॥ ५ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें केवल स्वर होनेसे आलिङ्गितादि तीन संज्ञा होती है । अ इ ओ ए यह चार स्वर होनेसे आलिङ्गित प्रश्न होता है, आ ई ऐ औ यह चार स्वर होनेसे अभिधूम्र प्रश्न होता है, उ ऊ अं अः यह चार स्वर होनेसे दग्ध प्रश्न होता है ॥ ५ ॥

अथ संयुक्तादिनवपक्षाणां भेदसंख्यामाह ।

पञ्चानभिघाताख्ये भेदा वेदाश्च शेषाणाम् ।
सर्वेषामगरामाः ३७ स्वान्यैर्मिलिता ह्यनन्ताः स्युः ॥ ६ ॥

अभिघातके पांच भेद होते हैं, शेष आठ पक्षोंके चार चार भेद होते हैं, संपूर्णके ३७ भेद होते हैं, और अन्य भेद मिलानेसे अनन्त भेद होते हैं, चारको आठ गुणित करनेसे ३२ होते हैं और पांच अभिघातके युक्त करनेसे ३७ भेद हुए । अब इनके भेद चक्रमें लिखे हैं सो देख लीजिये ॥ ६ ॥

१।२।३।४।५।६ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

संयुक्त १		३ १	१ ३	३ ३	१ १
असंयुक्त २		४ २	२ ४	४ ४	२ २
अभिहित ३		४ ५	३ ४	२ ३	१ २
अनभिहित ४		३ ५	२ ५	१ ४	१ ५
अभिघात ५		४ ३	३ २	२ १	४ १
अनभिघात ६	५ ५	५ ४	५ ३	५ २	५ १
आलिङ्गित ७		ए	ओ	इ	अ
अभिधूमित ८		औ	ऐ	ई	आ
दग्ध ९		अः	अं	ऊ	उ
सर्वेषां भेदाः ३७ मिलिता ह्यनन्ताः ।					

अथैषां फलमाह ।

उत्तमाचिन्तालाभः संयुक्ते द्रव्यपुत्रेच्छा ।
अयुतेऽधमा प्रवासः स्त्रीद्रव्येच्छा कदा सौख्यम् ॥ ७ ॥

संयुक्त प्रश्न होय तो उत्तम चिन्ता, लाभ, द्रव्य पुत्रकी इच्छा-विषयक प्रश्न कहना और असंयुक्त प्रश्न होय तो अधम चिन्ता प्रवास स्त्री द्रव्यकी इच्छा किस कालमें सुख होवेगा ऐसा प्रश्न कहना ॥ ७ ॥

अन्येभ्योऽहितसौख्यं लाभाहितेऽनभिहिते च ।
मृज्जीवनसन्देहोद्वेगर्णजबन्धनादिभयम् ॥ ८ ॥

अभिहित प्रश्न होय तो दूसरेसे लाभ और सौख्यका प्रश्न कहै, अनभिहित प्रश्न होय तो मृत्यु जीवनका सन्देह और उद्वेग ऋण बन्धनादि भय ऐसा प्रश्न कहना ॥ ८ ॥

बन्धोद्वेगरणेभ्यो भयमभिघाते तथा लिङ्गे ।
स्वग्रामभित्रचिन्ता ह्यभिधूम्रे शत्रुचिन्ता स्यात् ॥ ९ ॥

अभिघात प्रश्न होय तो बन्धनका उद्वेगका संग्रामादि भयका प्रश्न कहना, आलिङ्गित प्रश्न होय तो स्वग्राम मित्र चिन्ता कहनी अभिधूम्र प्रश्न होय तो शत्रुचिन्ता कहनी ॥ ९ ॥

रोगातुरादिदग्धे ह्यभिघाते स्यादनभिघातम् ।
पिण्डं पञ्चविभक्तं द्वाभ्यां शस्तं परेष्वशुभम् ॥ १० ॥

दग्ध प्रश्न होय तो रोगातुरका आदि शब्दसे निद्रा क्षुधा स्वमादिकका प्रश्न कहना, और अनभिघातको अभिघातके अन्तर्गत समझ लेना । वक्ष्यमाण रीतिसे पिण्ड बनाकर पांचसे भाग लेना, शेष बचनेसे चिन्तित कार्य श्रेष्ठ कहना, एक तीन चार शून्य शेष रहे तो अशुभ कहना ॥ १० ॥

स्याद्यदाद्यवर्णपरा मात्रालिङ्गादिकं तर्हि ।
ज्ञेयं तदेव यद्वन्नाउ दग्धश्च भाषायाम् ॥ ११ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें वर्ण (व्यञ्जन) द्वितीय स्वर होय तो आलिङ्गितादि तीन संज्ञा होती है, वर्णके आगे जो स्वर उसकी जो संज्ञा वही संज्ञा उसकी भी जानना । इसका उदाहरण लिखते हैं । मध्यदेशकी भाषामें नाउ शब्द जो है सो दग्ध है, इसी रीतिसे दाउ भाउ माउ इत्यादि जान लेना एवं नाई माई अभिधूमित. जाओ खाओकी आलिंगित्त संज्ञा होती है ॥ ११ ॥

वेदादिसंख्यासहितान् पूर्वान् वर्गांल्लिखेदस्य रविप्रभेदात् ।
अतोर्णमात्राजनितं तु पिण्डं सूक्ष्मं च संयुक्तावियुक्तयोः
स्यात् ॥ १२ ॥

अवर्गादि आठ वर्ग वेदादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे लिखे और उन वर्गोंके वर्ण भी तत्तत् संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे लिखे जिसमें अकारादि द्वादश मात्राके दो वर्ग होते हैं, संयुक्त असंयुक्त प्रश्न होय तो इस सूक्ष्म चक्रसे वर्णमात्राजनित पिण्ड उत्पादन करे सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ १२ ॥

१२ श्लोकोक्तं संयुक्तासंयुक्तवर्णाः

अ ४	आ ५	क ५	च ६	ट ७	त ८	प ९	य १०	श ११
इ ६	ई ७	ख ६	छ ७	ठ ८	थ ९	फ १०	र ११	ष १२
उ ८	ऊ ९	ग ७	ज ८	ड ९	द १०	ब ११	ल १२	स १३
ए १०	ऐ ११	घ ८	झ ९	ढ १०	ध ११	भ १२	व १३	ह १४
ओ १२	औ १३	ङ ९	ञ १०	ण ११	न १२	म १३	०	०
अं १४	अः १५	०	०	०	०	०	०	०

मुख्यपिण्डांकचक्रम् ।

एकद्व्यां नववर्गाणां तद्वर्णानां च तत्क्रमात् ।
ज्ञेया संख्यार्णमात्रोत्था चतुर्ष्वभिहितादिषु ॥ १३ ॥

अभिहित १ अनभिहित २ अभिघातक ३ अनभिघातक ४ यह चार प्रश्न होय तो इस चक्रसे वर्णमात्राजनित पिण्ड उत्पादन करे सो लिखते हैं । अवर्गादि नववर्ग एकादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे लिखे, उन वर्गोंके वर्ण भी तत्तत् संख्यासे एकोत्तर वृद्धिसे लिखे ॥ १३ ॥

१३ श्लोकोक्तं अभिहितादिचतुर्षु पिण्डाङ्कचक्रम् ।

अ १	ए २	क ३	च ४	ट ५	त ६	प ७	य ८	श ९
आ २	ऐ ३	ख ४	छ ५	ठ ६	थ ७	फ ८	र ९	ष १०
इ ३	ओ ४	ग ५	ज ६	ड ७	द ८	ब ९	ळ १०	स ११
ई ४	औ ५	घ ६	झ ७	ढ ८	ध ९	भ १०	व ११	ह १२
उ ५	अं ६	ङ ७	ञ ८	ण ९	न १०	म ११	०	०
ऊ ६	अः ७	०	०	०	०	०	०	०

एकद्व्यादीनष्टौ वर्गान् कृत्वा ज्ञेया मात्रार्णोस्तथा ।
संख्यालिङ्गाद्यप्रश्ने त्रिष्वप्यस्य द्विषड्भेदाः ॥ १४ ॥

आलिंगितादि तीनमें प्रश्न होय तो इस चक्रसे पिण्ड उत्पादन करे, अवर्गादि आठ वर्ग एकादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे लिखे उन वर्गोंके वर्ण भी तत्तत् संख्यासे एकोत्तर वृद्धिसे लिखे, इन तीन चक्रोंमें अवर्गके द्वादश भेद हैं सो चक्रमें लिखा है समझ लीजिये ॥ १४ ॥

चतुर्द्दशश्लोकोक्तं आलिङ्गितादीनां चक्रम् ।

अ १	आ २	क २	च ३	ट ४	त ५	प ६	य ७	श ८
इ ३	ई ४	ख ३	छ ४	ठ ५	थ ६	फ ७	र ८	ष ९
उ ५	ऊ ६	ग ४	ज ५	ड ६	द ७	ब ८	ल ९	स १०
ए ७	ऐ ८	घ ५	झ ६	ढ ७	ध ८	भ ९	व १०	ह ११
ओ ९	औ १०	ङ ६	ञ ७	ण ८	न ९	म १०	०	०
अं ११	अः १२	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुणाकारमाह ।

संयुक्ते तद्द्विगुणं वेदगुणं स्यादसंयुक्ते ।
गजनिघ्नंचाभिहितेऽनभिहितप्रश्ने विवस्वघ्नम् ॥ १५ ॥

संयुक्त प्रश्न होनेसे पिण्डको २ से गुणन करे, असंयुक्त होने पिण्डको ४ से गुणन करे, अभिहित प्रश्नमें पिण्डको ८ से गुणन करे, अनभिहित प्रश्नमें पिण्डको १२ से गुणा करे ॥ १५ ॥

अभिघाते तिथिनिघ्नं तदनभिघाते च मेघघ्नम् ।
भूकररामगुणं स्यात्प्रश्नेऽथालिङ्गिताद्दिषु क्रमतः ॥ १६ ॥

आभिघात प्रश्नमें पिण्डको पञ्चदशसे गुणा करै, अनाभिघातमें पिण्डको सप्तदशसे गुणा करै, आलिङ्गित प्रश्नमें पिण्डको एकसे गुणा करै, अभिधूमित प्रश्नमें पिण्डको द्विगुण करे और दग्ध प्रश्न होय पिण्डको त्रिगुण करै ॥ १६ ॥

संयुक्त	असंयुक्त		अनभिहित	अभिघात	अनभिघात	आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध	प्रश्नाः
२	४	८	१२	१५	१७	१	२	३	गुणाङ्काः

संयुक्ताद्या प्रश्नवर्णद्विकोत्था संज्ञा ज्ञेयालिङ्गिताद्या स्वरश्चेत् । तत्पिण्डं तत्प्रोक्तचक्रैर्गुणेन स्वेनाभ्यस्तं तेन सर्वं विदध्यात् ॥ १७ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिके दो वर्णसे संयुक्तादि छः संज्ञा होती है और मात्रा आदिमें होनेसे आलिंगितादि तीन संज्ञा होती है, जिस संज्ञाका प्रश्न होय उस संज्ञाके चक्रसे पिण्ड उत्पादन करै फेर अपने गुणसे पिण्डको गुणा करै, गुणक गुणित पिण्डसे वक्ष्यमाण भूतादि त्रिकाल ज्ञान कहै, सर्व शब्द करके पिण्डको श्रेष्ठ कहा है ॥ १७ ॥

अथ भूतादिकालज्ञानमाह ।

आलिङ्गिते तत्कुयुतं कुहीनं दग्धेऽभिधूम्रे गुण-भक्तशेषे । रूपे ह्यतीतं द्विमितेऽस्ति शून्यं भाव्यं वदे-त्कुधमनष्टमत्र ॥ १८ ॥

संयुक्तादि नव पक्षोंके बीचमें प्रश्नश्रेणीके आदि वर्णमें आलिङ्गित मात्रा होय तो गुणक गुणित पिण्डमें एक युक्त करै, और दग्ध मात्रा होय ता एक हीन करै, अभिधूम्र मात्रा होय तो यथास्थित राखै, और विशेष कहते हैं। प्रश्नश्रेणीके आदिमें दग्धवर्ण अभिधूम्र स्वर होय तो एक हीन करै । तदुक्तम् । "दग्धाक्षरेऽभिधूम्रश्चेत्तद्धानि स्मृता बुधैः ।" फिर उस पिण्डमें ३ का भाग लेना एक शेष होय तो भूतकालका प्रश्न कहना, दो शेष रहे तो वर्त्तमान कालका प्रश्न कहना, शून्य शेष रहे तो भविष्य कालका प्रश्न कहना । अब बालबोधार्थ उदाहरण देते हैं, किसी पृच्छकने प्रश्न किया चंपक ऐसा उच्चारण किया तो संयुक्त प्रश्न हुआ, सूक्ष्म चक्रसे पिण्ड बनाया, यथा चक्रमें देख लीजिये। वर्णांक योग २० हुआ स्वराङ्क योग २२ हुआ, दोनोंका योग ४२ हुआ, गुणक दोसे गुणा किया तो ८४ स्फुट पिण्ड हुआ, यहां प्रश्नश्रेणीकी आदिमें दग्ध मात्रा है इसलिये एक शोधन किया तो ८३ स्फुट पिण्ड हुआ इसमें तीनका भाग लेनेसे लब्ध २७ प्राप्त हुआ शेष २ रहे तो वर्त्तमान कालका प्रश्न हुआ, इसी प्रकार सर्वत्र जानना । यहां तीन का भाग देनेसे जो लब्ध होय उसको नष्ट नहीं करना वक्ष्यमाण कार्यसिद्धि होवेगी ॥ १८ ॥

चं	प	क	वर्णाः
६	९	५	वर्णाङ्काः
१४	४	४	मात्राङ्काः

अथ मात्रादिद्वारातीतादिज्ञानं मूकप्रश्ने
कश्चिद्विशेषं चाह ।

दग्धेऽतीतं लिङ्गिते वर्त्तमानं भाव्यं धूम्रेऽथो ह्यतीते चतुष्पात् । ज्ञेयो नीचैरुत्तरैर्द्व्यङ्घ्रिजातिर्दग्धाज्वर्णैः पादयुक्पद्भजाद्यः ॥ १९ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें दग्धस्वर होय तो भूतकालका प्रश्न कहना आलिंगित स्वर होय तो वर्त्तमानकालका प्रश्न कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो भविष्यकालका प्रश्न कहना, और विशेष कहते हैं। अतीत कालका प्रश्न होय और स्वरवर्ण अधर होय तो चतुष्पदका प्रश्न कहै और उत्तर स्वरवर्ण होय तो द्विपद प्रश्न कहना, और दग्ध स्वर होय तो अपदका प्रश्न कहना, दग्ध वर्ण होय तो बहुपाद प्रश्न कहना ॥ १९ ॥

विद्यते शुभमथोत्तरवर्णैश्चाधरैरशमथोर्णजापिण्डम् ।
प्रश्नवर्णनिहतं स्वरयुक्तं द्व्याहतं भवति शस्तमशस्तम् ॥ २० ॥

वर्त्तमानकालका प्रश्न होय और श्रेणीकी आदिमें उत्तर स्वरवर्ण होय तो शुभ वर्त्तमानमें कहना, और अधर स्वरवर्ण होय तो अशुभ कहना। अब पिण्डद्वारा कहते हैं, वर्त्तमानकालमें वर्णपिण्ड २० को प्रश्न वर्ण तीनसे गुणा किया तो ६० हुआ, स्वराङ्क २२ योग किया तो ८२ हुआ, इसमें दोका भाग दिया तो शेष ० शून्य रहा इसवास्ते अशुभ प्रश्न कहना, एक शेष रहनेसे श्रेष्ठ प्रश्न कहना॥२०॥

भविष्यप्रश्ने विशेषमाह ।

उच्चोत्तराद्यैः क्रमतो भविष्ये राज्यं शुभं हानिरुजे मृतिश्च । पिण्डं शराप्तं क्रमतः फलं स्याद्वेददथो पञ्चविधोऽस्ति मृत्युः ॥ २१ ॥

प्रश्नश्रेणीकी आदिमें स्वरवर्ण उत्तरोत्तर होय तो राज्यसम्बन्धी प्रश्न कहना, उत्तर स्वरवर्ण होय तो सामान्य शुभवार्त्ताका प्रश्न कहना, अधर स्वरवर्ण होय तो हानि कहना, अधराधर स्वरवर्ण होय तो रोग प्रश्न कहना, दग्ध स्वरवर्ण होय तो मृत्युका प्रश्न कहना। अब पिण्ड द्वारा कहते हैं। पूर्वोक्त पिण्ड ८२ में पांचका भाग देनेसे जो शेष बचे उसका फल पूर्वोक्त क्रमसे जान लेना,

और पांच शेष बचनेसे मृत्युका प्रश्न होता है, वह मृत्यु पांच प्रकारका कहा है ॥ २१ ॥

अपमृत्युरभिहिते स्यादनभिहिताख्ये विदेशे च ।
अभिघाते रणभूमावधराधरसंयुतौ च रुजा ॥ २२ ॥

मृत्यु प्रश्न अभिहित संज्ञक होय तो अपमृत्यु कह देना, अनभिहित संज्ञक प्रश्न होय तो विदेशमें मृत्यु कह देना, अभिघात अनभिघात संज्ञक प्रश्न होय तो संग्राममें मृत्यु कह देना और अधराधर स्वरवर्णके योगसे रोग करके मृत्यु कह देना चाहिये ॥ २२ ॥

यद्युत्तरोत्तराढ्याश्चोत्तरवर्णा भवेन्मृत्युः ।
दीर्घे काले जरया विगलितदेहस्य पुरुषस्य ॥ २३ ॥

प्रश्नश्रेणीमें उत्तरोत्तर स्वरयुक्त उत्तर वर्ण होय तो जन्मसे किंवा प्रश्नकालसे उस पुरुषका देहका जरावस्थामें दीर्घकालमें मृत्यु कहना चाहिये ॥ २३ ॥

पिण्डमर्णभवमर्णमितिघ्नं सैद्वजङ्क्युतमाक्षिहतं स्यात् ।
पञ्चहृच्च जरयारुजयास्त्राद्यैर्विदेश इह वा अपमृत्युः ॥ २४ ॥

अब वक्ष्यमाण समस्त उदाहरण नालिकेरके ऊपर देवेंगे, ग्रन्थकारने लकारमें दीर्घ ईकार मानकरके पिण्ड बनाया है, नालीकेर ऐसा उच्चारण करनेसे अनभिघात संज्ञक प्रश्न हुआ अनभिघात चक्रसे पिण्ड ४१ हुआ, अपने गुणक १७ से गुणा किया तो ६९७ हुआ, यहां प्रश्नश्रेणीके आदिमें दग्धवर्ण अभिधूम्र स्वरयुक्त है, इसवास्ते एक हीन किया तो ६९६ स्फुट पिण्ड हुआ सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है देख लेना । अब क्रिया लिखते हैं । वर्णपिण्ड ३२ को वर्ण प्रमाण ४ से गुणा किया तो १२८ हुआ, एकसहित जो मात्राङ्क दश युक्त किया तो १३८ हुआ इसको द्विगुण किया तो २७६ हुए, इसमें पांचका भाग दिया तो शेष १ बचा तो वृद्धावस्थामें मृत्यु

कहना चाहिये । दो बचे तो रोगसे, तीन बचे तो शस्त्रसे, चार बचे तो विदेशमें, शून्य रहे तो अपमृत्यु कहना चाहिये ॥ २४ ॥

ना	ली	के	र	प्रश्नवर्णाः
ना	ली	के	०	उत्तरवर्णाः
०	०	०	र	अधरवर्णाः
१०	१०	३	९	वर्णाङ्काः
२	४	२	१	मात्राङ्काः
वर्णाङ्कयोगः				३२
मात्राङ्कयोगः				९

मृत्युः कदा भविष्यति तज्ज्ञानमाह ।

उत्तराधरमितार्णजपिण्डं भिन्नमेव विरचय्य पृथगास्थम् ।
आधरं त्रिगुणितं शरभक्तं चौत्तरं शरगुणं त्रिहृतं स्यात् २५

प्रश्नश्रेणीके उत्तराधर वर्णजन्य पिण्डको पृथक् पृथक् स्थानमें स्थापन करे । यथा उत्तर वर्ण पिण्ड २३ अधर वर्ण पिण्ड ९ अब आगे उदाहरणसे ही क्रिया करते हैं, अधर पिण्ड ९ को त्रिगुणित किया २७ हुआ पांचसे भाग लिया लब्ध ५ हुआ, उत्तरपिण्ड २३ को पांच गुणा किया तो ११५ हुआ तीनसे भाग लिया लब्ध ३८ हुआ उत्तर राशि २३।३८ हुई अधर राशि ९।५ हुई ॥ २५ ॥

आधरं ह्यथ हुताशनभक्तं मूलराशिरिह तस्य भवेत्सः ।
औत्तरं शरगुणं स च राशिस्तस्य नन्दसहितश्च विधेयः॥ २६॥

प्रश्नश्रेणीकी आदिमें अधर स्वर होय तो उत्तर उत्तरका योग करै, अधर अधरका योग करै, श्रेणीकी आदिमें उत्तर स्वर होय ता उत्तर उत्तरका अन्तर करै अधर अधरका अन्तर करै, फेर अधर राशिद्वय पिण्डमें तीनका भाग ले लब्ध जो आवे सो अधरकी मूल राशि होती है, उत्तर राशिद्वय पिण्डको पांच गुणा करै फेर नवयुक्त करै वह उत्तरकी मूलराशि होती है । इस उदाहरणमें प्रश्नश्रेणीकी

आदिमें अधर स्वरका योग है,' इसवास्ते उत्तर राशि २३ । ३८ दोनोंका योग किया तो ६१ हुए अधरराशि ९ । ५ दोनोंका योगसे १४ हुआ अधर राशि १४ में तीनका भाग लिया तो लब्ध ४ अधरकी मूलराशि हुई, उत्तर राशि ६१ को पांच गुणा किया तो ३०५ हुआ फेर ९ युक्त किया तो ३१४ उत्तरकी मूलराशि हुई॥२६॥

प्रश्ने चेदधरस्वरस्तदनयोर्योगं यदा चोत्तरो विश्लेषं च विधाय तच्छतकयोर्विश्लेषमायुर्भवेत् । ऊर्ध्वं चेच्छततः शताप्तमवशेषं स्यात्तथार्णाहतं भाप्तं षड्गुणितं नरस्य जनुषः स्युर्यातवर्षाश्च ते ॥ २७॥

फेर चकारके ग्रहणसे और व्याख्या लिखते हैं। श्रेणीके आदिमें अधर स्वर होय तो दोनों मूलराशियोंका योग करै, उत्तर स्वर होय तो अन्तर करै, इस उदाहरणमें अधर स्वरका योग है इसवास्ते दोनों ३१४ । ४ मूलराशियोंका योग किया तो ३१८ हुआ इसका शताङ्कसे अन्तर किया तो २१८ आयुर्दाय हुआ यह अंक शताधिक होय तो शतसे भाग देना, शेष आयुर्दाय होता है । आयुर्वर्षोंको १८ प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो ७२ हुए इसमें २७ का भाग लिया तो लब्ध २ हुए लब्ध २ को ६ गुणा किया तो १२ जन्मकालसे गत वर्ष हुए, गत वर्षोंको प्रश्न संवत्सरमें हीन करनेसे जन्मकालका संवत् आ जायगा ॥ २७॥

प्रश्नार्णघ्नाः सूर्यतष्टाश्च मासास्ते वर्णघ्नाः खाग्नितष्टाश्च तिथ्यः । मात्राङ्कघ्नाः सप्ततष्टाः कुजात् स्युस्ते पिण्डघ्नाः षष्टितष्टाष्टघट्यः ॥ २८ ॥

पुनः चकारके ग्रहणसे आयुर्वर्ष १८ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो ७२ हुए द्वादशका भाग लिया तो शेष शून्य बचा तो मासाभाव हुआ शून्यको द्वादश मास कल्पना किया वक्ष्यमाण कार्यसिद्धि

वास्ते मास द्वादशको प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया तो ४८ हुए ३० से भाग लिया तो शेष १८ तिथि प्राप्त हुई तिथि १८ को मात्राङ्क ९ से गुणन किया तो १६२ हुआ, ७ से भाग लिया तो शेष एक बचा तो भौमवार निर्याणका हुआ, वार एकको पिण्ड ४१ से गुणन किया वा ४१ हुआ ६० से तष्ट किया तो ४१ घटिका प्राप्त हुई, प्रश्न-समयसे वर्ष १८ मास ० कृष्णपक्ष तृतीया भौमवारके दिन ४१ घटी गये पर मृत्यु होगा, इसी प्रकार सर्वत्र समझना ॥ २८ ॥

शेषायुषि सुखं वा दुःखं वेति ज्ञानमाह ।

प्रश्नाणघ्नं प्रश्नवर्णोत्थपिण्डं मात्राङ्काढ्यं द्व्याप्तिशेषे सुखान्ये । आलिङ्गाद्यैश्चोत्तराद्यैः क्रमेण द्रव्येनाढ्या निर्द्धनाः शून्ययुक्ताः ॥ २९ ॥

वर्णपिण्ड ३२ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणन किया तो १२८ हुआ मात्राङ्क ९ योग किया तो १३७ हुआ, दोका भाग लिया तो शेष एक बचा तो सुखसे कालक्षेप होयगा, शून्य शेष बचनेसे दुःखसे कालक्षेप होवेगा । प्रकारान्तरसे कहतेहैं । प्रश्नश्रेणीके आदिमें आलि-ङ्गित स्वर होय तो द्रव्ययुक्त कालक्षप होवेगा, अभिधूम्र स्वर होय तो निर्द्धनतासे कालक्षेप होवेगा, दग्धस्वर होय तो कष्टसे काल व्यतीत होयगा, श्रेणीकी आदिमें उत्तर वर्ण होय तो द्रव्ययुक्त, अधरवर्ण होय तो निर्द्धनता, दग्धवर्ण होय तो कष्टसे काल व्यतीत होवेगा२९॥

द्विघ्नः प्रश्नाद्यवर्गाङ्कः प्रश्नवर्णाङ्कसंयुतः ।
सप्तहृद्विषमे शेषे धनाढ्या निर्धनाः समे ॥ ३० ॥

प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णके वर्गाङ्क ६ को द्विगुण करनेसे १२ भये वर्णपिण्ड ३२ योग करनेसे ४४ भये पुनः ७ से भाग ले शेष विषम बचे तो द्रव्ययुक्त सम शेष बचे तो निर्द्धनतासे कालक्षेप कहना । यहां शेष दो सम बचे तो निर्द्धनतासे काल व्यतीत होगा ॥ ३० ॥

अथाखिलप्रश्नेषु साधारणेषु शुभाशुभज्ञानमाह ।

उत्तरवर्णस्वरयोर्योगः शस्तोऽन्यथाधरयोः ।
मिश्रे च मिश्रमुक्तं फलं वर्णानां च योगेन ॥ ३१ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें उत्तर स्वरवण होय तो श्रेष्ठ प्रश्न कह देना, अधर स्वरवर्ण होय तो अशुभ प्रश्न कह देना, और उत्तराधर मिलित स्वरवर्ण होय तो मिश्र प्रश्न कह देना, इस उदाहरणमें दग्धवर्ण अधर स्वर है इसलिये अशुभ कहना ॥ ३१ ॥

अथ लाभप्रश्नमाह ।

लाभप्रश्ने चोत्तरैर्लाभ उक्तो हानिस्त्वन्यैर्दग्धवर्णा
च्युतिश्चेत् । हानिर्लाभे युद्धकाले मृतिः स्यान्निःसान्दिग्धं
जल्पितं शंभुदेवैः ॥ ३२ ॥

प्रश्नश्रेणीमें उत्तराधिक स्वरवर्ण होय तो लाभ कह देना, अधराधिक स्वरवर्ण होय तो हानि कह देना, दग्धाधिक स्वरवर्ण होय और लाभका प्रश्न होय तो हानि कह देना, और युद्धके प्रश्नमें दग्धाधिक स्वरवर्ण होय तो निःसन्देह मृत्यु कह देना, श्रीमहादेवजीने कहा है ॥ ३२ ॥

युद्धप्रश्ने विशेषमाह ।

दीर्घमात्रा आदिमध्यान्तसंख्या जेता दग्धालिङ्गितैर्नो
जयः स्यात् । सूक्ष्मैः पिण्डं द्व्याप्तमिन्दौ जयश्रीः शून्ये
हानिर्निश्चितं युद्धकाले ॥ ३३ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदि मध्यान्त वर्णमें दीर्घमात्रा होय तो प्रश्नकर्ताका जय कहना, और दग्धालिंगित स्वर होय तो पराजय कहना अब पिण्डद्वारा कहते हैं। युद्धप्रश्नमें सूक्ष्माङ्क चक्रसे पिण्ड बनाना, इतर चक्रोंसे नहीं बनाना, फेर पिण्डमें दोसे भाग लेना, जो शेष १

बचे तो जय होय, लक्ष्मी प्राप्त होय, शून्य शेष बचे तो युद्धकालमें निश्चय हानि होय ॥ ३२ ॥

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां
संयुक्तादिप्रकरणं द्वितीयम् ।

मूकादिप्रकरणम् ।

अथास्य मनसि किमिति प्रश्ने, मम मनसि किमिति प्रश्ने च यथार्थज्ञानार्थं जीवादिप्रकरणमवतारयति ।

तत्राखिलजगतस्त्रियोनिकत्वादादौ सामान्यं त्रियोनिकज्ञानमाह ।

जीवं मूलं धातुरुक्तस्तदर्णैस्तन्मात्राद्यैः प्रश्नवर्णाद्य-
संस्थैः । जीवं मूलं धातुरालिङ्गिताद्यैः प्रश्नेऽनल्पा यत्स्व-
रा सैव योनिः ॥ १ ॥

प्रश्नश्रेणिके आदि वर्णमें पूर्वोक्त जीवपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होय तो जीवयोनि कहना, और मूलपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होय तो मूलयोनि कहना, धातुपक्ष संज्ञक स्वरवर्ण होय तो धातु योनि कह देना । प्रकारान्तर कहते हैं । आलिङ्गित स्वर जीव पक्ष संज्ञक है अभिधूम्र स्वर मूलपक्ष संज्ञक है, दग्धस्वर धातु पक्षसंज्ञक है, प्रश्नश्रेणीमें जिस पक्षके स्वर बहुत होय वह पक्ष कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ मुष्टिलूकाप्रश्न विशेषमाह ।

मुष्टिप्रश्न जीववर्णेषु मूलं मूले धातुर्जीवमुक्तं च धातौ ।
लूकाप्रश्ने धातुरुक्तं च जीवे धातौ मूलं जीवमुक्तं तु मूले ॥ २ ॥

मुष्टिप्रश्नके विषयमें पूर्वोक्त जीवपक्षका वर्णमात्रामें मूल योनि कहना, और मूलपक्षका वर्णमात्रामें धातुयोनि कहना, और धातुपक्षका वर्णमात्रामें जीवयोनि कहना, और लूकाप्रश्नके विषयमें

जीवपक्षका वर्णमात्रामें धातुयोनि कहना, और धातुपक्षका वर्णमात्रामें मूलयोनि कहना, और मूलपक्षका वर्णमात्रामें जीवयोनि कहना चाहिये । चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ २ ॥

अथ प्रकारान्तरेण त्रियोनिज्ञानमाह ।

अनष्टं स्थापितं पूर्वं यत्तद्वर्णप्रमाहतम् ।
ज्ञेया शेषाङ्कतो योनिर्वक्ष्यमाणादितो बुधैः ॥ ३ ॥

पूर्वं भूतादि त्रिकाल ज्ञानके विषयमें अष्टादश श्लोकके बीचमें जो अनष्ट लब्ध कहा है, उसको प्रश्नवर्णसे गुणा करै, तीनका भाग दे शेषाङ्कसे वक्ष्यमाण रीति करके पण्डितोंको जीवादि योनि जान लेना चाहिये ॥ ३ ॥

१।२ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

मूकप्रश्ने	मुष्टिप्रश्ने	लूकाप्रश्ने
जीवाक्षराणि	जीवाक्षराणि	जीवाक्षराणि
क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ओ अः ए	त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं	ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ
धात्वक्षराणि	धात्वक्षराणि	धात्वक्षराणि
त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं	ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ	क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ए ओ अः
मूलाक्षराणि	मूलाक्षराणि	मूलाक्षराणि
ङ ञ ण न म ल व स ई ऐ औ	क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह अ आ इ ए ओ अः	त थ द ध प फ ब भ र ष उ ऊ अं

मूकप्रश्नात्सर्वमेवात्र वेद्यं वेलामानालिङ्गिते लिङ्गितस्थे । जीवं मूलं धातुरुक्तोऽभिधूम्रे मूलं धातुर्जीवसंज्ञश्च दग्धे ॥ ४ ॥

मूकप्रश्नकी तरह मुष्टिलूका प्रश्नमें भी पूर्वोक्त रीति करके जीव १ मूल २ धातु ३ योनि कहै, आलिंगित वेलामें अभिधूम्र भुक्ति होय तो एकादि शेष करके मूल १ धातु २ जीव ३ योनि कहै ॥ ४ ॥

धातुर्जीवं मूलमेवाभिधूम्रे चेदालिङ्गं धातुजीवे च मूले ।
स्वस्मिन् धूम्रे जीवमूले च धातुर्दग्धे मूलं धातुजीवे क्रमेण ॥ ५ ॥

आलिङ्गित वेलामें दग्धभुक्ति होय तो एकादि शेष करके धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहै, अभिधूम्र वेलामें आलिङ्गित भुक्ति होय तो एकादि शेष करके धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहै, अभिधूम्र वेलामें अभिधूम्र भुक्ति होय तो एकादि शेष करके जीव १ मूल २ धातु ३ योनि कहै, अभिधूम्र वेलामें दग्ध भुक्ति होय तो एकादि शेष करके मूल १ धातु २ जीव ३ योनि कहै ॥ ५ ॥

चेदालिङ्गं दग्धवेलाविभागे मूलं धातुर्जीवमेवाभिधूम्रे ।
धातुर्जीवं मूलकं चाथ दग्धे जीवं मूलं धातुरुक्तोऽत्र मूके ॥ ६ ॥

दग्धवेलामें आलिङ्गित भुक्ति होय तो मूल १ धातु २ जीव ३ योनि क्रमसे कहै, दग्धवेलामें अभिधूम्र भुक्ति होय धातु १ जीव २ मूल ३ योनि कहै, और दग्धवेलामें दग्धभुक्ति होय तो एकादि शेष करके जीव १ मूल २ धातु ३ योनि कहै ॥ ६ ॥

प्रोक्तवन्मूकतो ज्ञात्वा मुष्टिलूकासमुद्भवम् ।
प्रश्नं विद्वान्वदेत्सम्यग्विमृश्य स्वमनीषया ॥ ७ ॥

मूकप्रश्नकी रीतिसे पूर्वोक्त प्रकारको सम्यक् जान करके पण्डितोंको स्वबुद्ध्यनुसार मुष्टिलूका प्रश्नमेंभी कहना चाहिये ॥ ७ ॥

४।५।६ श्लोकोक्तं मूकप्रश्नविचारचक्रम् ।

आ०वे०आ०मु०	आ०वे०अ०मु०	आ०वे०द०मु०	वेला
जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	योनिः
अ०वे०अ०मु०	अ०वे०द०मु०	अ०वे०आ०मु०	वेला
जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	योनि
द०वे०द०मु०	द०वे०आ०मु०	द०वे०आ०मु०	वेला
जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	योनिः

७ श्लोकोक्तं मुष्टौ विचार चक्रम् ।

आ०वे०आ०मु०	आ० वे०अ०मु०	आ०वे०द०मु०	वेला
मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	योनिः
अ० वे० अ० मु	अ० वे०द०मु०	अ० वे०आ०मु०	वेला
मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	योनिः
द० वे० द० मु०	द० वे० आ० मु०	द० वे० अ०मु०	वेला
मू धा जी १ २ ३	धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	योनिः

आ०वे०आ०मु०	आ०वे०अ०मु०	आ०वे०द०मु०	वेलाः
धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	योनि
अ०वे०अ०मु०	अ०वे०द० मु०	अ०वे०आ०मु०	वेला
धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	योनि
द०वे०द०मु०	द०वे०आ०मु०	द०वे०अ०म०	वेला
धा जी मू १ २ ३	जी मू धा १ २ ३	मू धा जी १ २ ३	योनि

अथ प्रकारान्तरैस्त्रियोनिज्ञानमाह ।

मूकप्रश्ने पृच्छकस्योर्द्ध्वदृक् चेज्जीवं मूलं भूमिदृग्धातु-
रन्यः ॥ मिश्रे मिश्रं चाथ बाह्वास्यकानां स्पर्श जीवं
चोदरं हृत्कटी च ॥ ८ ॥

मूक प्रश्न करनेके समय पृच्छककी ऊर्द्ध्वदृष्टि होय तो जीव योनि कहना, भूमिदृक् होय तो मूलयोनि कहना, तिर्यक् दृष्टि होय तो धातुयोनि कहना, मिश्रदृक् होय तो मिश्रयोनि कहना । मूकप्रश्न करनेके समय पृच्छक बाहु मुख शिरका स्पर्श करे तो जीवाचिन्ता कहना ॥ ८ ॥

स्पर्शे धातुर्बस्तिगुह्योरुपद्भिमूलं चोर्ध्वं सन्मुखाधः
स्थितैः स्यात् । आसन्नस्थे तोय अन्ने हुताशे भाग्व-
ज्ज्ञेयं सुष्टिलूकागतं च ॥ ९ ॥

चकार करके पूर्व श्लोकसे उदर हृदय कटि इनका स्पर्श करे तो धातु चिन्ता कहना, बस्ति गुह्य जंघा चरण इनका स्पर्श करे तो

मूलचिन्ता कहना, पृच्छक ऊर्ध्व स्थित होकर प्रश्न करे तो जीव-चिन्ता कहना, सन्मुख होकर प्रश्न करे तो मूलचिन्ता कहना, अधःस्थित होकर प्रश्न करे तो धातुचिन्ता कहना, प्रश्नके समय जल समीपस्थ होय तो जीवचिन्ता कहना, अन्न समीपस्थ होय तो मूलचिन्ता कहै, अग्नि समीपस्थ होय तो धातुचिन्ता कहै । पूर्व प्रकारकी तरह मुष्टि लूका प्रश्नमें भी कहना चाहिये, इन्होंका चक्र प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ९ ॥

अथ प्रकारान्तरेणाह ।

पूर्वापराग्नेयस्थे धातुर्याम्येशसौम्योर्ध्वे ।
जीवं स्थिते च दूते मूलं वाताम्सुराधःस्थे ॥ १० ॥

पृच्छक पूर्व पश्चिम अग्निदिक् स्थित होकर प्रश्न करे तो धातु चिन्ता कहै, दक्षिण ईशान उत्तर स्थित होकर किंवा ऊर्ध्व स्थित होकर प्रश्न करे तो जीवचिन्ता कहै, वायव्य नैर्ऋति अधस्थित होकर प्रश्न करे तो मूल चिन्ता कहै, यह पूर्व प्रकारकी रीतिसे मुष्टि-लूका प्रश्नमें कहै ॥ १० ॥

अथ मुष्टौ वर्णज्ञानमाह ।

द्व्यालिङ्गितैकधूम्रे मुष्टौ श्वेतं भवेद्वस्तु ।
धूम्रद्वयदग्धं च पीतं दग्धद्वयालिङ्गे ॥ ११ ॥

तीन श्लोक करके मुष्टिका वर्णज्ञान कहते हैं । प्रश्नश्रेणीमें पूर्वके दो स्वर आलिङ्गित होय तृतीय स्वर धूम्र होय तो मुष्टिमें श्वेत वर्णकी वस्तु कहना, पूर्वके दो स्वर अभिधूम्र होंय तृतीय दग्धस्वर होय तो पीतवर्णकी वस्तु कह देना, पूर्वके दो स्वर दग्ध और तृतीय आलिंगित होय तो रक्त श्यामवर्णकी वस्तु कहना ॥ ११ ॥

मूकप्रश्ने ८।९।१० श्लोकोक्तं चक्रम् ।

जीवसंज्ञा	मूलसंज्ञा	धातुसंज्ञा	मिश्रसंज्ञा
ऊर्ध्वदृक्	भूमिदृक्	मध्यदृक्	मिश्रदृक्
बाहुमुख-शिरःस्पर्शी	वस्तुगुह्यजंघा-पादस्पर्शी	उदरहृत्कटि-स्पर्शी	सर्वस्पर्शी
ऊर्ध्वस्थित्या	सन्मुखास्थित्या	अधःस्थित्या	मिश्रस्थित्या
तोये आसन्ने	अन्ने आसन्ने	हुताशे आसन्ने	मिश्रे आसन्ने
याम्येशसौ-म्योर्ध्वस्थेच	वायव्यनैर्ऋ-त्यधःस्थे	पूर्वापराग्रे यस्थे	दिशायाम्

रक्तश्यामं दग्धालिङ्गितधूम्रेऽसिते श्वेतम् ।
आलिङ्गितदग्धधूम्रे कृष्णं हरितं त्रिहस्ताद्ये ॥ १२ ॥

प्रश्नश्रेणीमें प्रथम स्वर दग्ध होय द्वितीय आलिंगित स्वर और तृतीय अभिधूम्र स्वर होय तो श्याम श्वेतवर्णकी वस्तु कहना, प्रथम आलिंगित स्वर होय द्वितीय दग्धस्वर होय तृतीय अभिधूम्र स्वर होय तो कृष्णवर्णकी वस्तु कहना, प्रथम दग्धस्वर होय द्वितीय अभिधूम्र स्वर होय तृतीय आलिंगित स्वर होय तो हरितवर्णकी वस्तु कहना॥

मुष्टिप्रश्ने ८।९।१० श्लोकोक्तं चक्रम् ।

जीव	मूल	धातु
मध्यदृक्	ऊर्ध्वदृक्	भूमिदृक्
उदरहृत्कटि-स्पर्शी	बाहुमुखशिरः-स्पर्शी	बस्तिगुदाजंघ-पादस्पर्शी
अधःस्थित्या	ऊर्ध्वस्थित्या	सन्मुखस्थित्या
हुताशे आसन्ने	तोये आसन्ने	अन्ने आसन्ने
पूर्वापराग्रे-यस्थे	याम्येशसौम्यो-र्ध्वस्थे	वायव्यनैर्ऋत्य-धःस्थे

मूकाप्रश्ने ८।९।१० श्लोकोक्तं चक्रम् ।

जीव	मूल	धातु
भूमिदृक्	मध्यदृक्	ऊर्ध्वदृक्
वस्तिगुदाचरण-जंघास्पर्शे	उदरहृत्कटि-स्पर्शे	बाहुमुखशिरः-स्पर्शे
सन्मुखास्थित्या	अधःस्थित्या	ऊर्ध्वास्थित्या
अन्ने आसन्ने	हुताशे आसन्ने	तोये आसन्ने
वायव्यनैर्ऋ-त्यधःस्थे	पूर्वापराग्ने-यस्थे	याम्येशसौम्यो-र्ध्वस्थे च

द्व्यादित्रितये चित्रं शृङ्गाभं लिङ्गितत्रितये ।
दग्धत्रितये नीलं धूम्रत्रितये सुवर्णाभम् ॥ १३ ॥

प्रश्नश्रेणीमें प्रथम अभिधूम्र स्वर होय द्वितीय आलिंगित स्वर होय तृतीय दग्धस्वर होय तो विचित्र वर्णकी वस्तु कहना, तीनों स्वर आलिंगित होंय तो शृंगवर्ण वस्तु कहना, तीनों दग्धस्वर होंय तो नीलवर्णकी वस्तु कहना, तीनों अभिधूम्र स्वर होय तो सुवर्णका वर्ण कहना । इसका चक्र प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये । उदाहरण देते हैं, गुलाब इस श्रेणीमें प्रथम स्वर दग्ध द्वितीय स्वर अभिधूम्र तृतीय स्वर आलिंगित है तो हरितवर्णकी वस्तु कहना, इस प्रकार अन्यत्र भी समझ लीजिये ॥ १३ ॥

११।१२।१३ श्लोकोक्तं मुष्टौ वर्णज्ञानचक्रम् ।

श्वेत	पीत	रक्तश्याम	श्यामश्वेत	कृष्ण	हरित	विचित्र	शृंगाभ	नील	सुवर्णाभ
आ १	धू १	द १	द १	आ १	द १	अ १	आ १	द१	धू १
आ २	धू २	द २	आ २	द २	धू २	आ २	आ २	द२	धू २
धू ३	द ३	आ ३	धू ३	धू ३	आ ३	द ३	आ ३	द३	धू ३

अथ चंपकेत्यादिपदैः सर्वदा एक एव प्रश्नः स्यादि-
त्याशंक्य पूर्वोक्तसंयुक्तादिकालवशात्सुनिश्चितार्थ-
मखिलप्रधानं योनिज्ञानं विवक्षुस्तत्र
नियममाह ।

अथ संयुक्तादीनां प्रोक्ते काले भवेत्पिण्डे ।
प्रोक्तैश्चक्रैर्जाते गुणकस्थाने क्रिया ह्येषा ॥ १४ ॥

अब विशेष कहते हैं, चंपक गुलाब नारिकेलादि रूढिशब्दों-करके सर्वकालमें एकही प्रश्न आता है, यह शङ्का मान करके पूर्वोक्त संयुक्तादि कालवश करके निश्चितार्थ प्रधान योन्यादि ज्ञान कहते हैं । पूर्वोक्त संयुक्तादि तीन चक्रोंसे जो पिण्ड उत्पन्न होय उस पिण्डमें गुणकके स्थानमें वक्ष्यमाण क्रिया करना चाहिये, पूर्वोक्त संयुक्ते तद्द्विगुणमित्यादि गुणक नहीं करना चाहिये ॥ १४ ॥

तत्र पूर्वसंयुक्तकाले तदाह ।

संयुक्तेऽक्षरपिण्डं नागहतं मात्रिकाङ्कयुतम् ।
भक्तं त्रिभिः क्रमात्स्याज्जीवं धातुस्तथा मूलम् ॥ १५ ॥

अब आगे उदाहरण करके ही क्रिया लिखते हैं । संयुक्तादि आठ-पक्षोंके बीचमें संवत् १९४८ शालिवाहन शके १८१३ माघमासे कृष्णे पक्षे प्रतिपदायां भृगुवारे तत्रेष्टं ८।१९ नालीकेर इति श्रेण्याम् अक्षरपिण्ड ३२ को ८ से गुणा किया तो २५६ हुआ मात्राङ्क ९ युक्त किया तो २६९ हुआ तीनसे भाग दिया तो शेष १ बचा तो जीवयोनि कहना ॥ १९ ॥

असंयुक्ते च तदाह ।

कालेऽसंयुक्ते च भवेदक्षरपिण्डं द्विधा निघ्नम् ।
प्रश्नार्णैर्मात्राङ्कैस्तद्योगे वह्निहृद्योनिः ॥ १६ ॥

असंयुक्तकालमें प्रश्न करे तो अक्षरपिण्डको दो जगह स्थापन करे, यथा वर्णपिण्ड ३२ को एक स्थानमें प्रश्नवर्ण ४ से गुणा किया जो १२८ हुआ, द्वितीय जगह मात्रिकाङ्क ९ से गुणन किया तो २८८ हुआ, दोनोंका योग ४१६ में तीनका भाग लिया तो शेष २ बचे धातुयोनि कहना ॥ १६ ॥

अभिहितकाले चाह ।

अभिहितवेलाप्रश्ने कार्यावधरोत्तरैः पृथग्राशी ।
दूतोच्चारितवर्णेष्वथ चेदाद्यर्णं उत्तरामात्रा ।
अधरायुगुत्तरं स्यादधरेऽनल्पे च संयुक्तम् ॥ १७ ॥

अभिहित कालमें प्रश्न होय तो प्रश्नवर्णके अधरोत्तर राशिको पृथक् पृथक् स्थापन करै, फेर प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णमें उत्तरा मात्रा होय तो अधर राशिका शोधन उत्तर राशिमें करै जो अधर राशि विशेष होय उत्तर राशि न्यून होय तो दोनोंका योग करै ॥ १७ ॥

आद्यर्ण चेदधरामात्रा कार्यस्तयोर्योगः ।
सैकः स्वराङ्कयुक्तो वह्निविभक्तः क्रमाद्योनिः ॥ १८ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदि वर्णमें अधरा मात्रा होय तो दोनों राशियोंका योग करै योगमें सैकता क्रिया वक्ष्यमाण रीतिसे करै, फेर स्वराङ्क युक्त करै तीनका भाग ले शेषाङ्कसे जीवादि योनि कहना चाहिये। उदाहरण अधरराशि ९ उत्तरराशि २३ इस उदाहरणमें प्रश्नश्रेणीके आदि वर्णमें अधरा मात्रा है इसवास्ते दोनों २३ । ९ राशियोंका योग किया तो ३२ हुआ। अब सैकताकी रीति लिखते हैं। तदुक्तं वृद्धैः "वियोगे विषमाङ्के चेत् समं योगे तदा कुयुक् । भूहीनमन्यथा कार्या सैकता सात्रकीर्त्तिता ॥" पूर्वोक्त अधरोत्तर राशियोंका वियोग विषमांक होय वा योग समांक होय तो एक युक्त करै, वियोग समांक होय वा योग विषमांक होय तो एक हीन करै, इस उदा-

हरणमें राशियोंका योग ३२ समांक हुआ इसलिये एक युक्त किया ३३ फेर स्वरांक ९ युक्त किया ४२ तीनका भाग दिया शेष शून्य बचा तो मूलयोनि हुआ ॥ १८ ॥

अनभिहिते चाह ।

चेदनभिहिते काले मात्रार्णोत्थे च तत्पिण्डे ।
प्रश्नार्णैर्मात्राङ्कैर्निघ्ने योगात्त्रिहृद्योनिः ॥ १९ ॥

जो अनभिहितकालमें प्रश्न होय तो मात्रापिण्ड ९ को प्रश्नवर्ण ४ से गुणा करै ३६ और वर्णपिण्ड ३२ को मात्रांक ९ से गुणा करै २८८ फेर दोनोंका योग ३२४ में तीनका भाग दे शेषांकसे जीवादि योनि जानना चाहिये, यहां शेष ३ वचे तो मूल योनि हुआ ॥ १९॥

अभिघातकाले तदाह ।

अभिघातकवेलायामधरोत्तरवर्णजे पिंडे ।
चतुराशीतिविशुद्धा मात्राङ्कास्तच्च तत्पिण्डम् ॥ २० ॥

जो अभिघातक वेलामें प्रश्न होय तो अधरोत्तर वर्णजन्य पिण्डको भिन्न भिन्न स्थापन करै और मात्रांकको चतुराशीतिमें शोधन करनेसे मात्रापिण्ड होता है, इस प्रकार पिण्ड तीन बनावै ॥ २० ॥

पिण्डान्येवं कुर्यादुत्तरवेला तदा कुयुक् योगः ।
द्विघ्नः स्वरपिंडाढ्यः स्फुटपिण्डं स्याद्यदाधरीवेला ॥ २१ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे पिण्डोत्पत्ति करै, फेर अभिघातक वेलामें जो औत्तरी वेला होय तो अधरोत्तर राशिका योग करै, योगमें एक और युक्त करै, फेर उसकों द्विगुण करै और स्वरपिण्ड युक्त करै तो स्फुटपिण्ड होता है ॥ २१ ॥

अधराङ्कोना भूपाश्चेदल्पाः स्युर्युता द्विघ्नाः ।
द्विघ्नोत्तरपिण्डाढ्या मात्राङ्काढ्यात्त्रिहृद्योनिः ॥ २२ ॥

जो अभिघातक वेलामें आधरी वेला होय तो अधर पिण्डको षोडशांकमें हीन करै, अधर पिण्ड विशेष होय तो षोडश युक्त करै, फेर उसको द्विगुण करै उत्तर पिण्डको द्विगुण करके युक्त करै, फेर मात्रापिंड युक्त करै उसमें तीनका भाग दे शेषांकसे जीवादि योनि कहै । उदाहरण । उत्तर पिंड २३ अधर पिंड ९ मात्रा पिंड ७९ औत्तरी वेलामें उत्तराधर राशिका योग ३२ में एक युक्त किया ३३ फेर द्विगुण किया ६६ स्वरपिंड ७९ योग किया १४१ तो स्फुट पिंड हुआ, इसमें तीनका भाग देना शेषांकसे जीवादि योनि जान लेना । यहा शेष तीन बचे तो मूलयोनि हुआ । आधरी वेलाका उदाहरण देते हैं । आगे प्रायः सरलता हेतु उदाहरण सरल संस्कृतहीसे लिखा है, "अधरांको ९ ना भूपा १६ जाता ७ द्विघ्ना १४ उत्तरपिंडेन २३ द्विगुणितेन ४६ युक्ता ६० मात्रांके ७९ युक्ता १३९ गुणो ३ हृताः शेषं ३ मूलयोनिर्ज्ञेया ॥" २२ ॥

आलिङ्गितवेलायामाह ।

आलिङ्गेऽजङ्काग्न्यर्णाङ्काब्धिहतिर्युता योनिः ॥ २३ ॥

आलिङ्गित वेलामें प्रश्न होय तो मात्रांक ९ त्रिगुणित २७ करै फेर वर्णांक ३२ को चतुर्गुणित १२८ करके युक्त करै १५५ युक्तांकमें तीनका भाग दे शेषांकसे जीवादि योनि कहै, यहां शेष २ बचे तो धातुयोनि हुआ ॥ २३ ॥

अभिधूमितकाले चाह ।

अभिधूमितवेलायां सितपक्षत्यादितास्तिथयः ।
आद्यर्णजातिथिहीना युक्ता वारप्रवर्णाङ्कैः ॥
वारयुताजङ्काढ्यास्तष्टारामैः स्मृता योनिः ॥ २४ ॥

अभिधूमित वेलामें प्रश्न होय तो शुक्लप्रतिपदासे वर्त्तमान तिथि पर्यन्त तिथि ग्रहण करै, इस उदाहरणमें पौषशुक्ल प्रतिपदासे माघ-

कृष्ण प्रतिपदा भृगुदिन पर्यन्त १६ तिथि हुई, वर्णांक ३२ को प्रश्न-वारांक ६ से गुणा करै १९२ शुक्लादि तिथि १६ युक्त २०८ करै, फेर प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णजन्य तिथि ३० हीन करै १७८ फेर प्रश्न-दिन ६ युक्त स्वरांक १९ युक्त करै १९३ उसमें तीनका भाग ले शेषांक-से जीवादि योनि कहै, यहां शेष१ बचा तो जीवयोनि हुआ ॥२४॥

दग्धे काले चाह।

दग्धेऽर्णवर्गमात्रापिंडैः सूक्ष्मैर्यदोत्तरानेहा।
सेष्वगवर्णाङ्कयुतिः पक्षे तिथ्योऽथ संयुक्ताः ॥ २५ ॥
अधरेऽर्णपिण्डहीनैः पञ्चाश्वैः संयुताश्च युताः।
अधरादिगे कुहीनाः सैकाः परगे गुणोद्धृता योनिः ॥ २६ ॥

जो दग्ध वेलामें प्रश्न करे तो सूक्ष्म चक्रसे वर्णपिंड वर्गपिंड मात्रापिंड उत्पन्न करै। संयुक्तादि आठ पक्षोंमें कोई पक्षका प्रश्न होय, और जो दग्ध वेलामें औत्तरी वेला होय तो वर्णपिंडमें ७५ युक्त करै उस अंकमें शुक्लादि तिथि युक्त करै, तिथियुक्त पिंडमें त्रिपिंडका योग हीन करै, फेर प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णमें अधरमात्रा होय तो एक हीन करै, उत्तर मात्रा होय तो एक युक्त करै उसमें तीनका भाग दे, शेषांकसे जीवादि योनि कहना चाहिये। और जो दग्धकालमें आधरी वेला होय तो वर्ण पिंड हीन तिथियुक्त जो ७९ उसमें त्रिपिंडका योग युक्त करे, फेर श्रेणीके आदिमें अधरमात्रा होय तो एक हीन करे, उत्तर मात्रा होय तो एक युक्त करै, तीनका भाग दे, शेषांकसे जीवादि योनि कहना चाहिये। उदाहरण, सूक्ष्म चक्रसे औत्तरी वेलाका समयमें वर्णपिंड ४० वर्गपिंड ३२ मात्रा पिण्ड २६ त्रिपिण्डका योग स्फुट पिंड ९९ हुआ, वर्णपिंड ४० में ७५ युक्त किया ११५ हुआ, शुक्लादि तिथि १६ युक्त किया तो १३१ हुआ इसमें स्फुटपिण्ड ९९ शोधन किया तो शेष ३२ रहा, इस

उदाहरणमें श्रेणीके आद्यर्णमें अधरमात्रा है इस लिये एक हीन किया ३१ हुआ, तीनसे भाग लिया तो अवशिष्ट १ बचा तो जीवयोनि हुआ। और दग्धकालमें आधरांवेला होय तो वर्णपिण्ड ४० हीन शुक्लादि तिथि १६ युक्त ७५ किया तब ५१ हुआ स्फुट पिण्ड ९९ युक्त किया तो १५० हुआ यहां श्रेणीके आदिमें अधरमात्रा है इसवास्ते एक हीन किया १४९ हुआ तीनसे भाग लिया अवशिष्ट २ रहे तो धातुयोनि हुआ ॥ २५ ॥ २६ ॥

अथ प्रसङ्गमात्तं गुणनियममाह ।

यत्र नोक्तं गुणं पिण्डं तत्र प्रश्नोद्भवा गुणाः ।
ज्ञेया यत्र क्रिया प्रोक्ता तत्र पिंडं च केवलम् ॥ २७ ॥

जिस स्थलमें पिण्डका गुणक नहीं कहा उस स्थलमें पिण्डको प्रश्नवर्ण संख्यासे गुणा करे। जिस स्थलमें क्रिया कही है वहां केवल पिण्ड ग्रहण करना ॥ २७ ॥

अथ जीवकार्ये सति किं कार्यमित्याह ।

दृष्टं जीवं यदा तर्हि प्रश्ने आलिङ्गितादिषु ।
वेलासु तत्तद्गुणितं कृत्वा द्वंद्वयादिकान्वदेत् ॥ २८ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे जीवादि योनि सिद्ध हुई, अब जीवादि योनिका भेद कहते हैं। जो जीवचिन्ताका प्रश्न होय तो आलिङ्गितादि वेलाके विषय वक्ष्यमाण गणित करके द्विपद चतुष्पद अपद बहुपदके भेद कहना चाहिये ॥ २८ ॥

तदेवाह ।

लिंगिते शशियुतं यदोत्तरा पिण्डमिंदुरहितं तथाधरा ।
वेदशेषित इह द्विपाच्चतुष्पादपाद्बहुपादयोनयः ॥ २९ ॥

आलिङ्गितवेलामें जीवचिन्ताका प्रश्न आवे उसका उदाहरण । प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें उत्तरामात्रा होय तो एक युक्त पिंड करना, यदि अधरामात्रा होय तो एक हीन पिंड करना, उसमें चारका भाग देना, शेषाङ्क १ से द्विपद, २ से चतुष्पद, ३ से अपद, ४ से बहुपदयोनि जान लेना । इस उदाहरणमें अधरमात्रा है पिंड ४१ को अनभिघातके गुणक १७ से गुणा किया ६९७ एक हीन किया ६९६ इसमें चारका भाग दिया अवशिष्ट ४ बचा तो बहुपाद योनि हुआ ॥ २९ ॥

दग्धादिमात्रा यदि तत्र पिण्डं द्विधा त्रिहृल्लब्धियुगाब्धिभक्तम् । ज्ञेयावशेषे द्विपदादियोनिस्त्वथोऽभिधूम्रे समये विधेयम् ॥ ३० ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें दग्धमात्रा होय तो पिंडको द्विधा स्थापन करै, एक स्थानमें तीनसे भाग ले, लब्ध जो आवै उसको द्वितीय स्थानमें युक्त करे, फेर चारका भाग दे, शेषांकसे द्विपदादि योनि कहना ॥ ३० ॥

अभिधूम्रसमये चाह ।

मात्रार्णपिण्डान्तरसंगुणः स्याद्द्विपिण्डयोगोऽब्धिहृतोऽत्र योनिः ॥ ३१ ॥

अभिधूम्र समयके विषय जीवचिन्ताका प्रश्न आवे उसका उदाहरण देते हैं । द्विपिण्ड योगको मात्रापिण्ड वर्णपिण्डका अन्तरसे गुणा करै, उसमें चारका भाग दे, शेषांकसे द्विपदादि योनि कहना, मात्रापिण्ड ९ वर्णपिण्ड ३२ का योग द्विपिण्ड ४१ हुआ इसको मात्रार्ण पिण्डान्तर २३ से गुणा किया ९४३ हुआ, चारका भाग दिया शेष तीन बचे अपदादि योनि हुई ॥ ३१ ॥

दग्धसमये चाह ।

आलिङ्गितादिर्यदि दग्धकाले पिण्डं द्वियुक्तं चेदपरौ कुहीनम् । वेदैर्हतं स्याद्द्विपदादियोनिश्चत्वार उक्ता द्विपदेऽपि भेदाः ॥ ३२ ॥

दग्धवेलामें जीवचिन्ताका प्रश्न आवे उसका उदाहरण देते हैं। प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिंगित मात्रा होय तो पिण्डमें दो युक्त करना अभिधूम्र दग्धमात्रा होय तो एक हीन करना, उसमें चारका भाग देना शेषांकसे द्विपदादि योनि कहना । इस उदाहरणमें अभिधूम्र मात्रा है, पिण्डं ४१ स्वगुणक १७ गुणितं जातं स्फुटपिण्डं ६९७ कुहीनं ६९६ वेदै ४ हृतं शेषं ४ बहुपादयोनिर्जाता । द्विपदके चार भेद कहे हैं वक्ष्यमाण प्रकारसे जान लेना ॥ ३२ ॥

द्विपदभेदमाह ।

द्विपदेऽपि तुर्यभेदा वेलाक्रमतो बुधैर्ज्ञेयाः ।
तत्तद्गुणितं कृत्वा तादृग्भिर्वर्णमात्रासु ॥ ३३ ॥

द्विपद योनिके चार भेद आलिङ्गितादि वेला क्रमसे पण्डितोंको जान लेना चाहिये, तत् तत् वेलामें वक्ष्यमाण गुणित वर्णमात्रा क्रमसे ॥ ३३ ॥

आलिङ्गितवेलायां द्वाभ्यामाद्यवर्णवर्गाङ्कैः । द्विस्थं मात्रापिण्डं हत्वा संयोजयेद्विद्वान् । वेदहते शेषाङ्कैर्देवा नृखगाः सुराः क्रमशः ॥ ३४ ॥

आलिङ्गितवेलामें द्विपद योनिका उदाहरण देते हैं । मात्रा पिण्डको दो जगह स्थापन करे, एकत्र प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णांकसे गुणा करे अन्यत्र श्रेणीका प्रथम वर्णके वर्गांकसे गुणा करे, फिर दोनोंके योगमें चारका भाग देना, शेषांक १ से देव २ से मनुष्य ३

से पक्षी, ४ से असुरयोनि क्रमसे जान लेना, मात्रापिण्ड ९ को प्रथम वर्णांक १० से गुणन किया ९० हुआ, द्वितीय स्थानमें वर्णांक ६ से गुणा किया ५४ हुआ, दोनोंका योग १४४ में चारका भाग दिया शेष ४ बचे तो असुरयोनि हुई ॥ ३४ ॥

अभिधूमितकाले चाह ।

अभिधूमितवेलायां पिण्डं सूक्ष्माक्षरैश्च सप्ताढ्यम् ।
नवगुणितं श्रुतिभक्तं शेषैः प्राग्वत् मृता योनिः ॥ ३५॥

अभिधूमित वेलामें द्विपद योनिका उदाहरण । अभिधूमित कालमें द्विपद योनिका प्रश्न आवै तो सूक्ष्म चक्रसे पिंडोत्पत्ति करै उसको स्वगुणकसे गुणा करै फिर सात युक्त करे पुनः नव गुणा करै चारका भाग लेना अवशिष्टांकसे देवादि योनि क्रमसे जान लेना । सूक्ष्मचक्रका पिंड ६५ को स्वगुणक १७ से गुणा किया ११०५ सप्त युक्त किया १११२ नव गुणा किया १०००८ हुआ, चारका भाग दिया शेष ४ बचे तो असुरयोनि हुई ॥ ३५ ॥

दग्धकाले चाह ।

वर्णाङ्का वर्णाङ्कैर्गुणिता मात्रांकसंयुक्ताः ।
वेदविभक्ता योनिः प्राग्वत् स्याद्दग्धवेलायाम् ॥ ३६ ॥

दग्धवेलामें द्विपद योनिका उदाहरण देते हैं । वर्णांकको वर्गांकसे गुणा करै फिर मात्रांक युक्त करै उसमें चारका भाग देना शेषांकसे देवादि योनि कहना । यथा, वर्णांका ३२ वर्गांकैस्तथोक्तै १७ र्गुणिता ५४४ मात्रांकै ९ र्युक्ता ५५३ वेदै ४ र्विभक्ताः शेषे १ एके देवयोनिर्जाता ॥ ३६ ॥

देवादिज्ञानं प्रकारान्तरेण चाह ।

त्रिसप्तनवमात्राभिर्देवाद्वचन्त्यादिभिर्नराः ।
पक्षिणोऽब्ध्यष्टदशभिर्दैत्याः षष्ठेशपञ्चभिः ॥ ३७ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें त्रि ३ सप्त ७ नव ९ मात्रा होय तो दे
योनि कहना । द्वितीय २ द्वादश १२ प्रथम १ मात्रा होय तो न
योनि कहना । चतुर्थ ४ अष्टम ८ दशम १० मात्रा होय तो पक्षि
योनि कहना । पञ्च ५ षष्ठ ६ एकादश ११ मात्रा होय तो दैत्ययो
कहना चाहिये । इस उदाहरणमें द्वितीय मात्रा है इसे नरयो
कहना ॥ ३७ ॥

प्रसङ्गात्कुत्र सा देवता इति ज्ञानमाह ।

आदावालिङ्गिता मात्रा स्वर्गे मृत्येऽभिधूमिता ।
दग्धमात्रा यदादौ चेत्पाताले देवता स्मृता ॥ ३८ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित मात्रा होय तो देवता स्वर्गलो
में कहना, अभिधूम्र मात्रा होय तो मृत्युलोकमें देवता कहन
दग्धमात्रा होय तो पाताललोकमें देवता कहना । इस उदाहरण
अभिधूम्र मात्रा है तो मृत्युलोकमें कहना चाहिये ॥ ३८ ॥

मनुष्ये ज्ञाते पुनः किं कार्यमित्यत्राह ।

मनुजेऽपि वदेद्भेदान् पञ्चविंशादिकान् बुधः ।
आलिङ्गितादिवेलासु कृत्वा तद्गुणितं वदेत् ॥ ३९ ॥

मनुष्यके पांच भेद पंडितोंको आलिङ्गितादि वेलाके विषय व
माण क्रमसे ब्राह्मणादि पांच जाति जान लेना चाहिये ॥ ३९ ॥

आलिङ्गितेऽर्णपिण्डं सप्तगुणं मात्रिकाङ्कयुतम् ।
अधरानेहसि कुयुतं भूवियुतंचोत्तरे काले ॥ ४० ॥

आलिङ्गित कालमें मनुष्य चिन्ताका प्रश्न होय तो पिंडको स
गुणा करै, फिर स्वराङ्क युक्त करै, फिर आलिङ्गित कालमें आध
वेला होय तो एक युक्त करै औत्तरी वेला होय तो एक हीन करै४०

पञ्चहृते स्युर्विप्राः क्षत्रियवैश्यांघ्रिजान्त्यभवाः ।
अग्निधूमिते च पिण्डे द्विघ्ने बाणैर्हृते योनिः ॥ ४१ ॥

पूर्व श्लोकोक्त अंकसमूहमें पांचका भाग देना अवशिष्टांक १ से विप्र २ से क्षत्रिय ३ से वैश्य ४ से शूद्र ५ से अन्त्यज वर्ण क्रमसे जानलेना । यथा वर्णपिंड ३२ को सप्त गुणा किया २२४ स्वरांक ९ युक्त किया २३३ हुआ, इस अंकमें आलिंगितवेलामें आधरी वेला होय तो एक युक्त करे, औत्तरीवेला होय तो एक हीन करे । इस उदाहरणम आधरीवेला है इसवास्ते एक युक्त किया २३४ हुआ, पांचका भाग दिया अवशिष्ट चार बचे तो शूद्रयोनि हुआ । अभि-धूमितकालमें मनुष्य चिन्ताका प्रश्न होय तो गुणक गुणित पिंडको द्विगुण करके पांचसे भागले अवशिष्टांकसे ब्राह्मणादि वर्ण क्रमसे जान लेना । यथा गुणक १७ गुणितपिंड ६९७ को द्विगुण किया १३९४ हुआ, पांचसे भाग लिया अवशिष्ट ४ बंचे तो शूद्रयोनि हुआ ॥ ४१ ॥

दग्धे काले पिण्डे कृत्वोत्तराधरैर्वर्णैः ।
प्रश्नार्णघ्ने योगो मात्राङ्काढ्यः शरोद्धृता योनिः ॥ ४२ ॥

दग्धकालमें मनुष्य चिन्ताका प्रश्न होय तो उत्तराधर वर्णजन्य पिण्डको दो जगह स्थापन करै, एकत्र उत्तरवर्ण पिण्डको उत्तरार्ण संख्यासे गुणा करै, अधरवर्ण पिण्डको अधरार्ण संख्यासे गुणा करै, फिर दोनोंका योग करक स्वरांक युक्त करे पांचसे भाग ले शेषांकसे ब्राह्मणादि योनि क्रमसे जान लेना । यथा, उत्तर वर्णपिण्ड २३ को उत्तरार्ण ३ संख्यासे गुणा किया ६९ हुआ अधरवर्णपिण्ड ९ को अधरार्ण १ संख्यासे गुणा किया ९ हुआ, दोनोंका योग ७८ में स्वरांक ९ युक्त किया ८७ हुआ, पांचसे भाग लिया शेष २ बचे तो क्षत्रिय योनि हुआ ॥ ४२ ॥

प्रकारान्तरेण योनिज्ञानमाह ।

अ इ ए ओ विप्राः स्युः आ ऐ क्षत्रं विशस्तथा ई ।
औ शूद्रा उ ऊ तथान्त्यावन्त्यजवर्णाः समुद्दिष्टाः ॥ ४३ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें एक तीन सप्तम नवम मात्रा होय त
विप्रयोनि कहना, द्वितीय अष्टम मात्रा होय तो क्षत्रिययो
कहना, चतुर्थ मात्रा होय तो वैश्ययोनि कहना, दशम मात्र
होय तो शूद्रयोनि कहना, पञ्चम षष्ठ एकादश द्वादश मात्र
रहै तो अन्त्यजयोनि कहना, इस उदाहरणमें द्वितीय मात्रा है इस
क्षत्रिययोनि कहना ॥ ४३ ॥

जातिज्ञाने सति किं कार्यं तदाह ।

आलिङ्गितादिवेलाभिर्ज्ञेया बालादिकाश्च ते ।
तत्तत्क्रियानुसारेण विमृश्य सुधिया धिया ॥ ४४ ॥

पूर्वोक्त विप्रादि पांच योनिका बालाद्यावस्थाका ज्ञान आलि
ङ्गितादि कालवश करके तत्तत्क्रियानुसार पण्डितोंको स्वबुद्धिसे
विचार करके जान लेना चाहिये ॥ ४४ ॥

आलिङ्गितेऽर्णपिण्डे धृतिनिघ्ने मात्रिकाङ्कहते ।
बालः कुमारतरुणौ मध्यवृद्धौ शरैस्तष्टे ॥ ४५ ॥

आलिङ्गितकालका उदाहरण देते हैं । वर्णपिण्डको अष्टाद
गुणा करै, पुनः स्वरांकसे गुणा करै, पांचसे भाग दे शेषाङ्क १
बाल, २ से कुमार, ३ से तरुण, ४ से मध्यम, ५ से वृद्ध, इस क्रम
जान लीजिये । यथा, वर्णपिण्ड ३२ को अष्टादश १८ गुणा कि
५७६ हुआ, पुनः स्वरांक ९ से गुणा किया ५१८४ हुआ, पांच
भाग लिया शेष ४ बचे तो मध्यमावस्था हुई । पञ्चाशद्वर्षनिक
मध्यवयाः प्रोक्तः ॥ ४५ ॥

अभिधूमिते च दग्धे प्रश्नश्रेणीगजैर्निघ्ना ।

नवहतपिंडयुता स्याद्बाणैस्तदा क्रमाद्योनिः ॥ ४६ ॥

अभिधूम्र दग्धकालका उदाहरण देते हैं । इन दोनोंकी एकही क्रिया है, श्रेणीवर्णसंख्याको आठ ८ गुणा करना उसमें नव ९ गुणित पिण्डयुक्त करना, पांचसे भाग शेषांकसे बालाद्यावस्था क्रमसे जान लेना । यथा, श्रेणीसंख्या ४ को ८ गुणा किया ३२ हुआ, फेर पिण्ड ४१ को गुणक १७ से गुणा किया ६९७ हुआ नवगुणित पिण्ड ६२७३ को ३२ युक्त किया ६३०९ हुआ, पांचसे भाग लिया शेष ९ बचे तो वृद्धावस्था हुआ ॥ ४६ ॥

स च जीवति मृतो वेति ज्ञानं तथा कुब्जखआदि-

ज्ञानं चाह ।

उत्तरैर्जीवितं विन्द्यादधरैर्मृतमेव च ।

स्वान्यदेशांधकुब्जादिसंज्ञाप्रकरणोक्तवत् ॥ ४७ ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर होय तो जीवित कहना, अधर वर्ण होय तो मृतक कहना, अन्य देश ग्राम अन्ध कुब्जादि चिह्न संज्ञा प्रकरणोक्तवत् जान लेना ॥ ४७ ॥ इति मनुष्यभेदाः ॥

अथ पक्षिभेदानाह ।

पक्षिणो द्विविधा ज्ञेया जलजाः स्थलजास्तथा ।

उत्तरैर्जलजा ताः स्युरधरैः स्थलजाः स्मृताः ॥ ४८ ॥

अब मनुष्य भेद कहनेके अनन्तर पक्षियोंका भेद कहते हैं । पक्षी दो प्रकारके कहे हैं, एक तो जलज, द्वितीय स्थलज, उत्तरवर्णसे जलज पक्षी कहना, अधरवर्णसे स्थलज पक्षी कहना ॥ ४८ ॥

पिंडेऽर्केघ्ने चोत्तराजादियाते षड्वर्गोनेऽल्पे गजा-

ऽभ्यन्विते चेत् । नीचात् षड्वर्गान्विते समतष्टे युग्मे बद्धः स्यादयुग्मे विमुक्तः ॥ ४९ ॥

पिण्डको द्वादश १२ गुणा करै, फेर प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें उत्तर मात्रा होय तो उसमें ३६ कमती करैं, जो द्वादश गुणित पिंड न्यून होय तो ४८ युक्त करै, उसमें सातका भाग देना, शेष समांक होय तो बद्ध पक्षी जान लेना, विषमांक होय तो स्वच्छन्दचारी जान लेना । प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें अधरमात्रा होय तो १२ द्वादश गुणित पिंडमें षट्त्रिंशत युक्त करना, फेर सातका भाग देना, समांक बचे तो पिञ्जरादिस्थ पक्षी जान लेना, विषमांक बचे स्वच्छन्द चारी कहना । यथा, पिंड ४१ को १२ द्वादश गुणा किया ४९ हुआ, यहां अधरमात्रा है इसवास्ते ३६ युक्त किया ५२८ हुआ सातसे भाग लिया शेष ३ बचे तो विमुक्त पक्षी हुआ ॥ ४९ ॥
इति पक्षिभेदाः ॥

अथ राक्षसभेदानाह ।

राक्षसा द्विविधा प्रोक्ताः कर्मजा योनिजास्तथा ।
मात्रापिंडे द्वितष्टे स्युः कर्मजा योनिजाः क्रमात् ॥ ५० ॥

राक्षस दो प्रकारके कहे हैं, एक तो कर्मज, द्वितीय योनिज भूत प्रेतादिक कर्मज कहे हैं, असुरादि वंशमें उत्पन्नको योनि कहा है, मात्रापिंड ९ में दोका भाग देना विषम शेष होय तो कर्मज राक्षसयोनि कहना, सम शेष बचे तो योनिज राक्षस कहना इस उदाहरणमें शेष १ बचा तो कर्मज राक्षसयोनि हुई ॥ ५० ॥
इति द्विपदभेदाः ॥

अथ चतुष्पदभेदानाह ।

खुरी नखी तथा दन्ती शृङ्गी भेदाः चतुष्पदे ।
खछौ ठथौ धफौ तेषां रसौ प्रोक्ताः क्रमादमी ॥ ५१ ॥

चतुष्पद चार प्रकारके कहे हैं, प्रथम खुरी, द्वितीय नखी, तृतीय दन्ती, चतुर्थ शृङ्गी । अब वर्णोंकी चतुष्पद संज्ञा कहते हैं, ख छ इन दोनों वर्णोंकी खुरी संज्ञा कही है, अश्व खरादि । ठ थ इन दोनों वर्णोंकी नखी संज्ञा कही है, नखी सिंह मार्जारादि । ध फ इन दोनों वर्णोंकी दन्ती संज्ञा कही है, दन्ती गजादि । स इन दोनों वर्णोंकी शृङ्गी संज्ञा कही है, शृङ्गी गो महिष्यादि । प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें खकारादादि आठ वर्ण होये तो ये संज्ञा कहना । ये वर्ण नहीं होय तो उसका प्रकार लिखते हैं ॥ ५१ ॥

तिसृभिस्तिसृभिर्ज्ञेया मात्रिकाभिः क्रमात्तथा ।
बुधैर्वर्णापेक्षयोक्ता मात्रा बलवती सदा ॥ ५२ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें जो मात्रा होय उसके वश करके चतुष्पद संज्ञा कहना सो कहत हैं, अ आ इ, इन तीन स्वरोंकी खुरीसंज्ञा है, ई उ ऊ, इन तीन स्वरोंकी नखी संज्ञा है, ए ऐ ओ, इन तीन स्वरोंकी दन्तीसंज्ञा है, औ अं अः इन तीन स्वरोंकी शृंगीसंज्ञा कही है वर्णापेक्षया मात्रा सर्वकालमें बलवान् कही है, यह पंडितजनोंको जानना योग्य है ॥ ५२ ॥

यद्युत्तरसमयः स्याद्वर्णाङ्काश्चाद्यवर्गाङ्कैः ।
सूक्ष्मैर्निघ्ना युक्ता द्विघ्नाजङ्कैर्युगोद्धृता योनिः ॥ ५३ ॥

औत्तरीवेलामें प्रश्न होय तो वर्णपिंडको सूक्ष्म चक्रोद्भव प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्णको वर्गांकसे गुणा करै द्विगुणित मात्रांक युक्त करै उसमें चारका भाग देना अवशिष्टांकसे खुरी पूर्वादि योनि जान लेना । यथा, वर्णांका ३२ सूक्ष्मवक्रभवैराद्यस्य नकारस्य वर्गांकै ८ गुंणिता २५६ द्विगुणितमात्राङ्कै १८ युक्ता २७४ युग ४ भक्ताः शष २ नखी योनिः ॥ ५३ ॥

यद्यधरानेहा स्यात्प्राग्वात्पिण्डं स्वगुणाकघ्नम् ।
वेदैस्तष्टं योनिः खुरीपूर्वाणां चतुर्णां स्यात् ॥ ५४ ॥

आधरीवेलामें प्रश्न होय तो गुणक गुणित पिण्डमें चारसे भाग लेना शेषांकसे खुरी पूर्व योनि जान लेना । यथा, पिण्डं ४१ खगुणक १७ गुणितं ६८७ वेदैस्तष्टं ३ खुरीयोनिः ॥ ५४ ॥

स च ग्राम्यो वन्यो वेति ज्ञानमाह ।

मात्राङ्का अधरार्णैः संयुक्ताः सप्त सन्तष्टाः ।
विषमे ग्रामनिवासी वनवासी स्यात्समे शेषे ॥ ५५ ॥

प्रश्नश्रेणीके अधरवर्ण संख्यासे मात्रांकयुक्त करके उसमें सातका भाग देना, विषम शेष बचे तो ग्रामनिवासी चतुष्पद, सम शेष बचे तो वनवासी चतुष्पद कहना । यथा, मात्रांका ९ अधरवर्णेन १ युक्ताः १० सप्तसंतष्टाः शेषै ३ ग्रांमनिवासी इति ॥ ५५ ॥

सोऽपि जीवति मृतो वेति ज्ञानमाह ।

पञ्चोनितं स्वपिण्डं ज्वलनैस्तष्टं समे शेषे ।
मरणं विषमे जीवनमुक्तं प्राज्ञैः क्रमेणैव ॥ ५६ ॥

गुणक गुणित पिण्डमें पांच हीन करके उसमें तीनका भाग देना, अवशिष्ट समांक रहे तो मृतक चतुष्पद कहना, विषम अपशिष्ट रहे तो जीवित चतुष्पद कहना । यथा, स्वपिण्डं ६९७ पञ्चोनितं ६९२ ज्वलनै ३ स्तष्टं समे सति न जीवति सः ॥ ५६ ॥ इति चतुष्पदभेदाः ॥

अथापादभेदानाह ।

जले चराद्यादिमवर्गवर्णैः स्थले चरा युग्मचतुर्थजैश्च ।
उभयचराः पञ्चमवर्गवर्णैर्दीर्घापराजिभिः सविषा विषौ
स्तः ॥ ५७ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिके वर्णसे अपद भेद कहते हैं, वर्गोंके प्रथम तृतीय वर्णोंकी जलचर संज्ञा कही है, द्वितीय चतुर्थ वर्णोंकी स्थल

चर संज्ञा कही है, ग्रहादिक जलचर कहे हैं, कृमि सर्पादिक स्थल-चर कहे हैं, वगके पञ्चम वर्णोंकी उभयचर संज्ञा कही है, जल सर्पादिक उभय चर कहे हैं, दीर्घस्वर विषसंयुक्त कहे हैं, ह्रस्वस्वर निर्विष कहे हैं, इस उदाहरणमें उभयचर अपद सविष हुआ ॥५७॥

प्रश्नश्रेण्यामुत्तरा स्यादिगस्य पिण्डं तद्वचाधरा स्यादि-गस्य । ऐक्यं कृत्वासप्ततष्टेऽत्र शेषं शोध्यं श्रेणीसम्भवे सर्वपिंडे ॥ ५८ ॥

प्रश्नश्रेणीका आदिका उत्तर वर्णपिण्डका तद्वत् श्रेणी प्रथमाधर वर्णपिण्डका योग करके सप्तका भाग दे अवशिष्टांकको श्रेणी सम्भव सर्व पिण्डमें शोधन करै ॥ ५८ ॥

चेन्नो शुद्धे युक्तदेवे विशोध्ये युग्मायुग्मे तोयनिर्नीर-जाता । पिंडे द्विघ्ने सप्ततष्टे विषाढ्यो युग्मेऽयुग्मे निर्विषः स्यात् क्रमेण ॥ ५९ ॥

जो श्रेणीसंभव सर्व पिण्ड न्यून होय तो ३३ युक्त करके शोधन करै, शोधन शेष युग्म होय तो जलचर अपद कहना, विषम होय तो स्थलचर अपद कहना चाहिये । यथा, "प्रश्ने श्रेण्यां आदिगस्य उत्तरवर्णस्य नस्य पिण्डं १० अधरस्य रस्य पिण्डं ९ एकी-कृत्य १० सप्ततष्टेऽत्र शेषं ५ तच्छ्रेणीसम्भवे सर्वपिण्डे ४१ विशोध्यं ३६ अत्र युग्म शेष सति जलचरोऽपदः पिंडे ६९७ द्विघ्ने १३९४ सप्त-तष्टेऽत्र शेषं १ विषमें शेषे सति निर्विषोऽपद इति ॥ ५९ ॥ इति अपदभेदाः ॥

अथ बहुपादभेदानाह ।

बहुपादाद्विभेदाः स्युरंडजाश्च जरायुजाः ।
ई ए ओ ऐ उ अं अस्युरंडजाः परजा परे ॥ ६० ॥

बहुपाद दो प्रकारके कहे हैं एक तो अंडज द्वितीय जरायुज कहे हैं, चतुर्थ सप्तम नवम अष्टम पञ्चम एकादश द्वादश इन स्वरोंकी अंडज संज्ञा कही है, अंडजाः खारजूकादयः। प्रथम द्वितीय तृतीय षष्ठ दशम इन स्वरोंकी जरायुज संज्ञा कही है । जरायुजाः खरभादयः। प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें जो मात्रा होय उसके वश करके जान लेना, इस उदाहरणमें जरायुज बहुपाद हुआ ॥ ६० ॥

उत्तरकाले द्विघ्नं स्वार्चिपिंडं वर्णजेऽब्धिहते ।

युक्ताद्रिहृज्जरायुजपरयोर्नोस्तसमासमयोः ॥ ६१ ॥

औत्तरीवेलामें प्रश्न होय तो द्विगुणित मात्रापिंडको चतुर्गुणित वर्णपिंडमें युक्त करके उसमें सातका भाग देना, सम बचनेसे जरायुज जानना, विषम बचनेसे अंडज जानना । यथा, मात्रापिंडं ९ द्विघ्नं १८ वर्णजे पिंडे ३२ अब्धि ४ हते १२८ युक्ता १४६ सप्त ७ भक्ताः ६ समशेषेण जरायुजो बहुपादः ॥ ६१ ॥

अधरानेहसि मात्राङ्कानागघ्नयुताश्च वर्णभवैः ।

नगतष्टाः समविषये योनिः प्रोक्ता जरायुजांडजयोः ॥ ६२॥

आधरीवेलामें प्रश्न होय तो अष्टगुणित मात्रा पिण्डको वर्णज पिण्डमें युक्त करके उसमें सातका भाग देना सम बचनेसे जरायुज बहुपाद कहना, विषम शेष रहे तो अंडज बहुपाद कहना । यथा, मात्राङ्का ९ अष्ट ८ गुणिता ७२ वर्णभवैरङ्कैः ३२ युता १०४ नग तष्टा ६ समशेषत्वाज्जरायुजो बहुपादः ॥ ३२ ॥ इति जीवभेदाः॥

अथ धातुभेदानाह ।

धाम्याधाम्यविभेदेन धातुयोनिर्द्विधा मता ।

अधाम्यमधरैः प्रोक्तमुत्तरैर्धाम्यमेव च ॥ ६३ ॥

धातुयोनि दो प्रकारकी कही है, एक तो धाम्य, द्वितीय अधाम्य,

सुवर्णादिक धाम्यधातु कहे हैं, वज्रादिक अधाम्यधातु कहे हैं, उत्तर वर्णोंकी धाम्यसंज्ञा कही है, अधरवर्णोंकी अधाम्य संज्ञा कही है ६३॥

आलिङ्गितादियुक्ते प्रश्नाद्यर्णे क्रमात्पिंडे ।
त्रिचतुर्द्वियुक् समाङ्केऽधाम्यं धाम्यं तथा युग्मे ॥ ६४ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित मात्रा होय तो पिण्डमें ३ युक्त करै, अभिधूम्र मात्रा होय तो ४ युक्त करै, दग्धमात्रा होय तो २ युक्त करै, अत्रोदाहरणेऽभिधूम्रमात्रा योगस्तेन पिण्डं ४१ चतुर्युक् ४५ अयुग्मे शेषे सति धाम्यं धातुरूपं, समे शेषे अधाम्यमिति ॥ ६४ ॥

अथ प्रथमं धाम्यभेदानाह ।

धाम्यमपि द्विविधं स्याद्घटितमघटितं क्रमेणैव ।
अष्टौ तद्भेदाः स्युः स्वर्णं रौप्यं तथा ताम्रम् ।
कांस्यं तारत्रपुषी पित्तललोहे ह्यवर्गाद्यैः ॥ ६५ ॥

धाम्यधातु दो प्रकारका कहा है, एक तो घटित, द्वितीय अघटित उसके आठ भेद हैं, अवर्गादि आठ वर्ग स्वर्णादि धातुके स्वामी क्रमसे जान लेना । प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण जिस वर्गका होय उनके अनुसार सुवर्णादि धातु जान लेना चाहिये सो चक्रमें देख लीजिये ॥ ६५ ॥

६५ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

अ	क	च	ट	त	प	य	श
स्वर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	सीस	रंग	पित्तल	लोह

वर्णाङ्कं श्रेणिघ्नं युक्तं स्वरपिण्डवर्गेण ।
तष्टं नागैः शेषे ज्ञेया स्वर्णादिका योनिः ॥ ६६ ॥

वर्णपिण्डको श्रेणीवर्णसंख्यासे गुणा करै, मात्रापिण्डका वर्ग करके युक्त करै, उसमें आठका भाग देना शेषांकसे स्वर्णादिक योनि जान लेना । यथा, वर्णपिण्डं ३२ श्रेणी ४ गुणितं १२८ स्वरपिण्ड ९ वर्गेण ८१ युक्तं २०९ नागै ८ स्तष्टं शेषं १ शेषत्वात् १ स्वर्ण-योनिः ॥ ६६ ॥

ज्ञात्वा स्वर्णादिकान् धातुरुत्तराधरकालतः ।
कृत्वा तत्तत्क्रियां विद्वान्वदेदघटितादिकम् ॥ ६७ ॥

स्वर्णादिक योनि जान करके उत्तराधर कालसे तो वक्ष्यमाण तत्तत् क्रियानुसार पण्डितोंने अघटितादिक भेदोंको कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

मात्राङ्काः श्रेणिघ्ना द्विस्थाः तिथ्यासलब्धाढ्याः ।
वर्णाङ्काढ्यास्तष्टाः शैलैर्युगयुग् ह्यघटितान्ये ॥ ६८ ॥

औत्तरीवेलामें प्रश्न होय तो मात्रापिण्डको श्रेणीसंख्यासे गुणा करै फेर दो जगह स्थापन करै, एक जगह १५ का भाग दे लब्धको द्वितीय स्थानमें युक्त करै, फेर वर्णपिण्ड युक्त करै उसमें ७ का भाग लेना, शेष सम होय तो अघटित योनि कहना, विषम शेष होय तो घटित योनि कहना । यथा, मात्रांकाः ९ श्रेणि ४ घ्ना ३६ द्विस्थाः ३६ तिथ्याप्त १५ लब्धेन २ युक्ता ३८ वर्णाङ्कैश्च ३२ युक्ता नगै ७ स्तष्टा ७ विषमशेषत्वात् घटितयोनिरिति ॥ ६८ ॥

अधरानेहसि पिण्डे मात्राणांत्थेऽश्विवर्णघ्ने ।
योगोऽद्रिहृत्समे स्यादघटितमसमे तथा घटितम् ॥ ६९ ॥

आधरीवेलामें प्रश्न होय तो मात्रापिण्डको द्विगुण करै वर्णपिण्डको श्रेणीसंख्यासे गुणा करै, फेर दोनोंके योगमें ७ का भाग दे सम शेष होय तो अघटित धातु योनि कहना, विषम शेष होय तो घटित धातु योनि कहना । यथा

मात्रापिण्डे ९ द्विघ्ने १८ वर्णजे पिण्डे ३२ श्रेणि ४ घ्ने १२८ द्वयोर्योगे १४६ सप्तभक्ते समे शेषे ६ सति अघटितं धातुरूपम् ॥ ६९ ॥

घटितभेदानाह ।

आभरणभाण्डमुद्राः त्रेधा घटितः स्मृतो धातुः ।
आलिङ्गितादिभिः स्यादुत्तरपूर्वैस्तथा वर्णैः ॥ ७० ॥

घटित धातु तीन प्रकारका कहा है, प्रथम आभरण १ द्वितीय भाण्ड २ तृतीय मुद्रा ३ प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिंगित मात्रा होय तो आभरण कहना, अभिधूम्र मात्रा होय तो भाण्ड कहना, दग्ध मात्रा होय तो मुद्रा कहना, श्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर होय तो आभरण कहना, अधर वर्ण होय तो भाण्ड धातु कहना दग्धवर्ण होय तो मुद्रा कहना चाहिये ॥ ७० ॥

वर्णाङ्कघ्नश्रेणी खण्डमजंकैर्युतं त्रयाप्तम् ।
शेषैराभरणाद्यं ह्यथ चेदधरोद्भवा वेला ॥ ७१ ॥

औत्तरीवेलामें प्रश्न होय तो वर्णपिण्डको श्रेणीसंख्यासे गुणन करै उसके अर्द्धमें स्वरपिंड युक्त करै फेर तीनका भाग देना एकादि शेष करके आभरणादि धातु योनिको जान लेना । यथा, वर्णपिण्डेन ३२ गुणिता श्रेणी ४ जाता १२८ अस्य खण्डं ६४ स्वराङ्कै ९ र्युतं ७३ त्रिभि ३ र्भक्तं शेषं १ आभरणयोनिजाता ॥ ७१ ॥

द्विघ्नश्रेण्या गुणिता मात्रांका द्वयाहतश्रेण्या ।
युक्तास्त्रिभिर्विभक्ता आभरणाद्यं स्मृतं शेषैः ॥ ७२ ॥

आधरीवेलामें प्रश्न होय तो द्विगुणित श्रेणी करके मात्रापिण्डको गुणा करै फेर द्विगुणित श्रेणीयुक्त करै उसमें तीनसे भाग लेना एकादि शेष करके आभरणादिक धातु योनि कहना यथा द्विघ्न २

श्रेण्या ८ मात्रांका ९ गुणिता ७२ द्व्या २ हत श्रेण्या ८ युक्ता ८० त्रिभिर्भक्ता ३ शेषं २ भांडयोनिर्जाता ॥ ७२ ॥

तत्र विशेषमाह ।

स्वदेशादिकमत्रापि संज्ञाप्रकरणोक्तवत् ।
वक्ष्यमाणप्रकारेण तन्नामापि वदेत्सुधीः ॥ ७३ ॥

यहां स्वदेशादिकोंकी संज्ञा प्रथम प्रकरणमें जो कही है सो जान लेना, वक्ष्यमाण प्रकार करके तत्तद्वस्तुओंका नाम भी पंडितोंको कहना चाहिये ॥ ७३ ॥

अथ आभरणभेदानाह ।

षड्विधमाभरणं स्याच्छिरःश्रवोबाहुकण्ठगतम् ।
कटिपादयोः क्रमेण द्वाभ्यां द्वाभ्यां च मात्राभ्याम् ॥ ७४ ॥

आभूषण ६ प्रकारका कहा है, अकारादि द्वादश मात्राको ६ वर्ग करके शिरादि ६ अङ्गका आभरण जान लेना चाहिये सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ७४ ॥

चतुःसप्ततिश्लोकोक्तं चक्रम् ।

अआ	इई	उऊ	एऐ	ओऔ	अंअः
शिर	कर्णौ	बाहू	कण्ठ	कटी	पाद्

पिंडेनाह ।

प्रश्नार्णांकं त्रिघ्नं सशरं मात्रांकसंयुक्तम् ।
षड्भिस्तष्टं षोढा भूषणभेदाः क्रमात्ते स्युः ॥ ७५ ॥

वर्णपिंडको त्रिगुणित करके ५ युक्त करै, फेर स्वराङ्क युक्त करै, उसमें ६ का भाग देना, एकादि शेष करके शिरादि ६ अंगका भूषण

क्रमसे समझ लेना। यथा, प्रश्नवर्णपिंडं ३२ त्रिघ्नं ९६ पञ्च ५ युतं १०१ मात्राङ्कैः ९ श्च युतं ११० षड्भिः ६ स्तष्टं शेषं २ पूर्वोक्तेषु षोढा-भूषणभेदेषु कर्णभूषणम् ॥ ७५ ॥

किमङ्गभूषणमिति ज्ञानमाह।

मात्राङ्कयुतश्रेण्या हीनं लब्धं तदूनं चेत्।
युक्तं समविषमांकैर्वामाङ्गान्याङ्गभूषे स्तः ॥ ७६ ॥

पूर्व ६ का भाग देनेसे जो लब्ध आया है उसमें मात्रांकयुत श्रेणी को हीन करे, जो लब्ध न्यून होय तो युक्त करे, शोधन शेष सम होय तो वामभागका भूषण कहना, विषम शेष होय तो दक्षिण अंगका आभूषण कहना। यथा, पूर्वोक्तं ११० षड्भि ६ स्तष्टे लब्धं १८ मात्राङ्कै ९ युतया श्रेण्या १२ हीनं शेषं ९ विषमाङ्कैः शेषैर्दक्षिणांगभूषाभूषणम् ॥ ७६ ॥ इति धाम्यभेदाः ॥

अथाऽधाम्यभेदानाह।

अधाम्यभेदास्त्रय उत्तराद्यैरालिङ्गिताद्यैश्च वरान्तरान्त्याः।
स्युरुत्तमा वज्रमुखाश्च मध्या अश्माभ्रकाद्या लवणादयोऽन्त्याः ॥ ७७ ॥

अधाम्य धातु तीन प्रकारका कहा है, प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें उत्तरवर्ण होय तो अधाम्यधातु उत्तम कहना, हीरा माणिक इत्यादि जान लेना, अधरवर्ण होय तो अधाम्यधातु मध्यम कहना, स्फटिक अभ्रक इत्यादि जानना, दग्धवर्ण होय तो अधाम्यधातु अधम कहना, लवण प्रभृति जान लेना, श्रेणीके आद्यर्णमें आलिंगितमात्रा होय तो अधाम्यधातु उत्तम कहना, अभिधूम्र मात्रा होय तो अधाम्यधातु मध्यम कहना, दग्धमात्रा होय तो अधाम्यधातु अधम कहना चाहिये ॥ ७७ ॥

पिण्डेन चाह ।

पिण्डं स्वरपिण्डघ्नं त्रिघ्नार्णांकाः स्वरांकोनात् ।
शेषयुगुत्तरकाले तष्टं रामैर्वरिष्ठाद्याः ॥ ७८ ॥

औत्तरीवेलामें प्रश्न होय तो पिंडको स्वरपिंडसे गुणा करे फेर त्रिगुणित वर्णपिण्डमें मात्रापिंड हीन करके शेष युक्त करे उसमें ३ का भाग दे शेषांकसे श्रेष्ठ मध्यमाधम भेद जान लेना । यथा, पिंडं ४१ स्वरपिंडेन ९ गुणितं ३६९ त्रि ३ घ्नाद्वर्णं ३२ पिंडात ९६ स्वराङ्को ९ नात् ८७ शेषयुक् ४५६ रामै ३ स्तष्टं ३ त्रिभिः शेषैरधाम्यघयोनिः ॥ ७८ ॥

अधरानेहसि पिंडं सप्तगुणं तद् द्विधात्रिलब्धाढयम् ।
रामैर्हतेऽवशेषैर्ह्युत्तममध्याधमास्ते स्युः ॥ ७९ ॥

आधरीवेलाम प्रश्न होय तो सप्तगुणित पिंडको दो जगह स्थापन करके एक जगह तीनसे भाग लेना, लब्धको द्वितीय स्थानमें युक्त करना उसमें ३ से भाग लेना, शेषांकसे श्रेष्ठ मध्यमाधम भेद जान लेना । यथा, पिंड ४१ सप्त ७ गुणं २८७ द्विधा २८७ त्रि ३ हृल्लब्धेन ९५ युतं ३८२ रामै ३ र्हते शेषं १ उत्तमयोनि जीत! ॥ ७९ ॥

तत्र विशेषमाह ।

उत्तरैर्घटितं विन्द्यात् समैरघटितं तथा ।
आदिगार्णैः स्वरैश्चान्यदूह्यक्तव्यं सुधिया धिया ॥ ८० ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें स्वरवर्ण उत्तर होय तो घटित धातु योनि कहना, आद्यर्ण अधर स्वरवर्ण होय तो अघटित धातुयोनि कहना । अन्य विशेष पंडितोंको स्वबुद्धिसे विचार कर कहना चाहिये ॥ ८० ॥ इति धातुभेदाः ॥

अथ मूलभेदानाह ।

मूलं पञ्चविधं प्रोक्तं वृक्षो गुल्मं लताक्रमात् ।

वल्ली कन्दं पञ्चवर्गैः कटुतिक्तकषायकाः ॥ ८१ ॥
अम्लक्षाररसास्तद्वच्छिन्नाछिन्ने परोत्तरैः ।
त्वक्पत्रपुष्पाणि फलं निर्यासं पञ्चवर्गकैः ॥ ८२ ॥

मूलयोनि पांच प्रकारकी कही है । वृक्ष १, गुच्छ २, लता ३, वल्ली ४, कन्द ५, इनको अवर्गादि नव वर्गोंके पांच वर्ग करके क्रमसे जान लेना चाहिये, तद्वत्कटुकादि रसभी समझ लेना, त्वचादि भी पूर्वोक्त प्रकारसे जान लेना, उत्तरवर्णोंसे अच्छिन्न और अधरवर्णोंसे छिन्न, जान लेना चाहिये । प्रश्नश्रेणीका आचर्ण वशात् यह पूर्वोक्त समझ लना चाहिये, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ७९ ॥

अ	ए	क	च	ट	त	प	य	श	वृक्ष, कटुरस, त्वक्, अच्छिन्न ।
आ	ऐ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	गुल्म् तिक्तरस, पत्र, छिन्न ।
इ	ओ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	लता, कषायरस, पुष्प अछिन्न ।
ई	औ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	वल्ली, अम्लरस, फल, छिन्न ।
उ ऊ	अं अः	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	कन्द, क्षाररस, निर्यास (गुंद) छिन्नाछिन्न

पिंडेन चाह ।

सूक्ष्माख्यपिण्डं पृथगाप्तलब्धं युतं शराप्तं तरुपूर्वयोनिः ।
लब्धाढ्यपिंडं शरहृत् रसा स्युः स्निग्धं तथाद्यैः परिशेषमुक्तात् ॥ ८३ ॥

मूलयोनिका भेद कहनेमें सूक्ष्मचक्रसे पिंडोत्पादन करना, उसको दो जगह स्थापन करना, एक जगह ३ से भाग लेना, लब्धको द्वितीय स्थानमें युक्त करना, ५ । भाग देना शेषांकसे तरुपूर्व योनि जान लेना, लब्धयुक्त पिंडमें ५ का भाग देना एकादि शेष करके कटुकादि रस जान लेना । उत्तरवर्णोंकी स्निग्धसंज्ञा कही है, अधरवर्णोंकी शुष्कसंज्ञा कही है । परिशेष भाम आकारादिक जो है, सो संज्ञा प्रकरणोक्तवत् जान लेना चाहिये । यथा, सूक्ष्माख्यपिण्डं ६५ पृथक ६५ रामै ३ लब्धेन २१ युतं ८५ पञ्चविभक्तं शेषं १ तरुयोनिर्जाता । पिण्डं ६५ पञ्च ५ भक्तेन लब्धेन १७ युक्तं ८२ पञ्च ५ भक्तं शेषं २ तिक्तरसस्तरुः । प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णसे आर्द्र शुष्क भेद जान लेना ॥ ८३ ॥

वटशालनिम्बपूर्वाः करवीरकरीरकुन्दकर्पासाः ।
कूष्माण्डाद्याः कुशतृणगोधूमाद्या हरिद्राद्याः ॥ ८४ ॥

वट शाल निम्ब इत्यादि वृक्ष कहे हैं, करवीर करीर कुन्द कर्पासादिक गुल्म कहे हैं, कूष्माण्डादिक लता कही है, कुश तृण गोधूमादिक वल्ली कही है, हरिद्रादिक कन्द कहाहै ॥ ८४ ॥

पिण्डेन चाह ।

श्रेण्याद्यर्णाङ्काहतं वर्णपिण्डं द्वाभ्यां तष्टं स्यादभिन्नं च भिन्नम् । अस्मिन् भेदाः पञ्च चोक्तास्त्वगाद्याः कन्दे भेदाः संविमृश्योहनीयाः ॥ ८५ ॥

वर्णपिण्डको प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णके वर्गांकसे गुणा करै, उसमें दोका भाग देना, १ शेष बचे तो अच्छिन्न कहना चाहिये, शून्य शेष बचे तो छिन्न कहना चाहिये । त्वगादिक पांच प्रकारका कहा है, कन्दका भेद देश व्यवस्थासे जान करके कहना चाहिये ।

यथा, वर्णपिंडं ३२ श्रेण्यादि वर्गांकेन १० हतं ३२० द्वाभ्यां २ तष्टं शून्यशेषत्वात् छिन्नामिति ॥ ८५ ॥

श्रेणीसुखं यद्यधराणंयुक्तं तदाधराङ्कैर्वियुता: श्रुतीभाः ८४ ॥ यद्युत्तराद्यं च तदर्णपिंडे युक्तं श्रुतीभैः शर-हृत्खगादिः ॥ ८६ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें अधर वर्ण होय तो चतुरशीति ८४ में अधरवर्ण पिण्डको हीन करै, उत्तर वर्ण होय तो चतुरशीतिमें उत्तरवर्ण पिण्डको युक्त करै, उसमें पांचका भाग देना, एकादि शेष करके खगादिक क्रमसे जान लेना, इस उदाहरणमें उत्तर सुख श्रेणी है। यथा, वर्णपिण्डं ३२ श्रुतीभै ८४ युक्तं ११६ पञ्चभक्तं शेषं १ खगिति ॥ ८६ ॥ अत्र मुष्टिकूकागतं पूर्वोक्तरीत्यैव ज्ञात्वा वदेत् ॥

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां मूकादिगतजीवादिप्रकरणं तृतीयम् ।

अथ नामबन्धप्रकरणम् ।

अथ सर्वोपजीविनामबन्धप्रकरणमाह ।

कु १ द्वि २ त्र्य ३ ब्धी ४ षु ५ सप्त ७ द्वि २ युग ४ रस ६ रसा ६ ग्नी ३ षवो ५ मात्रिकाङ्का वर्णाङ्कैः सूक्ष्मचक्रादधरपरभवं राशियुग्मं विधाय । आदौ चेदुत्तरार्णं तदधररहिता उत्तराङ्का यदादौ नीचं योगस्वराङ्कैर्गुणित ऋषिहृतः शेषितैर्नामवर्णाः ॥ १ ॥

दश श्लोकों करके नामका निष्कासन करते हैं, अकारादि द्वादश मात्राका एकादि क्रमसे अंक जान लेना और वर्णांक सूक्ष्म चक्रसे उत्पादन करै, फिर उत्तराधर वर्णजन्य पिण्डको पृथक् २ स्थापन

करै, प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर होय तो अधरवर्ग पिण्डको उत्तर वर्णपिण्डमें हीन करै, श्रेणीका प्रथम वर्ण अधर होय तो दोनोंका योग करै, फिर मात्रांकसे गुणा करै उसमें सातका भाग देना शेषांकसे नामका वर्ण जानना । यथा, सूक्ष्मचक्रादधरवर्णपिण्डम् ११ उत्तरवर्णपिंडं २९ मात्रापिण्डं ८ अत्रादौ उत्तरवर्णस्तेन अधरांका ११ रहिता उत्तरा २९ जाता १८ स्वरांकै ८ गुंणिताः १४४ सप्त ७ भक्ताःशेषे ४ श्चतुरक्षरं नामेति सर्वत्र ॥ १ ॥

१ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
१	२	३	४	५	७	२	४	६	६	३	५

प्रकारान्तरेणाह ।

समाङ्कमुत्तरैर्नाम विषमाङ्कं तथाधरैः ।
मिश्रयोरधिकेनात्र समं विषममेव च ॥ २ ॥

उत्तरवर्णोंसे समांक नाम कहना, दो चार वर्णका अधरवर्णोंसे विषमांक नाम कहना, एक तीन पांच वर्णका प्रश्नश्रेणीमें उत्तरवर्ण अधिक होय तो समांक नाम कहना, अधरवर्ण अधिक होय तो विषमांक नाम कहना, जो उत्तराधर समान होय तो आद्यवर्णसे नाम कहना चाहिये ॥ २ ॥

प्रकारान्तरेण वर्णसंख्यामाह ।

द्वाभ्यामेकर्द्धितो नाम षड्भिः संयुक्तपूर्वकैः ।
आलिङ्गाद्यैस्त्रिपञ्चार्णं चतुरर्णं चतुर्द्धिकम् ॥ ३ ॥

संयुक्तादि ६ पक्षोंका द्वित्र्यादि संख्यासे नामका वर्ण कहना चाहिये, आलिङ्गित प्रश्न होय तो तीन पांच वर्णका नाम कहना, चाहिये अभिधूम्र प्रश्न होय तो चार वर्णका नाम कहना, दग्ध

प्रश्न होय तो दो चार वर्णका नाम कहना । यह चक्रमें अस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ३ ॥

३ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	अभिघात	अनभिघात	आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध
२	३	४	५	६	७	३।५	४	२।४

तत्र प्रथमवर्णज्ञानमाह ।

संयुक्तऽचतयैकवर्गजनितः प्रश्ने भवेत्तस्य यो नाम्नोऽर्णः प्रथमोऽथ कादिषु बुधैर्ज्ञेयोऽभिघातादिषु । संयुक्तादिगजैः शरा ५ ङ्ग ६ मुखजा ७ ष्टा ८ ब्ध्य ४ ग्नि ३ खैः प्रश्नजैः कुब्जान्धाद्यवशेषितं च सुधिया बोध्यं च पूर्वोक्तवत् ॥ ४ ॥

सयुक्त प्रश्न होय तो प्रश्नकर्त्ताके विचारित वस्तुका किंवा चौरादिकोंके नामका प्रथम वर्ण अ च त य इन चतुर्वर्गोंके बीचमें किसी वर्गका वर्ण समझना चाहिये, और अभिघात प्रश्न होय तो कवर्गका वर्ण कहना, आलिङ्गित प्रश्न होय तो चवर्गका वर्ण कहना, अभिधूम्र प्रश्न होय तो टवर्गका वर्ण कहना, दग्धप्रश्न होय तो तवर्गका वर्ण कहना, अनभिहित प्रश्न होय तो पवर्गका वर्ण कहना, अभिहित प्रश्न होय तो यवर्गका वर्ण कहना, असंयुक्त प्रश्न हो तो शवर्गका वर्ण कहना, और कुब्जान्धादिक लक्षण संज्ञाप्रकरणोक्तवत् पण्डितोंको कहना योग्य है ॥ ४ ॥

४।५ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	अभिघात	आलिङ्गित	अभिधूमित	दग्ध	पक्षाः
अ च त य	श	य	प	क	च	ट	त	वर्गाः
२	३	४	५	६	७	८	९	गुणकाः

अथ पूर्वजातान् समस्तवर्णान् स्वरूपतश्चिकीर्षु-
स्तदर्थं गुणांकानाह ।

द्वि २ त्र्य ३ ब्धी ४ ष्वं ५ ग ६ सप्ता ७ ष्ट ८ नन्दाः ९ स्युर्नामबन्धने । संयुक्तादिगुणा एते ग्राह्या नो पूर्वकीर्तिताः ॥ ५ ॥

नामप्रबन्धके प्रकारमें असंयुक्तादि पक्षोंका द्वित्र्यादि गुणका ग्रहण करना, पूर्वोक्त ग्रहण नहीं करना, संयुक्तप्रकरणका कहा हुआ, तदुक्तं संयुक्ते तद्द्विगुणमित्यादि ॥ ५ ॥

पिंडं संयुतपूर्वचक्रजनितं निघ्नं गुणेनाष्टहृद्वर्गः पिंडयुतं च लब्धमिषुहृद्वर्णो भवेच्चादिमः । वेदाप्तं यशयोरथाग्नियुतपिंडं नागहृद्वर्णजो वर्गश्चैव पुनः पुनश्च रचयेन्नामर्णसंख्यावधिः ॥ ६ ॥

संयुक्तादि चक्रजन्य पिण्डको स्वगुणकसे गुणा करना, उसमें आठका भाग देना शेषाङ्कसे अवर्गादि वर्ग समझ लेना, आठका भाग देनेसे जो लब्ध होय उसको पिण्डमें युक्त करना, उसमें पांचका भाग देना, शेषाङ्कसे उस वर्गका वर्ण समझ लेना चाहिये । और यवर्ग शवर्गमें चारका भाग देनेसे वर्ण प्राप्त होवेगा फेर लब्धको

पिण्डमें युक्त करना उसमें आठका भाग देना, शेषाङ्कसे द्वितीय वर्ग समझ लेना, लब्धको पिण्डमें युक्त करना उसमें पांचका भाग देना, शेषाङ्कसे द्वितीय वर्गका वर्ण समझ लेना इसी प्रकार वारंवार करै नामका वर्णसंख्या पर्यन्त यथा, पिण्डं ४१ अत्रानभिघाताभावाद-भिघातगुणेनानेन ६ गुणितं २४६ अष्ट ८ हृतं शेषं ६ पवर्गो जातः लब्धं ३० पिण्ड २४६ युतं २७६ पञ्च ५ भक्तं शेषं १ पवर्णो जातः। अथ प्रथमाक्षरकथनानन्तरं आप्त्या ५५ युतं पिण्डं २७६ जातं ३३१ नाग ८ हृतं शेषं ३ द्वितीयवर्गश्चवर्गः लब्धं ४१ पिण्ड ३३१ युतं ३७२ पञ्चहृतं शेषं २ छकारो द्वितीयाक्षरः लब्धं ७४ पिण्ड ३७२ युतं ४४६ अष्ट ८ हृतं शेषं ६ पवर्गस्तृतीयः। लब्धं ५५ पिण्ड ४४६ युतं ५०१ पञ्च ५ हृतं शेषं १ पवर्णस्तृतीयः। लब्धं १०० पिण्ड ५०१ युतं ६०१ अष्ट ८ हृतं शेषं १ अवर्गश्चतुर्थः। लब्धं ७५ पिण्ड ६०१ युतं ६७६ पञ्चहृतं शेषं १ अकारश्चतुर्थवर्णः एवं जाता नामवर्णाः प १ छ २ प ३ अ ४ एवं सर्वत्र ॥ ६ ॥

तेषु मात्राज्ञानमाह।

पिण्डे संयुक्तादिजाद्यवर्णवर्गाङ्कघ्नेऽर्का १२ प्ते नाम-
जाद्यवर्णमात्रा। लब्धेनाढ्यात् पिण्डतोऽर्का १२ वशेषे
द्व्यर्णे मात्रा चैवमेवं पुनश्च ॥ ७ ॥

संयुक्तादि चक्रजनित प्रथम वर्णको वर्गाङ्कसे गुणा करै, बारह १२ का भाग देना एकादि शेष करके अकारादि मात्रा समझ लेना, फेर लब्धको पिण्डमें युक्त करके बारहका भाग देना एकादि अकारादिक मात्रा द्वितीय वर्णकी समझ लेना, इसी प्रकार वारंवार करना। यथा, अत्रादिवर्णस्य पकारस्य वर्गांक ६ स्तेन पिण्डे ४१ गुणिते २४६ द्वादशभक्ते शेषं ६ नाम्नि जातो यः प्रथमो वर्णः पस्तस्य मात्रा ऊ लब्धेन २० युक्तात् पिण्डात् २६६ अर्कैरवशेषं २ द्वितियवर्णः छकारस्य मात्रा आ लब्धेन २२ युक्ता-

त्पिण्डात् २८८ द्वादशहृते शेषं १२ तृतीयवर्णपकारस्य मात्रा अः लब्धेन २४ युक्तात्पिण्डात् ३१२ चतुर्थो वर्णः अवर्गजस्तेन द्वितष्टान्मात्रा ज्ञेया । तदुक्तं वृद्धैः अवर्गे ह्रस्वदीर्घाख्ये मात्रा ज्ञेये मनीषिभिरिति द्वितष्टे शेषं १ ह्रस्वमात्रा जाता ॥ ७ ॥

यावन्नामार्णसंख्या स्यात्तावत्कृत्वा पुनः पुनः ।
नामार्णार्चां क्रियां तद्वद्युक्तान् नाम वदेत्सुधीः ॥ ८ ॥

जितने नामके वर्ण होंय उतनीही संख्या नामके वर्णके मात्राके आनयनमें क्रिया करे, सुधी पद ग्रहण करनेसे देश काल विचार करके पूर्वोत्पन्न वर्णोका योग करके नामको कहना चाहिये सो दिखाते हैं । पूछा पः अ इस उदाहरणमें तीसरे वर्णमें विसर्ग स्वर है इसवास्ते तीन अक्षरका नाम हुआ ऐसा रुद्रका मत है । तदुक्तं वृद्धैः द्वित्र्यादिष्वेव वर्णेषु विसर्गो यदि दृश्यते । तदा तदन्तं नाम स्यादिति शंभुमतं स्मृतमिति ॥ ८ ॥

अथ प्रकारान्तरेण चाह ।

द्व्यर्काः १२२ पञ्चेषुचन्द्रा १५५ गजरसशशिनो
१६८ द्व्येकयुक् २१७ सिद्धपक्षाः २२४ पञ्चेभाक्षीणि २८५ शून्यं द्विरदकरमिताः २९० चन्द्रवेदाग्नितुल्याः ३४१ । वर्गाङ्काश्चाथ हत्वा १८ हिमकिरणगुणै ३१ र्द्व्यग्निभि ३२ र्देवताभि ३२ र्द्विः शक्रै २८ स्तत्त्वतुल्यै २५ र्द्विरदकरमितै २८ र्भूगुणै ३१ र्वृद्धितोर्णैः ॥ ९ ॥

अवर्गादि अष्टवर्गोका एकसौ बाईससे संख्या क्रमसे जान लेना, उन वर्गोका वर्ण है सो ध्रुत्यादि संख्या करके एकोत्तर वृद्धिसे पूर्त्ति करना, इसका चक्र प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ ९ ॥

९ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

अ १२२	आ १४०	क १५५	च १६८	ट २१७	त २२४	प २८०	य २८०	श ३४१
इ १५८	ई १७६	ख १८६	छ २००	ठ २५०	थ २५२	फ ३१०	र ३०८	ष ३७२
उ १९४.	ऊ २१२	ग २१७	ज २३२	ड २८३	द २८०	ब ३३६	ल ३३६	स ४०३
ए २२०	ऐ २४८	घ २४८	झ २६४	ढ ३१६	ध ३०८	भ ३६०	व ३६४	ह ४३४
ओ २६६	औ २८४	ङ २७९	ञ २९६	ण ३४९	न ३३६	म ३८५	अं ३०२	अः ३२०

पिण्डं चेन्नीचवेला खदहतगुणितं गोद्वियुक्तं गजाप्तं
प्राग्वद्वर्णो यदाप्ता खरसगुणितमङ्केषु युक्तं गजाप्तम् ।
वर्गो लब्धाढ्यपिण्डे विशिखमितिहृतं तज्जवर्णौ यशौ चेद्वे-
दाप्तं मात्रिकाद्यं निखिलमपि बुधैः प्राग्वदत्रापि
बोध्यम् ॥ १० ॥

आधरीवेलामें प्रश्न होय तो नवम श्लोकसे उत्पन्न भया जो पिंड उसको तीससे गुणा करै, फेर एकोनत्रिंशत् २९ युक्त करै, उसमें आठका भाग देना, अवशिष्टाङ्कसे अवर्गादिक वर्ग जान लेना, फेर लब्धको पिंडमें युक्त करके उसमें पांचका भाग देना शेषांकसे उस वर्गका वर्ण जान लेना, इसी प्रकार वारंवार करना । और औत्तरी· वेलामें प्रश्न होय तो पिंडको ६० से गुणा करना, फेर नवपञ्चाशत् युक्त करके उसमें आठका भाग देना शेषांकसे अवर्गादिक वर्ग जानना, फेर लब्धको पिंडमें युक्त करके पांचका भाग देना, अव· शिष्ट अंकसे उस वर्गका वर्ण जान लेनां, इसी प्रकार वारंवार करना यवर्ग शवर्गका वर्ण चारका भागसे जान लेना, और मात्रा पूर्वोक्त प्रकार करके यहां भी जान लेना चाहिये ।·यथा, पिंड १७८९ अत्रा·

धरीवेला तेन त्रिंशद्गुणितं ९३५५० गोद्विः २९ युक्तं ९३५७९ गर्जे-राप्तं ६६९७ शेषं ३ चवर्गो जातः प्रथमाक्षरस्य लब्धेन ६६९७ पिण्डं ९३५७९ युतं ६०२७६ पंचहृतं १२०५५ शेषं १ चकारः प्रथमो वर्णः लब्धेन १२०५५ पिण्डम् ६०२७६ युतं ७२३३१ अष्टहृतं ९०४१ शेषं ३ द्वितीयाक्षरस्यापि चवर्गः लब्धेन ९०४१ पिंडं ७२३३१ युतं ८१३७२२२२ पञ्चभक्तं १६२७४ शेषं २ छकारो जातः एवमन्यत्रापि मात्रिकाद्यं तु प्राग्वत् तत्र पिंडे १७८९ संयुक्तादि चक्रवर्गाकेन ६ गुणिते जातं १०७१० द्वादशहृते ८९२ शेषं ६ ऊ मात्रापिंडे १०७१० लब्धेन ८९२ युते ११६०२ द्वादशहृते ९६६ शेषं १० औ-मात्रायोग चूछौ एवं सर्वत्र पण्डितोंको देश काल विचार करके स्व बुद्ध्यनुसार नाम कहना चाहिये ॥ १० ॥

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां
नामबन्धप्रकरणं चतुर्थम् ।

अथ मिश्रप्रकरणम् ।

तत्र प्रथमं चौरज्ञानं दशभिर्विवक्षुस्तत्र नष्टद्रव्य-स्थितिमाह ।

संयुक्ते गृहमध्ये द्रव्यं स्यान्नो ह्यसंयुक्ते ।
युक्तयुतालिङ्गाद्यैर्भित्तौ चाधोऽस्ति लूकास्थम् ॥ १ ॥

चोरप्रश्नमें प्रथम नष्टद्रव्यका स्थान निश्चय करते हैं। संयुक्त प्रश्न होय तो स्वगृहमें द्रव्य कहना, संयुक्तव्यतिरिक्त प्रश्न होय तो स्वगृह-से बाह्य द्रव्य कहना, आलिंगित स्वरयुक्त संयुक्त प्रश्न होय तो भित्ति-में द्रव्यस्थिति कहना, और अभिधूम्र स्वरयुक्त संयुक्त प्रश्न होय तो अधोभूमिमें द्रव्यस्थिति कहना, दग्धस्वरयुक्त संयुक्त प्रश्न होय तो लूकामें अर्थात् संदूकमें द्रव्यस्थिति कहना चाहिये ॥ १ ॥

पिण्डेन चाह ।

श्रेणिघ्नं वर्गपिंडं स्यान्मात्राङ्काढ्यं युगैर्हृतम् ।
गहमध्ये कुमध्ये चोर्ध्वदेशे तस्करागृहे ॥ २ ॥

वर्गपिंडको श्रेणीसंख्यासे गुणा करै, फेर मात्रांकयुक्त करै, उसमें चारका भाग देना, एक शेष रहे तो स्वगृहमें नष्ट द्रव्य कहना, दो शेष रहे तो पृथ्वीमें द्रव्य कहना, तीन शेष रहे तो ऊर्ध्वदेशमें द्रव्य कहना, अर्थात् पर्वतके ऊपर वा वृक्षके ऊपर, गवाक्षादिकोंमें कहना, शून्य शेष होय तो चौरके घरके समीप नष्टद्रव्य कहना चाहिये । यथा, वर्गपिण्डं २५ श्रेणि ४ घ्नं १०० मात्राङ्कैः ९ युक्तं १०९ युग ४ भक्तं शेषं १ गृहमध्य एव नष्टद्रव्यम् ॥ २ ॥

तल्लाभालाभज्ञानमाह ।

उत्तरोत्तरमुखोत्तरपूर्वे लाभ उक्त परगे नहि लाभः ।
सैकवृद्धियुतपूर्वभवाङ्कैः संयुतादिगजपक्षसमुत्थैः ॥ ३ ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथमवर्ण उत्तरोत्तर होय वा उत्तर होय तो नष्ट वस्तुका लाभ कहना, अधराधरवर्ण होय वा अधरवर्ण होय तो लाभ नहीं कहना । अब पिंडद्वारा कहते हैं, संयुक्त पूर्व जिस पक्षका प्रश्न होय उसी पक्षके चक्रसे पिंडोत्पादन करना, नष्टद्रव्यका लाभालाभ ज्ञानके विषयमें पूर्वोक्त पिण्डको नहीं ग्रहण करना ॥ ३ ॥

३ श्लोकोक्तं संयुक्ताद्यष्टपक्षचक्रम् ।

अ ४	आ ५	क ५	च ६	ट ७	त ८	प ९	य १०	श ११
इ ६	ई ७	ख ६	छ ७	ठ ८	थ ९	फ १०	र ११	ष १२
उ ८	ऊ ९	ग ७	ज ८	ड ९	द १०	ब ११	ल १२	स १३
ए १०	ऐ ११	घ ८	झ ९	ढ १०	ध ११	भ १२	व १३	ह १४
ओ १२	औ १३	ङ ९	ञ १०	ण ११	न १२	म १३	अं १४	अः १५

असंयुक्तचक्रम् ।

अ ६	आ ७	क ७	च ८	ट ९	त १०	प ११	य १२	श १३
इ ८	ई ९	ख ८	छ ९	ठ १०	थ ११	फ १२	र १३	ष १४
उ १०	ऊ ११	ग ९	ज १०	ड ११	द १२	ब १३	ल १४	स १५
ए ११	ऐ १२	घ १०	झ ११	ढ १२	ध १३	भ १४	व १५	ह १६
ओ १४	औ १५	ङ ११	ञ १२	ण १३	न १४	म १५	अं १६	अः १७

अभिहितपक्षचक्रम् ।

अ ४	ए ५	क ६	च ७	ट ८	त ९	प १०	य ११	श १२
आ ५	ऐ ६	ख ७	छ ८	ठ ९	थ १०	फ ११	र १२	ष १३
इ ६	ओ ७	ग ८	ज ९	ड १०	द ११	ब १२	ल १३	स १४
ई ७	औ ८	घ ९	झ १०	ढ ११	ध १२	भ १३	व १४	ह १५
उ ८	अं ९	ङ १०	ञ ११	ण १२	न १३	म १४	ऊ ९	अः १०

अनभिहितपक्षचक्रम् ।

अ ५	ए ६	क ७	च ८	ट ९	त १०	प ११	य १२	श १३
आ ६	ऐ ७	ख ८	छ ९	ठ १०	थ ११	फ १२	र १३	ष १४
इ ७	ओ ८	ग ९	ज १०	ड ११	द १२	ब १३	ल १४	स १५
ई ८	औ ९	घ १०	झ ११	ढ १२	ध १३	भ १४	व १५	ह १६
उ ९	अं १०	ङ ११	ञ १२	ण १३	न १४	म १५	ऊ १०	अः ११

अभिघातानभिघातयोश्चक्रम्

अ ६	ए ७	क ८	च ९	ट १०	त ११	प १२	य १३	श १४
आ ७	ऐ ८	ख ९	छ १०	ठ ११	थ १२	फ १३	र १४	ष १५
इ ८	ओ ९	ग १०	ज ११	ड १२	द १३	ब १४	ल १५	स १६
ई ९	औ १०	घ ११	झ १२	ढ १३	ध १४	भ १५	व १६	ह १७
उ १०	अं ११	ङ १२	ञ १३	ण १४	न १५	म १६	ऊ ११	अः १२

आलिङ्गितपक्षचक्रम् ।

अ ७	आ ८	क ८	च ९	ट १०	त ११	प १२	य १३	श १४
इ ९	ई १०	ख ९	छ १०	ठ ११	थ १२	फ १३	र १४	ष १५
उ ११	ऊ १२	ग १०	ज ११	ड १२	द १३	ब १४	ल १५	स १६
ए १३	ऐ १४	घ ११	झ १२	ढ १३	ध १४	भ १५	व १६	ह १७
ओ १५	औ १६	ङ १२	ञ १३	ण १४	न १५	म १६	अं १७	अः १८

अग्निधूम्रपक्षचक्रम् ।

अ ८	आ ९	क ९	च १०	ट ११	त १२	प १३	य १४	श १५
इ १०	ई ११	ख १०	छ ११	ठ १२	थ १३	फ १४	र १५	ष १६
उ १२	ऊ १३	ग ११	ज १२	ड १३	द १४	ब १५	ल १६	स १७
ए १४	ऐ १५	घ १२	झ १३	ढ १४	ध १५	भ १६	व १७	ह १८
ओ १६	औ १७	ङ १३	ञ १४	ण १५	न १६	म १७	अं १८	अः १९

दग्धपक्षचक्रम् ।

अ ९	आ १०	क १०	च ११	ट १२	त १३	प १४	य १५	श १६
इ ११	ई १२	ख ११	छ १२	ठ १३	थ १४	फ १५	र १६	ष १७
उ १३	ऊ १४	ग १२	ज १३	ड १४	द १५	ब १६	ल १७	स १८
ए १५	ऐ १६	घ १३	झ १४	ढ १५	ध १६	भ १७	व १८	ह १९
ओ १७	औ १८	ङ १४	ञ १५	ण १६	न १७	म १८	अं १९	अः २०

युक्तादिगजसंख्याघ्नी संख्यायाः स्वरवर्णजा ।
युक्ता च पूर्वपिण्डेन पिंडं तस्करहृद्धने ॥ ४ ॥

प्रकारान्तरसे पिंड बनाते हैं प्रश्नश्रेणीका स्वरवर्णसंख्याको संयुक्तादि पक्षसंख्यासे गुणा करै, उसको पूर्व पिंडमें युक्त करै तो तस्करहृत धनका लाभालाभ ज्ञानमें वही पिंड हो जायगा । यथा वर्णसंख्या ४ मात्रासंख्या ४ संयुक्तादिप्रश्नसंख्यया ५ गुणिता २० । २० युक्ता ४० पूर्वपिंडे ४१ योजिता ८१ तच्चऋजनितमेव पिंडं भवति ॥ ४ ॥

पिण्डयुक्तगुणनिघ्नमजङ्कैः संयुतं नगहृतं विषमाङ्कैः ।
नष्टलाभ उदितो न समाङ्कैराद्विकैर्मधुमुखा ऋतवोऽर्कैः ॥५॥

अजङ्क नाम वर्णपिण्डको स्वगुणकसे गुणा करै, मात्रांक युक्त करै उससे सातका भाग देना, शेष विषमांक होय तो नष्ट द्रव्यका लाभ कहना, समांक होय तो लाभ नहीं कहना । लाभके समयका निश्चय करते हैं । अकारादि द्वादश मात्राके वसन्तादि छः ऋतु जानना, दो दो मात्राका एक एक ऋतु होता है सो चक्रमें देख लेना । प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्णजन्य मात्रा करके ऋतु कहना, नष्ट

द्रव्यका तत्तदृतुमें लाभ कहना, इस उदाहरणमें वसन्त ऋतुमें लाभ जानना ॥ ५ ॥

५ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

अ आ	इ ई	उ ऊ	ए ऐ	ओ औ	अं अः
वसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरत्	हेमन्त	शिशिर
चैत्र वैशाख	ज्येष्ठ आषाढ	श्रावण भाद्रपद	आश्विन कार्तिक	मार्गशीर्ष पौष	माघ फाल्गुन

तत्र मासपक्षतिथिज्ञानमाह ।

उत्तरवर्णैः काद्यैः शुक्ले तिथयोऽपरैः खाद्यैः ।
कृष्णे दग्धाज्वर्णैः पिण्डे द्व्याप्ते तयोरन्तौ ॥
ह्रस्वस्वरसंयोगे पूर्वो मासः परो दीर्घैः ॥ ६ ॥

अकारादि उत्तरवर्णोंकी शुक्लप्रतिपदादि चौदह तिथि कही हैं, खकारादि अधरवर्णोंकी कृष्णप्रतिपदादि चौदह तिथि कही हैं, दग्ध स्वरवर्ण होय तो पिण्डमें दोका भाग देना, एक रहे तो शुक्लपौर्णमासी कहना० शेष रहे तो कृष्ण अमावस्या कहना चाहिये । श्रेणीके आद्यर्णमें ह्रस्व मात्रा होय तो पूर्व मास कहना, दीर्घमात्रा होय तो द्वितीय मास कहना । यथा, अत्रादाहरणे आमात्रा तेन वसन्त ऋतुः दीर्घस्वरत्वाद् द्वितीयो वैशाखः दग्धाक्षरत्वात्पिण्डे ४१ गुणक १७ घ्न ६९७ द्वि २ हृते शेषं १ पौर्णमासी जाता एवं सर्वत्र ॥ ६ ॥

६ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथयः
क	ग	च	ज	ट	ड	त	द	प	ब	य	ल	श	स	शुक्लपक्ष उत्तर वर्ण
ख	घ	छ	झ	ठ	ढ	थ	ध	फ	भ	र	व	ष	ह	कृष्णपक्ष अधरवर्ण

कस्यां दिशि तद्द्रव्यं तदाह ।

आलिङ्गितानेहसि वर्णपिण्डे श्रेणीहते नागहतेऽवशेषात् ।
पूर्वादिदिक्चेदभिधूमितं स्यादर्कघ्नमात्राङ्कयुगर्णपिंडे ॥ ७ ॥
प्रश्नाक्षराढ्ये गजशेषिते स्यात्पूर्वादिदिक्चेदिह दग्ध-
वेला । स्यात्केवले पिण्ड इभाप्तशेषे पूर्वादिदिक् नष्टधने
च चौरे ॥ ८ ॥

नष्ट द्रव्यका दिशाका ज्ञान करते हैं, आलिङ्गित वेलामें प्रश्न होय तो पिण्डको प्रश्नवर्णसंख्यासे गुणा करै, उसमें आठका भाग देना, एकादि शेष करके पूर्वादि दिशा जान लेना, जो अभिधूम्र वेलामें प्रश्न होय तो द्वादश गुणित मात्रापिण्डको वर्णपिण्डमें युक्त करना, फेर श्रेणीसंख्या युक्त करके उसमें आठका भाग देना, शेषांकसे पूर्वादि दिशा जान लेना, जो दग्ध वेलामें प्रश्न होय तो केवल पिण्डहीमें आठका भाग देना शेषांकसे नष्टद्रव्य चौरकी दिशा जान लेना । यथा, वर्णपिंडे ३२ श्रेणी ४ हते १२८ नाग ८ हृते शेषं ८ ईशदिक् जाता । अभिधूमित कालः स्यात्तदार्के १२ घ्नमात्रांकै ९ र्जाते १०८ र्युक्त्वार्णं ३२ पिण्डे १४० श्रेणी ४ युते १४४ नागहृते शेषं ८ ईश दिक् । दग्धवेला स्यात्तदा केवले पिंडे ४१ इभा ८ प्त शेषे १ पूर्वदिक् जाता ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथ चौरसंख्यामाह ।

संयुक्ताद्यष्टभिः प्रश्नैश्चौरसंख्यां वदेद्बुधः ।
सांगाब्ध्य ४६ र्णाङ्काद्यजङ्काहति नागहृता तथा ॥ ९ ॥

संयुक्तादि आठ पक्षोंकरके पंडितोंको चोरसंख्या कहना चाहिये । यथा, संयुक्त प्रश्न होय तो एक चोर कहै, असंयुक्त प्रश्न होय तो दो चोर कहै, इसी प्रकार जान लेना, वर्णपिंडमें षट्च-त्वारिंशत् ४६ युक्त करै, फेर श्रेणीके प्रथम वर्णमें जो स्वर होय

इसकी संख्यासे गुणा करै उसमें आठका भाग दे शेषांकसे चोर-संख्या कहे । यथा, साङ्गाऽधप ४६ अ ते वर्णाङ्का ३२ अ ७८ तेषा-माद्येज् आकारस्तस्य अङ्कौ द्वौ २ अनयोर्हति १५६ नाग ८ हृता ४ जाताश्चौरसंख्या चत्वारश्चौराः ॥ ९ ॥

मुख्यचौरस्य नामज्ञानमाह ।

उत्तरार्णाऽधराज्योगेऽसमांकव्यत्ययेऽन्यथा ।
समांकं स्यादुत्तरयोः परयोर्विषमार्णयुक् ॥
पिंडं सप्तहृतं वा स्यात्संख्या तन्नाम वर्णजा ॥ १० ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर होय और मात्रा अधर होय तो विषमाक्षर नाम कहना, अधर वर्णऔर उत्तर स्वर होय तो समाक्षर नाम कहना, स्वरवर्ण दोनों उत्तर होय तो समाक्षर नाम कहना, स्वरवर्ण दोनों अधर होय तो विषमाक्षर नाम कहना । पिण्डद्वारा कहते हैं, पिंडं ६९७ सप्त ७ हृतं शेषं ४ जाता नामवर्णसंख्या ४ इति ॥ १० ॥

९ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	अभिघात	आलिङ्गित	अभिधूम्रित	दग्ध	प्रश्नाः
१	२	३	४	५	६	७	८	चौराः

प्रथमाक्षरज्ञानमाह ।

चोरमितिघ्ना श्रेणीपिण्डे नाढ्याऽष्टभि ८ स्तष्टा ।
क १ टा ८ गा ७ ङ्गे ६ च ५ त्रय ३ ध्य ४
श्वि २ मितैः शेषितैर्ज्ञेयः । आदिष्वादिमवर्णो वर्गेषु
मौढचौरस्य ॥ ११ ॥

चोरसंख्या गुणित श्रेणीको पिंडमें युक्त करै, उसमें आठका भाग देना शेषांकसे अवर्गादि वर्गोंका वर्ण मुख्य चौरका नामका प्रथम वर्ण जान लेना। यथा, श्रेणि ४ चौरप्रमाणेन ४ गुणिताः १६ पिंडेन ४१ युक्ता ५७ अष्ट ८ तष्टा १ मौढ चौरस्य एक शेषे सति अवर्गे नाम्न आदिवर्णः ॥ ११ ॥

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां चौरप्रश्नम्।

अथ गमनप्रश्नमाह।

अधराजाद्वर्णयुतौ शीघ्रं गमनं न चोत्तराज्युक्ते।
पिण्डाष्ट ८ हतिः शैलैस्तष्टायानं समांकैः स्यात् ॥ १२ ॥

प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णमें अधरमात्रा होय तो शीघ्र गमन कहना, उत्तर मात्रा होय तो गमन नहीं कहना, पिण्डको आठसे गुणा करै, उसमें सातका भाग देना, शेष समाङ्क होय तो गमन कहना, विषमांक होय तो गमन नहीं कहना चाहिये। यथा पिण्डस्य ४१ अष्टभि ९ र्हतिः ३२८ शैलै ७ स्तष्टे ६ समांकैर्यानं स्यात् ॥ १२ ॥

अथागमनप्रश्नमाह।

वर्णाङ्का द्विगुणास्त्रिघ्ना मात्रांकाढ्या द्विभाजिताः।
एकेनागमनं शीघ्रं शून्येन स्याद्विलम्बतः ॥ १३ ॥

वर्णपिण्डको द्विगुण करै, उसमें त्रिगुणित मात्रापिण्ड युक्त करके दोसे भाग ले एक बचे तो शीघ्र आगमन कहना, शून्य शेष होय तो विलम्बसे आगमन कहना। यथा, वर्णाङ्काः ३२ द्विगुणाः ६४ त्रि ३ घ्ना मात्रांका २७ युता ९१ द्विभक्ताः शेषं १ शीघ्रमागमनम् ॥ १३ ॥

अथ रोगिप्रश्नमाह।

स्याज्जीवनं व्याधिमृतिक्रमेण चालिङ्गितावैरधरादिराशिः। कृत्वा धराद्वर्णयुतो युतिः स्यात्परे धराङ्कै

राहितोऽन्यराशिः । स्वराङ्कयुक्तो हरिवर्त्मभक्तः सौख्यं रुजा वा मरणं क्रमेण ॥ १४ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित मात्रा होय तो रोगीको साध्य कहना, अभिधूम्र मात्रा होय तो कष्टसाध्य कहना, दग्ध मात्रा होय तो मृत्यु कहना । पिण्डद्वारा कहते हैं । उत्तराधरवर्णजन्य पिण्डको पृथक् पृथक् स्थापन करै, फेर श्रेणीके आद्यर्णमें अधर वर्ण होय तो दोनोंका योग करै, श्रेणीके आद्यर्णमें उत्तर वर्ण होय तो अधर पिण्डको उत्तर पिण्डमें हीन करै, जो उत्तर पिण्ड न्यून होय तो योग करै, फेर स्वरांक युक्त करके उसमें तीनका भाग दे एकादि शेष करके १ साध्य २ कष्टसाध्य ३ मृत्यु कहना चाहिये । यथा, अत्र उत्तराद्यर्णयुते सति अधरांकैः ९ अन्यराशिः २३ रहितः १४ स्वरांकै ९ र्युक्तो २३ हरिवर्त्मना ३ भक्तः शेषे २ रुजा नाम कष्टसाध्य इति ॥ १४ ॥

अथ रोगज्ञानमाह ।

वर्गाङ्काः श्रेणिघ्ना वर्णाङ्का मात्रिकाङ्कहताः ।
युक्ता युगतष्टाः स्याद्वातः पित्तं कफो दोषः ॥ १५ ॥

प्रश्नश्रेणीके वर्गांकको श्रेणीसंख्यासे गुणा करै, और वर्णपिण्डके मात्रापिंडसे गुणा करै, फेर दोनोंका योग करके चारका भाग दे शेष एक रहे तो वातरोग, दो बचे तो पित्तरोग, तीन रहे तो कफरोग, चार शेष होय तो भूतादि दोष कहना चाहिये । यथा, वर्गांकाः २५ श्रेणी ४ गुणिता १०० वर्णांका ३२ मात्रिकांकै ९ र्गुणिता २२८ युक्ता ३८८ युगैस्तष्टा ४ भूतादिदोषोऽस्ति ॥ १५ ॥

प्रकारान्तरेण साध्यादीनाह ।

श्रेणीहलाचां गणना कुयुग्द्विघ्नी त्रिभाजिताः ।
जीवनं व्याधिबाहुल्यं मरणं शेषितैः क्रमात् ॥ १६ ॥

श्रेणीके वर्णमात्रासंख्याको सैक करके दोसे गुणा करै फेर तीनका भाग दे, एक शेष होय तो रोगीका जीवन कहना, दो शेष रहे तो बहुत व्याधि कहना, तीन शेष होय तो मरण कहना । यथा, श्रेण्यां हलाचां संख्या ८ कु १ युक् ९ द्विघ्ना १८ त्रि ३ भक्ता शेषं ३ मरणं दृष्टमिति ॥ १६ ॥

अथ गर्भज्ञानमाह ।

मात्राङ्कघ्नं वर्णपिण्डं महीध्रैस्तष्टं शेषैर्नास्ति गर्भः समाङ्कैः । आलिङ्गाद्यैः पुत्रयुक् कन्यकाढ्यः क्लीबाढ्यः स्यात्पञ्चमैर्गर्भहानिः ॥ १७ ॥

मात्रापिण्डसे वर्णपिण्डको गुणा करै, फेर ७ से भाग ले विषम शेष होय तो गर्भ कहना, सम शेष होय तो गर्भ नहीं कहना, प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो पुत्र कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो कन्या कहना, दग्धस्वर होय तो नपुंसक कहना, श्रेणीका प्रथमवर्ण मृत्युसंज्ञक होय तो गर्भपात कहना चाहिये । यथा, वर्णपिण्डं ३२ मात्रांकै ९ र्गुणितं २८८ महीध्रै ७ स्तष्टं शेषं १ विषमांकैर्गर्भोऽस्तीति ॥ १७ ॥

सूक्ष्मात्पिण्डे स्वेष्टवारर्क्षतिथ्याढ्यं सप्तात्तं कन्यकायुग्मशेषे । द्व्यंकद्व्यात्तं मासघस्रौ भवेतां गोसूर्यान्तर्जन्मनो मासघस्रौ ॥ १८ ॥

सूक्ष्मचक्रजन्य पिण्डको स्वगुणकसे गुणा करै, फेर प्रश्न वार तिथि नक्षत्रयुक्त करै, सातका भाग दे विषम शेष होय तो पुत्र कहै, सम शेष होय तो कन्या कहै, गुणकगुणितपिण्डमें दो सौ बानवे २९२ का भाग लेना, शेषांकमें ३० से भाग लेना, लब्ध मास शेष दिन होते हैं, मास दिवसोंका नवमास द्वादश दिनोंसे अन्तर करै, जो शेष होय उतना मास दिवसके बाद गर्भमोक्ष कहना चाहिये ।

यथा, सूक्ष्मचक्रात्पिण्डं ६५ सप्तदश १७ गुणितं ११०५ स्वेष्टवार ६ नक्षत्र ८ शुक्लादितिथि १६ भिर्युक्तं ११३५ सप्तभि ७ र्भक्तं शेषं १ विषमे शेषे सति पुत्रगर्भः तत्पिण्डं ११३५ द्व्यंकद्व्याप्तं २९२ शेषम् २५९ त्रिंशद्भक्तं लब्धं ८ मासाः शेषं १९ दिनानि मासघस्रौ ८।१९ गोसूर्याणां मासघस्राणां ९।१२ मध्यगतौ जातौ ०।२३ प्रश्नसमयात् त्रयोविंशति २३ दिनोत्तरं पुत्र जन्म अष्टमास ८ एकोनविंशति-दिनानि गर्भो वर्त्तत इति ॥ १८ ॥

अथ रतिप्रश्नमाह ।

परस्परघ्नोत्तरनीचपिण्डे मात्रांकनिघ्ने नगभक्तशेषे ।
समे रतिर्नो विषमे रतिः स्यादालिङ्गिताद्यैः सुखम-
ध्यदुःखाः ॥ १९ ॥

उत्तराधरवर्णपिण्डको परस्पर गुणा करै, फेर मात्रांकसे गुणा करै, सातका भाग दे सम शेष होय तो रति कहना चाहिये, विषम शेष होय तो रति नहो कहना चाहिये । प्रश्न-श्रेणीके आद्यर्णमे आलिङ्गित स्वर होय तो सुखपूर्वक रति कहै, अभिधूम्र स्वर होय तो मध्यम रति कहै, दग्धस्वर होय तो दुःखसे रति कहना चाहिये । यथा, उत्तराधरपिण्डे २३।९ पर-स्परगुणिते २०७ मात्रांके ९ गुणिते १८६३ नग ७ भक्तं शेषं १ विषमे रतिर्न ॥ १९ ॥

अथ भोजनप्रश्नमाह ।

आलिंगाद्यैः क्रमात्प्रश्ने स्वेष्टं स्वल्पाशनं क्षुधा ।
पिंडं च केवलं यत्तद्रामाप्तं पूर्ववत्तथा ॥ २० ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो इच्छापूर्वक भोजन कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो स्वल्प भोजन कहना, दग्धस्वर होय तो न्यून भोजन कहना, केवल पिण्डमें ३ का भाग देना,

एकादि शेष करके पूर्वोक्त क्रमसे फल समझ लेना । यथा, पिण्डं केवलं ४१ रामै ३ र्भक्तं शेषं २ स्वल्पाशनं ज्ञेयमिति ॥ २० ॥

आलिङ्गिताद्येषु तदुत्थपिण्डमाद्यवर्णपिंडेन हतं रसाप्तम् ।
शेषैः क्रमात्तीक्ष्णकटू कषायोऽम्लक्षारमाधुर्यरसा भवेयुः २१ ॥

आलिङ्गितादिजन्य पिण्डको श्रेणीके प्रथम वर्णके पिण्डसे गुणा करै, फेर ६ का भाग देना, एक शेष होय तो तीक्ष्णरस, दो शेष होय तो कटुक, तीन शेष रहे तो कषाय, चार रहे तो अम्ल, पांच शेष होंय तो क्षार, शून्य शेष होय तो माधुर्यरसक्रमसे जान लेना। यथा, अत्राभिधूमित पिण्डं ४१ तन्मितमेव जातं आद्यवर्णपिण्डेन १० गुणितं ४१० रसै ६ र्भक्तं शेषं २ कटुकरसो जातः ॥ २१ ॥

तथान्यमाह ।

द्वादशमात्रासु तथा द्वाभ्यां द्वाभ्यां क्रमात्ते स्युः ।
उत्तरपूर्ववर्णैर्हास्याऽहास्येति दुःखाढ्यम् ॥ २२ ॥

अकरादि द्वादश मात्राका दो दो स्वर करके तीक्ष्णादि ६ रस क्रमसे जान लेना, प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें उत्तरवर्ण होय तो हास्ययुक्त भोजन कहना, अधरवर्ण होय तो अहास्य दुःखयुक्त भोजन कहना चाहिये, सो चक्रमें प्रस्फुट लिखा है समझ लीजिये ॥ २२ ॥

२२ श्लोकोक्त चक्रम् ।

अ आ	इ ई	उ ऊ	ए ऐ	ओ औ	अं अः
तीक्ष्ण	कटु	कषाय	अम्ल	क्षार	मधुर

अथ छत्रभंगमाह ।

आलिंगितोत्तरोत्तरयुक्तारिहतेषु नो भंगः ।
छत्रस्याथ परेषु प्रोक्तो भंगो न सन्देहः ॥ २३ ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथमवर्ण आलिंगित स्वरयुक्त उत्तरोत्तर होय तो छत्रभंग नहीं कहना चाहिये, और अधर दग्धवर्ण होय तो निःसन्देह छत्रभंग कहना चाहिये ॥ २३ ॥

वर्गांकान्वर्णघ्नान् वर्णाङ्कान्मात्रिकाङ्कहतान् ।
संयोज्य सप्तहृते विषमे नो छत्रभंगः स्यात् ॥ २४ ॥

वर्गांकको श्रेणीवर्णसंख्यासे गुणा करै और वर्णांकको मात्रांकसे करै फेर दोनोंके योगमें सातका भाग देना, विषम शेष गुणा होय तो छत्रभंग नहीं कहना, सम शेष होय तो छत्रभङ्ग जरूर कहना । यथा, वर्गांकान् २५ वर्णै ४ गुंणितान् १०० वर्णांकान् ३२ मात्रिकांक ९ गुंणितान् २८८ संयोज्या ३८८ सप्तहृते ३ विषमे शेषे सति न छत्रभङ्गः स्यात् ॥ २४ ॥

अथ देशोपद्रवज्ञानमाह ।

क १ श्री ३ न्द्र १ भ० कु १ भू १ ख० भू १ परि-
मितैः पिण्डं समुद्रैर्हृतं देशोपद्रवता दिशोऽर्णजनिता-
ङ्कघ्नाश्च वर्गाक्षराः । आलिङ्गादिकमात्रिकाङ्कसहिताः
सप्तावशेषे फलं नाशान्तं ह्यतिवृष्टचवृष्टिशलभा मूषा
निजान्याचमूः ॥ २५ ॥

अवर्गादि अष्ट वर्गोंका क्रमेंन्द्रादि आठ संख्या क्रमसे जान लेना तदुत्पन्न पिण्डमें चारका भाग देना एकादि शेष करके पूर्वादि दिशामें उपद्रव जान लेना, पिण्डद्वारा कहते हैं, वर्गांकको वर्णपिण्डसे गुणा करै, फेर आलिङ्गादिचक्रजन्य मात्रांक युक्त करै, उसमें सातका भाग देना एकादि शेष करके क्रमसे फल जान लेना । अतिवृष्टिः १, वृष्टिः २, शलभा ३, मूषा ४, निजा चमू ५, अन्याचमूः ६ । शून्य शेष होय तो नाश कह देना । यथा, कादिभिरष्टाभिरष्टवर्गाकैर्यत्पिण्डं ८ अभिघातगुणेन १७ गुणितं १३६

समुद्रै ४ भक्तं शेषं ४ देशेषु उपद्रवो जायते यासु ता दिशः अत्रो-तरस्यां देशोपद्रव इति वर्गांका २५ अर्णजानितैरंकै ३२ गुणिता ८०० आलिङ्गादिभवैर्मात्रिकांकैः १३ सहिता ८१३ समावशेषे सति १ अत्रातिवृष्टिः ॥ २५ ॥

२५ श्लोकोक्तं चक्रम्।

१	३	१	०	१	१	०	१
अ आ	क	च	ट	त	प	य	श
इ ई	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ ऊ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ए ऐ ओ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
औ अं अः	ङ	ञ	ण	न	म		

अथ दुर्गभङ्गप्रश्नमाह।

संयुक्तोत्तरवर्णैरभिधूम्रैर्नैव भङ्गः स्यात्।
अधरायुक्तैर्वर्णैरालिङ्गैः खण्डपातोऽपि॥
शेषैर्घोरे युद्धे भंगो दुर्गस्य निर्दिष्टः॥ २६॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर अभिघूमित स्वरयुक्त होय तो दुर्गभंग नहीं कहना, अधरवर्ण आलिङ्गित स्वरयुक्त होय तो खंडपात अर्थात् किञ्चित् भंग कह देना, और शेष स्वरवर्णों करके घोर युद्ध दुर्गका भंग कहना चाहिये॥ २६॥

श्रेणी वा मात्रांकाः शिखरघ्नाः संयुता नगैस्तष्टाः।
समशेषे भङ्गः स्याद्विषमे नो दुर्गसंभंगः॥ २७॥

प्रश्नश्रेणीसंख्याको और मात्रापिंडको दुर्गकी शिखरसंख्यासे गुणा करै, दोनोंका योग करके ७ का भाग देना, विषम शेष होय तो दुर्ग भंग नहीं कहना, सम शेष होय तो दुर्ग भंग कहना चाहिये। यथा, श्रेणी ४ अथवा मात्रांकाः ९ कल्पितैः दुर्गशिखरै १००

गुणिता ४०० । ९०० संयुक्ता १३०० नगै ७ स्तष्टा ५ विषमशेषे सति नो दुर्गसभंग इति ॥ २७ ॥

तत्र दिग्ज्ञानमाह ।

पिंडे शिखरैर्निघ्ने नागहृते शेषितैः प्राच्याः ।

शिखराः प्रयान्ति भंगं वा तच्छिखरोत्थसंख्याप्ते ॥ २८ ॥

निज गुणकगुणित पिंडको शिखरसंख्यासे गुणा करै, फेर ८ का भाग देना एकादि शेष करके पूर्वादि दिशामें भंग जान लेना। अथवा पिण्डमें शिखरसंख्याका भाग देना शेष पूर्वादि दिशामें जहां समाप्त होय उसी शिखरका भंग कहना चाहिये। यथा, पिंडे ४१ गुणक १७ गुणिते ६९७ शिखरै १०० गुणिते ६९७०० भागै ८ भक्ते शेषं ४ अत्र नैर्ऋत्यकोणस्थानां शिखराणां भंगः। वा पक्षान्तरेण तस्मिन् पिंडे ६९७ तस्मिन् दुर्गे ये शिखरास्तेभ्य उत्था जाता या संख्या १०० तया भक्ते सति शेषितैः ९७ अङ्कैः पूर्वदिशातो यत्र संख्या समाप्तिः स एव शिखरो भंगमायातीति ॥ २८ ॥

कथं भङ्गो भविष्यति तज्ज्ञानमाह ।

खण्डसंख्या स्वराङ्काढ्यास्त्रितष्टा रूपपूर्वकैः ।

युद्धेन चातिभयतः सुरङ्गात्खण्डिरीरिता ॥ २९ ॥

खण्डसंख्याको मात्रापिण्डमें युक्त करै, फेर तीनका भाग दे एक शेष होय तो युद्धसे खण्ड कहना, दो शेष होय तो अतिभयसे खण्ड कहना, शून्य शेष होय तो सुरंगसे खण्ड कहना। यथा, खण्डसंख्याङ्काः ९७ स्वराङ्के ९ युता १०६ त्रितष्टा १ युद्धेन खण्डो भवतीति ॥ २९ ॥

अथ सुभिक्षादिज्ञानमाह ।

सा लिंगाज्जुत्तरगे सुभिक्षमधराभिधूमिके मध्यम् ।

शेषे दुर्भिक्षं स्यात्प्रश्नाद्वर्णस्वगाभ्यां च ॥ ३० ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर आलिङ्गित स्वरयुक्त होय तो सुभिक्ष कहना, अधरवर्ण अभिधूम्र स्वरयुक्त होय तो मध्यम, दग्ध वर्ण दग्धस्वरयुक्त होय तो दुर्भिक्ष कहना, प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण और मात्रा दोनोंसे मिलाकर कहना ॥ ३० ॥

पिंडेन चाह ।

वर्गजसंख्या गुणितौ वर्णाजङ्कौ युतौ त्रिभिस्तष्टौ ।

एकादिशेषतः स्यात् सुभिक्षसमते च दुर्भिक्षम् ॥ ३१ ॥

वर्णपिण्ड और मात्रापिंडको वर्गजसंख्यासे गुणा करै, फेर दोनोंका योग करके तीनका भाग दे एक शेष होय तो सुभिक्ष, दो अवशिष्ट रहे तो समता, तीन शेष हांय तो दुर्भिक्ष कहना चाहिये । यथा, वर्णाजङ्कौ ३२ । ९ वर्गजसंख्याभ्यां २५ । ५ गुणितौ ८०० । ४५ युतौ ८४५ त्रिभि ३ स्तष्टौ २ समताफलं जातमिति ॥ ३१ ॥

अथ वृष्टिज्ञानमाह ।

वृष्ट्यल्पवृष्ट्यनावृष्टिश्चोत्तरालिंगितादिभिः ।

मात्रापिण्डं त्रिभिस्तष्टं शेषाङ्कैः पूर्ववत्फलम् ॥ ३२ ॥

प्रश्नश्रेणीका प्रथम वर्ण उत्तर होय तो वृष्टि कहना, अधर होय तो अल्प वृष्टि कहना, दग्ध होय तो अनावृष्टि कहना चाहिये श्रेणीके आद्यवर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो वृष्टि कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो अल्पवृष्टि कहना, दग्धस्वर होय तो अनावृष्टि कहना चाहिये। मात्रापिण्डको गुणकसे गुणा करै, फेर तीनका भाग दे एकादि शेष करके पूर्ववत् फल क्रमसे जान लेना। यथा, मात्रा पिण्डं ९ गुणक १७ गुणितं १५३ त्रिभि ३ स्तष्टं ३ दुर्भिक्षफलं जातम् ॥ ३२ ॥

कूपादि प्रश्नमाह ।

आलिंगिताद्यादिगतद्गुणेनार्णाङ्कैश्च गुण्या निजवर्ण-संख्या । युक्ताविभक्ता धरणीधरैः स्यात् शेषे समे क्षार-जलं परेऽन्यत् ॥ ३३ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें जो आलिंगितादिक स्वर होय उस स्वरका संयुक्तादि प्रकरणोक्त गुणकसे श्रेणीवर्णसंख्याको गुणा करै, फेर वर्णाङ्कसे श्रेणीसंख्याको गुणा करके, दोनोंका योग करके सातका भाग दे सम शेष होय तो क्षारजल कहना, विषम शेष होय तो मिष्टजल कहना चाहिये । यथा पूर्वोक्त भूकरेत्यादिनात्र गुणकः २ तेन श्रेणिवर्णसंख्या ४ गुणिता ८ वर्णाङ्कैः ३२ श्च गुणिता १२८ युक्ता १३६ धरणिधरै ७ र्भक्ता ३ विषमे शेषे सति मिष्टं जलं जातमिति ॥ ३३ ॥

तत्र हस्तज्ञानमाह ।

लब्धं पिंडे विनिक्षिप्य चतुरशीति भाजितम् ।
शेषाङ्कसमहस्तैः स्यात् पानीयं पूर्वनोदितम् ॥ ३४ ॥

पूर्व श्लोकोक्त सातका भाग देनेसे जो लब्ध आवै उसको पिण्डमें युक्त करै, फेर चतुरशीति ८४ का भाग दे शेषांङ्क सम हस्त नीचे जल कहना चाहिये । यथा, लब्ध १९ पिण्डे १३६ विनिक्षिप्य १५५ चतुरशीति ८४ भक्तं शेषांकैः ७१ समये हस्तास्तैः कृत्वा पूर्वनोदितं क्षारं मिष्टं वा पानीयं स्यात् । अत्र देशकालादिकं विचार्य वाच्यम् ॥ ३४ ॥

अथारामप्रश्नमाह ।

उत्तरालिंगिताद्यैः स्याद् बहुद्रुमयुतं वनम् ।
विरलद्रुमसंयुक्तं दग्धं वा त्र्याप्तपिण्डतः ॥ ३५ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिंगित स्वर होय तो बहुद्रुमयुक्त वन कहै, अभिधूम्र स्वर होय तो स्वल्प द्रुमयुक्त वन कहै, दग्धस्वर होय तो वह्नि कीटादिकोंसे जर्जरित कहै, फेर उत्तर वर्णश्रेणी होय तो विरल द्रुमयुक्त वन कहै, दग्धवर्णाद्य श्रेणी होय तो वह्नि कीटादिकोंसे जर्जरित कहै, पिण्डमें तीनका भाग दे एकादि शेष करके पूर्ववत् फल जान लेना । यथा, पिण्डं ६९७ त्र्याप्तं १ बहुद्रुमयुक्तं जातमिति ॥ ३५ ॥

अथ प्रासादप्रश्नमाह।

उत्तरालिंगिताद्यैः स्यात्प्रासादं तत्तु शीघ्रतः।
विलम्बेन तथाऽल्पायुः रिक्तं वा सद्विपिण्डतः॥ ३६॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें उत्तर वर्ण आलिंगित स्वर होय तो प्रासाद शीघ्र तैयार होगा, अधरवर्ण अभिधूम्र स्वर होय तो विलम्बसे प्रासाद तैयार होगा, दग्धवर्ण दग्धस्वर होय तो प्रासादका स्वल्प आयु होगा वा रिक्त रहेगा, पूर्व पिण्डमें दो युक्त करके तीनका भाग देना, एकादि शेष करके फल क्रमसे जान लेना। यथा, द्वाभ्यां २ सहितो यः पिण्डः ६९९ त्रि ३ भक्तं शेषं ३ अल्पायुः रिक्तं वा फलं जातमिति॥ ३६॥

गृहप्रश्नमाह।

आलिंगाद्यैर्महालाभं स्वल्पलाभं दरिद्रता।
ङादिदग्धस्वराढ्याश्चेत् कुलच्छेदकरं गृहम्॥
पिण्डं त्र्याप्तं क्रमाद्गेहे लाभो वृद्धिर्दरिद्रता॥ ३७॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिंगित स्वर होय तो स्थानसे लाभ कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो स्वल्प लाभ कहना, दग्ध स्वर होय तो दरिद्रता कहना। ङादि पांच वर्ण दग्धस्वरयुक्त होंय तो कुलका नाशकारक स्थान कहना चाहिये, पिण्डमें तीनका भाग देना एकादि शेष करके क्रमसे फल जान लेना। यथा, पिंडं ६९७ त्र्या ३ प्तं शेषं १ लाभ इति॥ ३७॥

अथार्घप्रश्नमाह।

पिण्डं निजगुणकघ्नं प्रश्नार्णघ्नं त्रिभिस्तष्टम्।
रूपादिभिः समर्घं समता ज्ञेया महर्घं च॥ ३८॥

निज गुणकगुणित पिण्डको श्रेणीसंख्यासे गुणा करै, तीनका भाग दे एक शेष होय तो समर्घ, दो शेष होंय तो समता, तीन

शेष रहे तो महर्घता कहना चाहिये । यथा, पिण्डं ४१ निज गुणक १७ गुणितं ६९७ प्रश्नार्णै ४ र्गुणितं २७८८ त्रि ३ भिस्तष्टं १ सुभिक्षफलं जातं यन्मितं वर्तते ततोऽधिकं स्थास्यति ॥ ३८ ॥

यत्र समर्घमहर्घे भवेतां तत्र विशेषमाह ।

आलिङ्गादियुते स्यात् पक्षे मासोर्ध्ववर्षोर्ध्वे ।
पिण्डं निजगुणकघ्नं प्रश्नार्णाढ्यं रसैस्तष्टम् ॥ ३९ ॥
पादेनर्द्धिः क्रमतो ह्याद्युत्तरगे ह्यनन्ताभे ।
अधरादिगे च हानिः पादैः शून्ये महर्घं तत् ॥ ४० ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिंगित स्वर होय तो एक पक्षके भीतर समर्घ महर्घ कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो मासोत्तर समर्घ महर्घ कहना, दग्धस्वर होय तो वर्षोत्तर समर्घ महर्घ कहना चाहिये। निज गुणकगुणित पिंडमें श्रेणिवर्णसंख्या युक्त करै, फेर ६ का भाग दे शेषङ्कासे फलका विचार करै । प्रश्नश्रेणिके आदिमें उत्तरवर्ण होय और अंक शेष होय तो चतुर्थांश वृद्धि कहना श्रेणिके आदिमें उत्तरवर्ण और शून्य अवशिष्ट रहे तो अनन्तवृद्धि कहना, श्रेणीके आदिमें अधरवर्ण होय और अंक शेष होय तो चतुर्थांश हानि कहना श्रेणीके आदिमें अधरवर्ण होय और शून्य शेष रहे तो अनन्त हानि कहना चाहिये । यथा, पिण्डं ४१ निज गुणक १७ घ्नं ६९७ प्रश्नवर्ण ४ युतं ७०१ रसै ६ स्तष्टं ५ अत्रादौ उत्तरवर्णोऽभिधूमितः स्वरस्तेन मासात्परं पादयुतं सुभिक्षफलं जातमिति ॥ ३९ ॥ ४० ॥

अथ गुप्तमन्त्रज्ञानमाह ।

आलिङ्गैर्धर्मचिन्तार्थकामौ चैवाभिधूमिते ।
दग्धाद्ये विग्रहेच्छा स्याद्भूपतेर्गुप्तमन्त्रणे ॥ ४१ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो धर्मचिन्तायुक्त जप कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो अर्थ और कामसम्बन्धी मन्त्र

जप कहना, दग्धस्वर होय तो विग्रहादियुक्त मन्त्र जप कहना चाहिये राजाका तो उपलक्षण मात्र है ॥ ४१ ॥

पिंडेन चाह ।

केवलपिण्डं गुणितं स्वालिङ्गितपूर्वगुणकेन ।
तष्टं त्रिभिश्च शेषैः प्राग्वत्प्रोक्तं फलं प्राज्ञैः ॥ ४२ ॥

केवलपिण्डको आलिंगितादि स्वरयुक्तजन्य गुणकसे गुणा कर, फेर तीनका भाग दे एकादि शेष करके पंडित पूर्ववत् फलको जानले। यथा, केवल पिंडं ४१ अत्राभिधूम्रगुणकेन २ गुणितं ८२ त्रिभि ३ स्तष्टं १ धर्मचिन्तास्तीति सर्वत्र ॥ ४२ ॥

अथास्मिन् पत्रे किमस्तीति ज्ञानमाह ।

मैत्रीलेखं क्षुद्रलेखं नृनार्योः कार्यं तत्रोच्चाटनं मारणंच ।
पोष्यं शत्रोर्विग्रहाढ्यं क्रमेण साधारण्यं संयुताद्यष्टवर्गैः ४ ३ ॥

संयुक्तादि आठ पक्षोंका फल क्रमसे जान लेना, जिस पक्षका प्रश्न होय उस पक्षका फल मुद्रित (लिफाफेमें बन्द) पत्रमें कहना चाहिये। अत्र तु मारणं कस्यचिल्लिखितमिति वाच्यम् ॥ ४३ ॥

पिण्डेन चाह ।

वर्णाङ्कनिघ्नस्वरपिण्डयुक्तश्रेणीहता नागमितैश्च शेषैः ।
प्राग्वत्फलं मुद्रितपत्रलेखे चान्यद्विमृश्यापि वदेत् क्रियाभिः ॥ ४४ ॥

मात्रापिण्डको वर्णपिण्डसे गुणा करै, फेर श्रेणसिंख्यायुक्त करके ८ का भाग देना, एकादि शेष करके पूर्वोक्त फल क्रमसे जान लेना मुद्रितपत्रका प्रश्न कहनेमें और क्रियासेभी विचार कर कहना चाहिये। यथा वर्णाङ्कै ३२ निघ्नौ यः स्वरपिण्ड ९ स्तेन २८८ युक्ता या श्रेणी ४ जाता २९२ सा नागप्रमाणै ८ र्भक्ता शेषैरेकादिभिः ४ प्राग्वन्मै-

श्रीलेखनमित्यादि । मुद्रितं तत्वग्रं च तत्र लेखे फलं, तेनात्रोच्चाटन-वार्त्ता लेखनमिति वाच्यम् ॥ ४४ ॥

४३ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

प्रश्नाः	संयुक्त	असंयुक्त	अभिहित	अनभिहित	अभिघात अनभिघात	आलिङ्गित	अभिधूम्र	दग्ध
वार्त्ताः	मैत्रीलेखम्	क्षुद्रलेखम्	नूनार्थो:कार्यम्	उच्चाटनम्	मारणम्	पीडनम्	शत्रुविग्रहः	साधारणम्

अथ मृगयाप्रश्नमाह ।

दग्धकटपयशैर्बद्धो मृगयायां घातमायाति ।

अधरार्णैः संयुक्तैस्त्वन्यैः शून्या भवेन्मृगया ॥ ४५ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें, ङ ञ ण न म उ ऊ अं अः क ट प य श, यह चतुर्दश वर्ण होय तो बद्ध मृगयाका लाभ कहना । श्रेणीके आदिमें, आ ई ऐ औ ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ र व ष ह, यह अष्टादश वर्ण होंय तो मृगया घात कहना । और श्रेणीके आदिमें, अ इ ए ओ ग च ज ड त द ब ल स, यह त्रयोदश वर्ण होंय तो मृगया लाभ नहीं होवेगा ॥ ४५ ॥

पिण्डेन चाह ।

केवलपिण्डं भूपैर्निघ्नं भक्तं नगैः शेषे ।

विषमे मृगयालाभस्तन्नामाप्युक्तवज्ज्ञेयः ॥ ४६ ॥

केवल पिण्डको षोडश गुणा करै, फेर ७ का भाग दे विषम शेष होय तो मृगया लाभ कहना, सम शेष होय तो लाभ नहीं कहना उसका नामभी पूर्ववत् जान लेना । यथा, केवलपिण्डं ४१ भूपै १६ र्गुणितं ६५६ नगै ७ र्भक्तं शेषं ५ विषमें सति मृगया लाभ इति ४६ ॥

अथ युद्धप्रश्नमाह ।

उत्तरवर्णैः सन्धिर्युद्धं ह्यधरैर्द्विहृत्पिण्डम् ।
युद्धं सन्धिर्दग्धे द्व्याप्तं शून्यं भवेद्युद्धम् ॥ ४७ ॥

प्रश्नश्रेणीका आदि वर्ण उत्तर होय तो सन्धि कहना, अधर होय तो युद्ध कहना, पिण्डमें २ का भाग दे एक शेष रहे तो युद्ध कहना, शून्य शेष होय तो सन्धि कहना चाहिये । प्रश्नश्रेणीके आदिमें दग्धवर्ण होय तो पिण्डमें दोका भाग देना एक शेष होय तो सन्धि कहना, शून्य शेष होय तो युद्ध कहना चाहिये । यथा, पिण्डं ६९७ द्वि २ हृत् शेषे १ युद्धं, दग्धे सति पिण्डं ६९७ द्वाभ्यां २ भक्तं १ शेषं सति सन्धिरिति ॥ ४७ ॥

रूपे१ ब्व ५ ङ्गा ६ ब्धय ४ भे० न्द्व १ ग्नि ३ द्वि २ मितैश्च
वर्गाङ्कैः । पिंडे द्विनामजातेऽद्र्याप्ते शेषेऽधिके जेता ॥ ४८॥

अवर्गादि आठ वर्गोके एकादि संख्या क्रमसे जान लेना, फेर वादी प्रतिवादी नामजन्य पिण्डमें ७ का भाग देना, जिस जगह बहुत शेष होय उसीका जय कहना । यथा, रामरावणयोर्नामभ्यां जाते पिण्डे ६।१२ अद्रि ७ भिर्भक्ते ६।६ समे शेषे अत्यातिघोरयुद्ध-मिति सन्धिर्वा ॥ ४८ ॥

४८ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

१	५	६	४	०	१	३	२	अङ्काः
अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	वर्णाः

अथ दिग्बलमाह ।

मासा श्चैत्रादिगता द्विघ्नास्तिथ्यान्विताः समुद्राप्ताः ।
शून्यं० द्वौं २ द्व २ त्रि ३ मितैः पूर्वादिस्थो भवेज्जेता ॥ ४९ ॥

चैत्रशुक्लादि गत मासोंको २ से गुणा करै, फेर तिथियुक्त करके ४ का भाग दे शून्यादि शेष करके क्रमसे पूर्वादिदिक्स्थित मल्ल कुक्कुटादियोंका जय जान लेना चाहिये । यथा, चैत्रशुक्लादितो गत-मासाः ९ द्विगुणिताः १८ शुक्लादिगततिथिभि १५ र्युताः ३३ समुद्रै ४ र्भक्ताः शेषं १ अत्र एकशेषे सति पश्चिमदिक्स्थो यः स जेष्यति ॥४९॥

अथ विवाहप्रश्नमाह ।

उत्तराजर्णयुक्ताद्ये शीघ्रं नीचे विलम्बतः ।
दग्धाजर्णयुताद्ये स्यान्न विवाहः कदाचन ॥ ५० ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें उत्तर स्वरवर्ण होय तो शीघ्र विवाह कहना, अधर स्वरवर्ण होय तो विलम्बसे विवाह कहना, दग्ध स्वरवर्ण होय तो विवाह नहीं होवेगा ॥ ५० ॥

पिण्डेन चाह ।

स्यादुत्तरार्णाढ्यमुखेऽर्णपिण्डं त्रिघ्नं स्वराङ्काढ्यमदो-धराढ्यम् । वर्णांकमङ्घिघ्नमजंकहीनं सप्तोद्धृते चेद्विषमे विवाहः ॥ ५१ ॥

प्रश्नश्रेणीके आदिमें उत्तरवर्ण होय तो वर्णपिण्डको त्रिगुणित करै, मात्रापिण्ड युक्त करके सातका भाग दे श्रेणीके आदिमें अध-रवर्ण होय तो वर्णपिण्डको चतुर्गुण करके मात्रापिण्ड हीन करै, फेर सातका भाग दे विषम शेष होय तो विवाह कहना, सम शेष होय तो विवाह नहीं कहना चाहिये । यथा, उत्तरेणार्णेन युक्तं मुखं आदिर्यस्य तस्मिन् प्रश्ने सति वर्णपिण्डं ३२ त्रिगुणितं ९६ स्वराङ्कै

९ युतं १०५ सप्त ७ भिर्भक्तं शेषं ७ विषमशेषेण विवाहो भवि-
ष्यतीति ॥ ५१ ॥

अथ कृष्यादिप्रश्नमाह ।

लाभमलाभं कष्टं ह्यालिङ्गाद्यैश्च कृष्यादौ ।
सूक्ष्मांके वर्णघ्नेऽद्रयाप्ते विषमे तथा लाभः ॥ ५२ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो लाभ कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो लाभ नहीं कहना, दग्धस्वर होय तो कष्ट कहना चाहिये । कृष्यादि प्रश्नमें सूक्ष्मचक्रसे पिण्डोत्पादन करके उस पिण्डको श्रेणीवर्णसंख्यासे गुणा करै सात्का भाग दे विषम शेष होय तो लाभ कहै, सम शेष होय तो लाभ नहीं कहना । यथा, सूक्ष्मपिण्डे ६५ वर्णै ४ गुणिते २६० सप्त ७ हृते १ विषमे शेषे सति कृष्यादौ लाभ इति ॥ ५२ ॥

अथ मैत्र्यादिकरणप्रश्नमाह ।

आलिङ्गाद्यैर्हितादीच्छोः सौख्यं दुःखं च कष्टता ।
वर्णसंख्यास्वरांकघ्नी त्रिभक्ता पूर्ववत् फलम् ॥ ५३ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यवर्णमें आलिङ्गित स्वर होय तो मैत्रीकरणमें इच्छा. सौख्य कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो दुःख कहना, दग्धस्वर होय तो कष्ट कहना । श्रेणीसंख्याको मात्रापिण्डसे गुणा करके तीनका भाग देना, एकादि शेषका पूर्ववत् फल जान लेना । यथा, वर्णसंख्या ४ स्वराङ्के ९ गुणिता ३६ त्रिभक्ता ३ त्रिशेषे सति मैत्री-सेवासम्बन्धादिषु कष्टतास्तीति ॥ ५३ ॥

अथ योन्यन्तरप्रश्नमाह ।

आलिङ्गाद्यैः क्रमात्स्वर्गे मर्त्ये नरकयोनिषु ।
उत्तराद्यियुतैर्ज्ञेया उत्तमा मध्यमा परा ॥ ५४ ॥

प्रश्नश्रेणीके आद्यर्णमें आलिङ्गित मात्रा होय तो स्वर्गलोकमें कहना, अभिधूम्र स्वर होय तो मर्त्यलोकमें कहना, दग्ध स्वर होय तो नरकलोकमें कहना, प्रश्नश्रेणीके आदिमें उत्तर वर्ण होय तो स्वर्गादि लोकमें उत्तम योनि कहना, अधरवर्ण होय तो मध्यम योनि कहना, दग्धवर्ण होय तो अधम योनि कहना चाहिये ॥५४॥

पिंडेन चाह ।

प्रश्नाद्यवर्गपिण्डं निजगुणकघ्नं त्रिभिर्भक्तम् ।
शेषैः प्राग्वज्ज्ञेयं नामाद्यं चापि विद्वद्भिः ॥ ५५ ॥

प्रश्नश्रेणीके प्रथम वर्णके वर्गाङ्कको निज गुणकसे गुणा करै, तीनका भाग दे एकादि शेष करके स्वर्ग १, मर्त्य २ नरक ३ लोक जान लेना चाहिये । यथा, प्रश्ने आद्यो यो वर्गस्तस्य पिण्डं ६ निजेन गुणकेन १७ गुणितं १०२ त्रिभि ३ र्भक्तं शेषं ३ नारकीययोनिर्जाता । च पुनरस्या योनेर्नामाद्यमपि प्राग्वत् विद्वद्भिर्ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

अथ निधिज्ञानमाह ।

नास्त्यत्र यद्वा धनमस्ति किञ्चिद्वदेति पृष्टेऽहिवलाख्यचक्रम् । सन्दिग्धभूमौ विदुषात्र लेख्यं तात्कालिकर्क्षास्थविधुश्च कार्यः ॥ ५६ ॥

प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करे कि इस मकानमें द्रव्य है या नहीं उस समय अहिवलय चक्रको सन्दिग्ध भूमिमें पण्डित लिखकर निश्चय करै, अहिवलय चक्रके विषय तात्कालिक नक्षत्रजात चन्द्र सूर्यका स्पष्टीकरण करै ॥ ५६ ॥

तदेवाह ।

सूर्योदयाद्यातघटीत्रिघाताभाङ्गांशकं भादिगतर्क्षयुक्तम् ।
तत्कालभं तद्युगघातनन्दभागोऽत्र तत्कालखगो गृहादिः ॥५७॥

तात्कालिक सूर्यादि ग्रहोंकी स्पष्टीकरणकी क्रिया लिखते हैं, स्वेष्टकालको कर्मभूमिमें स्थित करके सप्तविंशति २७ गुणा करै, उसमें ६० का भाग देनेसे लब्ध आदिक होते हैं, उनको गत नक्षत्रमें युक्त करनेसे तात्कालिक नक्षत्र होते हैं, तात्कालिक नक्षत्रको चतुर्गुणित करके ९ का भाग देनेसे लब्ध राश्यादि स्पष्ट ग्रह होते हैं। अब उदाहरण देते हैं, सम्वत् १९४८ शालिवाहन शके १८१३ माघमासे कृष्णे पक्षे तिथौ तृतीयायां रविवासरे सूर्योदयात्क-लिपतमिष्टं घट्यादिः ३७।१२ अत्र रविस्पष्टम् ९।४।५०।३६ चन्द्रस्पष्टम् ४।१६।४६।१ लग्नस्पष्टम् ९।२।१६।५१ सूर्योदयाद्यातघटीनां ३७।१२ सप्तविंशति २७ मितानां च यो घातो १००४।२४ ऽस्य अभ्राङ्गांश ६० कं नक्षत्रादि १६।४४।२४। तत् अश्विनीतो गतनक्षत्रैः स्फुटघटीयुक्तैरिति विशेषोऽत्र । तादित्थं मेतं भभोगहृद्भुक्तआढ्यमिति भस्य इतं घट्यादि १६।४९ अस्य भभोगेन सर्वघटीमानेन ६५।१८ हृतं लब्धं ००।१५।२७।६ अश्विन्यादिगतभ १० युतं १०।१५।२७।६ जातैरश्विन्यादिगतनक्षत्रै १०।१५।२७।६ युक्तं २६।५६।५९।६ तात्कालिक नक्षत्रं जातं तात्कालिकर्क्षस्य युगा ४ नां च यो घात१०७।५९। २४।२४ स्तस्य नन्दां ९शो गृहादिराश्यादिः स्पष्टचन्द्रः ११।२९।५८। १। अत्र तु नक्षत्रस्यैव प्रयोजनमास्ति तथापि प्रसंगात्प्रकटनांशज्ञानार्थं विधोः प्रदर्शित इति । अब सूर्यका तात्कालिकीकरण लिखते हैं, प्रथम भभोगभयात साधन करते हैं। पौषशुक्ल १० शनौ उत्तराषाढायामर्कः ३७।२८ इनको ६० में शोधन किया तो २२।३२ हुआ, माघकृष्णा ८ शुक्रे श्रवणेऽर्कः ४०।१२ इन दोनोंका अन्तर वार १२ को ६० गुणा किया तो ७२० हुआ, इसमें २२।३२ और ४०।१२ युक्त किया तो ७८२।४४ भभोग हुआ, माघकृष्णा ३ रवौ सूर्योदयाद्गतघटिः ३७।१२ में पूर्व ६० से शोधित अङ्क २२।३२ युक्त किया ५९।४४ और अन्तर वार ७ को ६० से गुणा किया ४२० के

युक्त किया तो ४७९।४४ भयात हुआ, भयातमें भभोगका भाग लेने-से लब्धगत नक्षत्रकी स्पष्टघटी होती है । यथा, अस्य इतं षटयादिः ४७९।४४ भभोगेन सर्वघटीमानेन ७८२।४४ हृतं लब्धं ०।३६।४६।२५ अश्विन्यादिगतभै २० युतं २०।३६।४६।२५ जातैराश्विन्यादिगत-नक्षत्रै २०।३६।४६।२५ रश्राङ्गांशकै १६।४४।२४ युक्तं ३७।२१।१०। २५ तात्कालनक्षत्रं जातं सप्तविंशाति २७ भिस्तष्टं १०।२१।१०।२५ तात्कालर्क्षस्य युगा ४ नां च यो घात ४१।२४।४१।४० स्तस्य नन्दां ९ शो राश्यादि स्फुटरविः ४।१८।२।१९ इस प्रकारसे मिश्र नन्द-रामजीने सूर्यचन्द्रका तात्कालिक करना लिखा सो कष्टसाध्य होता है । अब हम बालबोधके अर्थ सुगम तर प्रकार लिखते हैं, दोनों क्रिया करनेसे फल एकही आवेगा, स्वेष्टकालमें पांचका भाग दे लब्धराशि होती है, शेषको ३० गुणा करके फेर पांचसे भाग दे लब्ध अंश होते हैं, फेर शेषको ६० गुणा करै, पांचका भाग दे लब्ध घटी होती है, इन राश्यादिकोंको संज्ञातन्त्रका सूर्यादि स्पष्ट ग्रहोंमें युक्त करनेसे तात्कालिक ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं, क्योंकि संज्ञा तन्त्रका स्पष्ट ग्रह बनानेको तो साधारण ब्राह्मण भी जानते हैं। यथा, सूर्योदयाद्गतघटी ३७ । १२ पञ्च ५ भक्तं लब्धं राशिः ७ शेष २ । १२ त्रिंशद्गुणितं ६६ । ०० पञ्च ५ भक्तं लब्धं १३ अंशाः शेषं १ षष्टि ६० घ्नपञ्चभक्तं लब्धं १२ घटिका इन राश्यादिकोंको ७।१३। १२।०० संज्ञातन्त्रका स्पष्ट चन्द्रमा ४।१६।४६।१ में युक्त किया तो ११।२९।५८।१ तात्कालिक चन्द्र पूर्वस्पष्ट समान हुआ, इस प्रकार सर्व ग्रह तात्कालिक कर लेना चाहिये ॥ ५७ ॥

अन्य न्यासमाह ।

अन्त्याग्निवह्निः पितृभाग्निमानि भाजांघ्रितत्वाब्ध्यहि-
पुष्यसूर्याः । विधिः श्रवः सिद्धशशीग्निचित्राविश्वा-
द्विलोमं नगभानि चक्रे ॥ ५८ ॥

तिर्यक्पंक्ति क्रम करके अहिवलय चक्रका न्यास कहते हैं, अश्विन्यादि तीन नक्षत्र कृत्तिका मघादि तीन नक्षत्र यह सात नक्षत्र प्रथम पंक्तिमें लिखे, प्रसंख्या उत्तराभाद्रपद पूर्वाभाद्रपद शतभिषा रोहिणी आश्लेषा पुष्य हस्त सात नक्षत्र द्वितीय पंक्तिमें लिखै, अभिजित् श्रवण धनिष्ठा मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु चित्रा यह सात नक्षत्र तृतीय पंक्तिमें लिखे, उत्तराषाढा पूर्वाषाढा मूल ज्येष्ठा अनुराधा विशाखा स्वाती यह सात नक्षत्र चतुर्थ पंक्तिमें लिखै ॥ ५८ ॥

प्रकारान्तरेणाह ।

ऊर्ध्वमध्यभवे कोष्ठे वह्निं कृत्वा भुजङ्गवत् ।
दत्वा भानि लिखेच्चक्रं तदेवाहिवलं भवेत् ॥ ५९ ॥

ऊर्ध्व सप्तक पंक्तिका मध्य कोष्ठमें कृत्तिका नक्षत्र देकरके भुजंगवलयवत् नक्षत्र क्रमसे लिखे तो अहिवलय चक्र होगा ॥ ५९ ॥

५८।५९ श्लोकोक्तं अहिवलयचक्रम् ।

रे चं	अ चं	भ चं शाखा	कृ चं द्वार	म चं शाखा	पू सू	उ सू
उ सू	पू चं	श सू	रो सू	श्ले चं	पु चं	ह सू
अभि चं	श्र चं	ध सू	मृ सू	आ चं	पु चं	चि सू
उ चं	पू चं	मू सू	ज्ये सू	अनु सू	वि सू	स्वा सू

अथ चन्द्रार्कयोर्नक्षत्राण्याह ।

स्युश्चन्द्रक्षांण्यहिर्बुध्न्यपञ्चाब्धिभान्यन्त्येशांऽभो भ्योजांघ्रितोऽन्यानि भानोः । स्वर्क्षे चन्द्रे स्यान्निधिस्तत्र चार्के तत्तद्द्रव्यं तद्दृशागोंऽशहस्तैः ॥ ६० ॥

सूर्य चन्द्र नक्षत्रका ज्ञान कहते हैं, रेवत्यादि चार आर्द्रादि पांच पूर्वाषाढादि चार पूर्वा भाद्रपदा यह चतुर्दश नक्षत्र चन्द्रमाका कहा है इनसे व्यतिरिक्त चतुर्दश नक्षत्र सूर्यका कहा है, तात्कालिक चन्द्र सूर्य चन्द्रनक्षत्रमें होय तो सन्दिग्ध भूमिमें निधि कहना चाहिए । मिश्र नन्दरामजीने इतना कहा है, नरपति ग्रन्थके विषय विशेष लिखा है सो लिखते हैं । "द्वारशाखे मघायाम्ये द्वारस्था कृत्तिका मता । चन्द्रऋक्षे यदार्केन्दू तत्रास्ति निश्चितं निधिः ॥ भानुऋक्षे स्थितौ तौ चेत्तदा शल्यं च नान्यथा । स्वस्वभे द्वितयं ज्ञेयं नास्ति किञ्चिद्विपर्यये । स्थितं न लभते द्रव्यं चन्द्र क्रूरग्रहान्विते । पुष्टे चन्द्रे भवेन्मुद्रा क्षीणे चन्द्रेऽल्पको निधिः ॥ " तात्कालिक चन्द्रमाको जो जो ग्रह देखते हैं उन ग्रहोंका द्रव्यनिधि स्थानमें कहना, चन्द्रभुक्त नवांश संख्या करके उतने हस्त नीचे द्रव्य कहना चाहिये ॥ ६० ॥

अथ द्रव्यमाह ।

स्वर्णं रौप्यं ताम्रकं रत्नयुक स्वं वंगं नागं लोहमुक्तं क्रमेण । चन्द्रेऽर्काद्यैर्वीक्षितेऽल्पादिचन्द्रात् व्यस्तर्क्षस्थौ वारिभेऽस्मिन्न लाभः ॥ ६१ ॥

सूर्यादि ग्रहोंका स्वर्णादि धातु क्रमसे जान लेना, चन्द्रमा जिस ग्रह करके दृष्ट होय उस ग्रहका द्रव्य कहना चाहिये, कोई ग्रह करके भी दृष्ट नहीं होय तो द्रव्यका अभाव कहना चाहिये, चन्द्रमा हीन बल होय तो स्वल्प द्रव्य कहना, मध्यम बली होय तो मध्यम

द्रव्य कहना, चन्द्रमा उत्तम बली होय तो पूर्ण द्रव्य कहना चाहिये. चन्द्रमा सूर्यके नक्षत्रोंमें होय और सूर्य चन्द्रमाके नक्षत्रोंमें होय, अथवा चन्द्रमा शत्रुराशिका होय तो द्रव्य लाभ नहीं कहना चाहिये । मिश्र नन्दरामजीने इतना लिखा है, और नरपतिग्रन्थमें विशेष लिखा है सो लिखते हैं, "मिश्रैर्मिश्रं भवेद्द्रव्यं शून्यं दृष्टिविपर्यये । सर्वग्रहेक्षिते चन्द्रे निर्दिष्टोऽसौ महानिधिः । शुभक्षेत्रगते चन्द्रे लाभः स्यान्नात्र संशयः । पापक्षेत्रे न लाभो हि विज्ञेयः स्वरपारगैः । अत्र निधिस्थानस्य द्वारज्ञानं नोक्तं तत्तु गुरुगम्यम् । अहिवलयचक्रमिदं अहिः शेषनागः स तु सिंहार्कतस्त्रिभिर्मासैः ऐशान्यादिविदिक्षु शिरः कृत्वा वामपार्श्वेन शेते तेन यत्र तच्छिरः तत्र निधिस्थानस्य द्वारं तथा चक्रमिदं स्थाप्यम् । यद्वा द्वारस्था कृत्तिका पतति इति तद्गृहद्वारे स्थापयेत् । मुख्यः पक्षोऽयम् । चन्द्राधिष्ठितं तत्कालनक्षत्रं यद्दिग्द्वारभे भवति कृत्तिकादिसप्तसप्तव्यवस्थया तद्दिग्द्वारं निधिस्थानम् । अथवा प्रश्नकर्ता निधिनाथो यत्र दिशि यत्स्थाने विशति तद्द्वारं निधिस्थानस्य । इदमेव कृतं पक्षत्रयादपि निधिं साधयेत् ।" इस उदाहरणमें चन्द्र सूर्य दोनों स्वस्वनक्षत्रस्थित हैं, इसवास्ते निधिशल्य दोनों कहना चाहिये ॥ ६१ ॥

६१ श्लोकोक्तं चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
स्वर्ण	रौप्य	ताम्र	रक्तयुक्त द्रव्य	रंग	सीस	लोह	धातवः

अथ नष्टजातकाब्दानयनमाह ।

दन्ता ३२ ष्टे ८ न्दु १ र्क १२ धृत्या १८ द्रि ७ गज ८
हिमकराः १ श्रेणिघाताः क्रमेणाब्दा मासाः पक्षतिथ्य-

क्षेतनुभादिनपाः स्युः स्वसंख्याप्तशेषाः । नष्टेऽथो त्र्य ३ ब्धि ४ काष्ठाः १० शर ५ गुण ३ गुणिताः प्रश्नवर्णाः स्वसंख्याप्ता तिथ्यो मासतारातनुदिनपतयो गर्भकालेऽत्र शेषाः ॥ ६२ ॥

निधिप्रश्न कथनानन्तर नष्टजातकानयन प्रकार लिखते हैं, दन्तादि ३२ अष्ट संख्याको कर्मभूमिमें स्थित करके सूक्ष्मचक्रजन्य स्फुटश्रेणीपिण्डसे गुणा करै, फेर शतादि स्वस्व संख्या करके १००। १२।२।१५।२७।१२।१२।७ भाग ले, शेषाङ्कसे वर्ष मास पक्ष तिथि नक्षत्र लग्न राशि वार क्रमसे नष्टजातक विषय जान ले । पुनः स्फुट-श्रेणीपिण्डको त्र्यादि ३।४।१०।५।३ संख्या करके गुणा करै, स्वस्व संख्या ३०।१२।२७।१२।७ करके भागले शेष तिथ्यादिक गर्भकालके विषय जान लेना चाहिये । यथा, श्रेणी चात्र स्फुटा ग्राह्या सा च चतुर्गुणितस्वान्त्यवर्गाङ्केन युता भवति, वर्गाङ्कश्च सूक्ष्मचक्राद् इह तस्यैव प्राधान्यात् । तदुक्तं "श्रेणी युगहतस्वान्त्यवर्गाङ्काढ्या स्फुटा मतेति ।" अन्यत्रापि "श्रेणीप्रश्नाक्षराणां तद्दुदधिगुणितं स्वान्त्य-वर्गेण युक्तेति ।" उदाहरणम् । श्रेणी ४ स्वान्त्योरस्य वर्गो यस्त-स्याङ्के १० वेदगुणे ४० युक्ता ४४ स्फुटश्रेणी जाता । अस्य दन्ता-दिभ्यो घातः १४०८।३५२।४४।५२८।७९२।३०८।३९२।४५। वर्षादीनां संख्याभि १००।१२।२।१५।२७।१२।१२।७ र्भाजिताः शेषं ८।४।२।३। ९।८।४।२ जाता वर्षाद्याः नष्टजातके एवं सर्वत्र । अथ त्र्यादिगुणिता स्वस्वसंख्या आप्ता प्रश्नवर्णाः कार्या, अत्र ये शेषास्ते गर्भकाले तिथ्यादयः स्युरिति । स्फुटवर्णाः ४४ त्र्यादिगुणिताः १३२।१७६। ४४०।२२०।१३२ तिथ्यादीनां या संख्या ३०।१२।२७।१२।७ तासिं-भक्ताः शेषे तिथ्यादयः १२।५।८।४।६ प्रश्नसमयाद्रह्यं ज्ञेयमिति ॥६२॥

अथ वर्णोत्पत्तिप्रकारमाह ।

रूढिजफलपुष्पाणि च दूतमुखे सन्ततं यान्ति ।
तस्मादङ्कैर्वर्णाः प्रश्ने कार्याश्च दूतोक्तैः ॥ ६३ ॥

रूढिशब्द नालिकेर चम्पकादि फल पुष्प अभ्यासवश करके दूतमुखसे निरन्तर निकलते हैं, इस कारण अंक चिन्तवन करवाना चाहिये ॥ ६३ ॥

तदेवाह ।

प्रथमांके गजभक्ते द्वितये बाणोद्धृते त्रितये ।
द्वादशतष्टे क्रमतो वर्गार्णजः पुनश्चैवम् ॥ ६४ ॥

दूतमुख द्वारा तीन अङ्क भिन्न भिन्न चिन्तवन करवाना, प्रथम अंकमें आठका भाग देना, शेषांकसे अवर्गादिक वर्ग जान लेना, द्वितीयमें पांचका भाग देना, शेषांकसे वर्ण जान लेना, य श वर्गोंमें चारका भागसे वर्ण जान लेना, तृतीय अंकमें द्वादशका भाग देना, शेषांकसे अकारादि मात्रा जान लेना, इस प्रकार वारंवार करै ॥ ६४ ॥

एतत्सीमानं प्रश्ननियमं चाह ।

कार्यं द्वाभ्यामूर्ध्वं न्यूना बाणैर्यथार्णाः स्युः ।
स्वरवाहस्थेऽथार्के विषमाश्चन्द्रे समार्णाश्चेत् ॥ ६५ ॥

दास ऊर्ध्व पांचसे न्यून वर्ण होते हैं, वहत् नाडीप्रदेशस्थित दूत प्रश्न करे तो यथार्थ फल मिलता है, सूर्यानाडीमें विषमवर्ण होते हैं, चन्द्रनाडीमें समवर्ण होते हैं ॥ ६५ ॥

अथ ग्रन्थसमाप्ति माह ।

रचितोऽयं संक्षेपात्केरलिशास्त्रस्य सन्दर्भः ।
अत्राज्ञताभ्रमाभ्यां कुकृतं तच्छोधनीयं ज्ञैः ॥ ६६ ॥

मिश्र नन्दरामजीने केरलशास्त्रका प्रबंध संक्षेप करके रचना किया इस प्रबन्धमें अज्ञता और भ्रम करके जो स्खलित होय सो पण्डित शोधन करें ॥ ६६ ॥

आस्ते यद्वसुधाविभूषणमणौ श्रीमद्व्रजेसद्व्रजे रम्यं काम्यवनं त्रयीधुतमलास्तस्मिन्वसन्ति द्विजाः । श्रीकृष्णाश्रयदीपचन्द्रतनयो यो नन्दरामाभिधस्तेष्वसंस्कृतवान् प्रबन्धममलं सत्प्रश्नरत्नाह्वयम् ॥ ६७ ॥

पृथ्वीका जो आभूषण मणि शोभायमान व्रजभूमि जिसमें महात्मालोग निवास करते हैं, ऐसा जो काम्यवन जिसमें वास करनेवाले वेदत्रयीकरके धोये हैं मल जिन्होंने ऐसे जो ब्राह्मण उनके मध्यमें श्रीकृष्णके आश्रय जो दीपचन्द्र उनके पुत्र नन्दरामजीने यह निर्मल प्रश्नरत्न नाम ग्रन्थ रचना किया ॥ ६७ ॥

अथान्येषां दूषणमाह ।

प्रोक्तं चन्द्रोन्मीलनं शुक्लवस्त्रैस्तच्चाशुद्धं विज्ञनिन्द्यं समन्तात् । वाच्यं तज्ज्ञैः पक्षपातं विहायोत्पाताभिख्येऽस्मिन्न तेषां त्रपाभूत् ॥ ६८ ॥

श्वेताम्बर नाम जैनोंने जो चन्द्रोन्मीलन नाम ग्रन्थ रचना किया सो छन्दोव्याकरणादिकों करके अशुद्ध है, अतएव पण्डित लोगोंकी सभाके विषय निन्दित है, जिसके जाननेवाले पण्डितोंने हमारा और उनका पक्ष छोडकर कहना चाहिये कि इस उत्पात नाम चंद्रोन्मीलन ग्रंथके करनेमें उनको लज्जा हुई या नहीं हुई, जिसमें ग्रहणका स्पर्शादि पञ्च संस्कार उनके मध्यमें मीलन उन्मीलन नाम संस्कार मोक्षसे अर्वाचीन हैं, राहुसे तो चन्द्रमाके मीलन उन्मीलन होते हैं,

इसी कारणसे इस चंद्रोन्मीलनग्रंथका भी नामसे दूषण हुआ इसीसे बौद्धलोगोंको लज्जा होना चाहिये कि जिसके नामहीमें दूषण है तो उससे फलसिद्धि क्या होती ह ॥ ६८ ॥

अथ समाप्तिकालं ग्रन्थसंख्यां चाह ।

सिद्धाष्टचन्द्रवर्षेऽश्वियुजः सितपक्षसप्तम्याम् ।
पूर्त्तिमगाद्ग्रन्थोऽयं शून्याब्धिद्विप्रमैर्वृत्तैः ॥ ६९ ॥

विक्रमसंवत् १८२४ में आश्विन शुक्ला सप्तमीके दिन, ग्रन्थ पूरा हुआ, जिसमें २४० वृत्त हैं ॥ ६९ ॥

अष्टवेदाङ्कभू १९४८ वर्षे कृता सुन्दरसूरिणा ।
माघकृष्णत्रयोदश्यां टीकेयं पूर्णतामगात् ॥ ७० ॥

इति श्रीमिश्रनन्दरामकृतप्रश्नरत्नसुन्दरीटीकायां
मिश्रप्रकरणं पञ्चमम् ।

इति भाषाटीकासहितं केरलीप्रश्नरत्नं समाप्तम् ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅंक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS